

कवि भीम विरचित
सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतिया की सहाय से सशोधित अज्ञात कविकृत
“सावलिगा पाणिग्रहण चउपई”

और

कवि कीर्तिवधन रचित ‘सदयवत्स सावलिगा चउपई’
के परिशिष्ट और

प्रस्तावना एवं टिप्पणिया सहित



सम्पादक—

डा० मजुलाल मजमुदार

एम ए., पी एच डी एल एल बी

‘माधवानल कामक दला प्रबन्ध’ के सम्पादक

एवं

‘गुजराती साहित्य के स्वरूप-मध्य विभाग
मध्यकालीन और अर्वाचीन’ के लेखक

कवि भीम विरचित
सद्यवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतिमा की सहाय से स शोधित अनात कविद्वृत
“सावलिगा पाणिग्रहण चउपई”

और

कवि कीर्तिवर्धन रचित ‘सद्यवत्स सावलिगा चउपई’
के परिशिष्ट और

प्रस्तावना एव टिप्पणियाँ सहित



सम्पादक-

डा० मजुलाल मजमुदार

एम ए., पी-एच डी एन एल बी

‘माधवानल कामक दला प्रबन्ध’ के सम्पादक

एव

‘गुजराती साहित्य के स्वरूप पद्य विभाग

मध्यकालीन और अर्वाचीन के लेखक

कवि भीम विरचित
सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतिया की सहाय से सशोधित अनात कविकृत

“सावर्लिगा पाणिग्रहण चउपई”

और

कवि कीर्तिवर्धन रचित ‘सदयवत्स सावर्लिगा चउपई’

के परिशिष्ट और

प्रस्तावना एवं टिप्पणिया सहित



सम्पादक—

डा० मजुलाल मजमुदार

एम ए., पी-एच डी एल एल बी

‘माधवानल कामक दला प्रबन्ध’ के सम्पादक

एवं

‘गुजराती साहित्य के स्वरूप-पद्य विभाग
मध्यकालीन और अर्वाचीन’ के लेखक

प्रकाशकः—
साद्वल राजस्थानी रिसच इस्टीट्यूट
धीरानेर

प्रथम सस्करण १००० प्रतियां
मूल्य-४ रु०

मुद्रकः—
महावीर मुन्नालय,
अलीगज (एटा)

ड० कन्हैयालाल मुन्शी 'Gujarat & its Literature (1935)
Page 162 —

“Sadayavatsa kathā’ has charmed Gujarat for about five hundred years Sadayavatsa and Sāvā lingā, husband and wife, are banished from their native city and are separated Ultimately they meet after undergoing fearful experiences in all of which the fantastic vies with the miraculous The story is taken probably from some unknown Prākṛit source Its first available Gujarati version is copied in Samvat 1488 ”



संकलना

अपण

उपोदघात ***

पृष्ठ अ ई

प्रस्तावना****

पृष्ठ उ न

श्री सद्यवत्स वीर प्रबध (मूल मात्र)

पृष्ठ १ १०५

परिशिष्ट १ सद्यवत्स सावलिगा पाणिग्रहण चउपई

पृष्ठ १०६ १३५

परिशिष्ट २ कवि केशवकृत

पृ २३५ १८५

टिप्पणी—सद्यवत्स सावलिगा चउपई

पृ १८७ २०

अर्पण

कायस्थ कवि गणपतिकृत 'माधवानल कामकदला प्रबंध'
(१६१४), और भीमकृत 'सदयवत्स वीरप्रबंध' (१६१५)
के प्रथम निवेदक ।

अनेक अप्रकट सस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और
प्राचीन गुजराती ग्रंथों के आद्य सशोधक ।
(पट्टण ग्रंथ भण्डारों की सहाय से आधार लेकर)
'गायकवाड प्राच्य ग्रंथमाला' के आद्य संपादक

राजरत्न

प० चीमनलाल दलाल की स्मृति में

सवित्रय
अप०श



मजुलाल मजमुदार

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्व इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पाण्डेकर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुगामी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलमिहजी बहादुर द्वारा सस्रुत, हिंदी एवं विरापन राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सवाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वाना एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हम प्रारम्भ से ही मिलता रहा है ।

सत्या द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ चलती आ रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश

इस सवष में विभिन्न स्रोतों से मस्या लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का सक्लन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक ढांशा के ढग पर, लव समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी गई हैं । यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी मनोपजनक क्रियाविति के लिये प्रचुर द्रव्य और धन की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रापित द्रव्य साहाय्य उपलब्ध होत ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना समभव हो सकेगा ।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरों कोश

राजस्थानी भाषा में विराल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है । अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरों के दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिंदी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग दकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इस प्रकाशित करने का प्रवध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और धन साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विरात संप्रह साहित्य जगत का दे गये तो यह संप्रह क विने ही नहीं
बिनु राजस्थानी घोर हिंसे जगत के लिए भी एक गारव की बात होगी ।

३ आधुनिकराजस्थानीकाशान राजस्था पात्र

इसके प्रथम विमलविमल पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ पञ्चायण, ऋतु वाच्य । स० श्री नानूराम गहलवा

२ आभै पटकी, प्रथम सांगीतिक उन्मेष । स० श्री श्रीनान जासी ।

३ वरस गाठ मौलिक कहानी संप्रह । स० श्री मुरलीधर व्यास ।

‘राजस्थान भारती’ में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाका एक अलग
स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कविनायक, कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छाने
रहते हैं ।

४ ‘राजस्थान भारती’ का प्रकाशन

इस विख्यात साधुपत्रिका का प्रकाशन सस्या के लिये गौरव की वस्तु है ।
गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कठ से प्रशंसा की है ।
बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एक अन्य कठिनाइयाँ के कारण, प्रमासिक
रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अङ्क ३-४
‘डा० लुइजि पित्रो तैरिसतोरी त्रिगोपाक’ बहुत ही महत्वपूर्ण एक उपयोगी
सामग्री से परिपूर्ण है । यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का
एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित
होने जा रहा है । इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वप्रथम महाकवि पृथ्वीराज
राठोड़ का सचित्र और बहवु विशेषांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त
होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र पत्रिकाएँ हम
प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके
ग्राहक हैं । शोभकत्तमा के लिये ‘राजस्थान भारती’ अनिवाच्य संप्रहणीय शोध
पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर
लेखों के अतिरिक्त सस्या के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमनाथ
स्वामी और श्री अमरचंद नाहटा की बहवु लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये मुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन सत्त्वा के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अनात कवि जान (यामतला) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सबसे प्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८ राजस्थान के जन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९ मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जसलमेर क्षेत्र के गच्छों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहित की गई हैं। राजस्थानी कथावर्तों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावुजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखा का विशाल संग्रह 'बीकानेर जन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जगदीश उद्योग, मुद्रण मैगमी री स्थापना और धनीगी धान रीये महानुर्ण लेनिहागिक प्रया का सम्पादन एवं प्रकाशन हा चुका है ।

१२. जाधपुर क महाराजा मानगिहता के सचिव कविवर उत्पच महारी की ४० रचनाया का अनुमोदन किया गया है और महाराजा मानगिहता की काव्य साधना के संबंध म भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती म लेन प्रकाशित हुआ है ।

१३ जगतमर के अक्षरशित १०० शिखानरा और 'भट्टि वरा प्रशस्ति' धानि धनक प्रप्राप्य और अक्षरशित प्रथम राज यात्रा करन प्राप्त किय गय है ।

१४ बीकानर के मस्तयोगी कवि गानमारजी क प्रया का अनुमोदन किया गया और गानसार प्रयागली के नाम स एक प्रथ भी प्रकाशित हा चुका है । इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयमुदर की ५६७ लघु रचनाया का संग्रह प्रकाशित किया गया है ।

१५ इसके अतिरिक्त सस्या द्वारा—

(१) डा० लुदजि पिमो तस्मितोरी, समयमुदर, पृथ्वीराज और लोक-माय लिलक आदि साहित्य सविवा के निर्वाण लिवस और जयतिया मनाई जाती हैं ।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठिया का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसम अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लल कविताएँ और कहानिया आदि पनी जाती हैं, जिससे अनक विष नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है । विचार विमर्श के लिय गोष्ठियो तथा भाषणमालाया आदि का भी समय समय पर आयोजन किया जाता रहा है ।

१६ बाहर से स्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कनाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्र डा० सत्यप्रकाश, डा० डल्लू० एलेन, डा० सुनीलकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिमो तिवरी आदि धनक अंतर्राष्ट्रीय स्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अतगत भाषण हो चुके हैं ।

मन दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है । वर्षों के आसन अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमश राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

वद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विंसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०,
[डलोद, थे ।

इस प्रकार सस्या अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरन्तर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस सस्या के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लक्ष्य बन गिरते पड़ते इसका कार्यकर्ताओं ने 'राजस्थान भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरन्तर चलता रहे। यह ठीक है कि सस्या के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अग्र्य सभ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादन करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधना के अभाव में भी सस्या के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकांत साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्या के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य मंडार अत्यंत विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनघ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वानों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना सस्या का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अल्पेण द्वारा प्राप्त अथ महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हृष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोधन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी प्राधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अन्तर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी धार से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन प्रकाशन

हेतु इम मरणा को इम तिसीन बर्ष मं प्रणत को गई है तिरगे इत बर्ष
निगोत ३१ तुमरा का प्रवाराण किया जा रहा है ।

| | |
|--|---|
| १ रात्रमगो व्याकरण— | श्री नरोत्तमनाथ स्वामी |
| २ रात्रमगो गद्य का विकास (शोध प्रबन्ध) | डा० शिवस्वरूप शर्मा अथर्व |
| ३ भवमनास गोषो रो यमनिवा— | श्री नरोत्तमनाथ स्वामी |
| ४ हमोरायण— | श्री भंडरलाल नाहटा |
| ५ पद्मिनी परित्र घोरई— | " " " |
| ६ दसपन विसास | श्री रावत सारस्वत |
| ७ द्विगल् गीत— | " " " |
| ८ पंवार वरा दर्पण— | डा० दशरथ शर्मा |
| ९ पृथ्वीराज राटोङ्ग प्रयावली— | श्री नरोत्तमनाथ स्वामी और श्री बट्टीप्रसाद भाकरिया |
| १० हरिरस— | श्री बट्टीप्रसाद भाकरिया |
| ११ पीरदान सासस प्रयावली— | श्री अमरचन्द नाहटा |
| १२ महादेव पावती बेलि— | श्री रावत सारस्वत |
| १३ सीताराम चौपई— | श्री अमरचन्द नाहटा |
| १४ जन रासाणि सग्रह— | श्री अमरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भाषाणी |
| १५ सद्यवत्स धीर प्रबन्ध— | प्रो० मजुलाल मजूमदार |
| १६ जिनराजमूरि कृतिबुमुमाजलि— | श्री भवरलाल नाहटा |
| १७ विनयचन्द कृतिकुमुमाजलि— | " " " |
| १८ कविवर घमवन्द न प्रयावली— | श्री अमरचन्द नाहटा |
| १९ राजस्थान रा दूहा— | श्री नरोत्तमनाथ स्वामी |
| २० वीर रस रा दूहा— | " " " |
| २१ राजस्थान के नीति दोहा— | श्री मोहनलाल पुराहित |
| २२ राजस्थान व्रत क्याण— | " " " |
| २३ राजस्थानी प्रेम क्याण— | " " " |
| २४ चदावन— | श्री रावत सारस्वत |

| | |
|---|-------------------------|
| २५ भड्डली— | श्री अग्ररचन्द नाहटा |
| | म विनय सागर |
| २६ जिनहृष प्रयावली | श्री अग्ररचन्द नाहटा |
| २७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ का विवरण | ” ” |
| २८ दम्पति विनोद | ” ” |
| २९ हीमाली राजस्थान का बुद्धिवधक साहित्य | ” ” |
| ३० समयसुन्दर रासत्रय | श्री भवरलाल नाहटा |
| ३१ दुरसा आढा प्रयावली | श्री बदरीप्रसाद साकरिया |

जसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास प्रयावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासा (श्री० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जन साहित्य (ले० श्री अग्ररचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रन्थों का संपादन हो चुका है परन्तु अथाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि काय की महत्ता एवं गुणता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और आठ इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुब्बाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता का प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रकट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस बहूद काय को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने घाटे समय में इन महत्वपूर्ण ग्रंथों का संग्रह करने संस्था के प्रचारान-काय में जो सराहनीय सहयोग किया है, इसके लिये हम सभी प्रथम सम्पादकों के साथ-साथ के धन्यत धामारी हैं ।

अनूप सचिन साइप्रसरी और अमय जैन प्रधानय बीकानेर, स्व० पूरुषचन्द्र नाहर सप्रहालय बनकता, जन भवन सप्रह बनकता, महाश्रीर तीयचैन अनुपधान समिति जयपुर, धोरियटल इन्स्टीट्यूट बडोच, भांडारकर रितार्च इन्स्टीट्यूट पूना, सरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भंडार बीकानेर, मोतीच सात्राची प्रधानय बीकानेर, सरतर आचाम ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बर्द, धारमाराम जन ज्ञानभंडार बडोच, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमलिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री विशाकर दराथी प० हरदत्तजी गाविद ध्य स जगतमेर प्राणि अनेक संस्थाओं और ध्यातिया से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन संभव हो सका है । अतएव हम इन सबके प्रति धामार प्रशंसा करना अपना परम वत्त व्य समझे हैं ।

एसे प्राचीन ग्रंथों का संग्रह अमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रहता है । हमने अल्प समय में ही इन ग्रंथ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये कृटियों का रह जाना स्वाभाविक है । गच्छत सरलनकवि भवय्येव प्रमाहृत , हसति दुर्जनास्तत्र समादधनि साधव ।

प्राशा है विद्वद्वन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करने साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने मुभावा द्वारा हमें सामावित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृताथ हो सकेंगे और पुन मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे ।

बीकानेर,
मागशीव शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

निवेदक
लालचन्द फोठारी
प्रधान मंत्री
सादूल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

उपोद्घात

‘सदयवत्स वीरप्रबन्ध’ का पहला परिचय प्रस्तुत प्रबन्ध के अस्तित्व का पहला उल्लेख करने वाले श्री चीमनलाल दलाल महोदय थे। ई स १९१५ (वि स १९७१) में गुजरात के प्रख्यात शहर सूरत में आयोजित की गई (५) पाचमी गुजराती साहित्य परिषद के समग्र उन्होंने “पट्टण के ग्रन्थ भांडार और उसमें बहुतायत रहा हुआ अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य” (“पाटणना भंडारो अन खाम करीन तेमा र्हेलु अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती साहित्य”) नाम का एक बडिया निबन्ध पढ़कर सुनाया था। उसमें एक अजिन कवि ‘भीम’ की रचना (लिपि वि स १४८८) सदयवत्स कहानी का उन्होंने ही सवप्रथम निर्देश किया था।

इसके पहले श्री कांटावाला से संपादित ‘साहित्य’ मासिक पत्रिका के अगस्त ई स १९१४ (वि स १९७०) के अंक्य आम्रपत्र (आमोद) जिला मरुच के कायस्थ कवि गणपति की रचना-कृति “भाषवानल कामकदता प्रबन्ध” (रचनाकाल वि स १५७४) कि, जो २५०० दोहा छंदका काव्य-ग्रन्थ था उसके प्रति सबसे पहले श्री दलाल महोदय ने ही पाठका एवं विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने ही पट्टण के ग्रन्थालय में से अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य के ग्रन्थों का परिचय एक सूचिके रूपमें पहले एकत्र किया था। क्योंकि उनके पहले पट्टण के ग्रन्थालय के साहित्यिक प्रयागी सूचि (नोष) या सक्लित यादी तैयार करने के लिये डा० ब्युलर, डा० पीटरसन, एवं प्रा० मणिलाल न द्विवेदी आदि महानुभावोंने प्रयत्न किया था। उनको यहाँके ग्रन्थालयके सरक्षकों-का सहकार प्राप्त नहीं हुआ था। किंतु श्री दलाल महोदय, स्वयं जिन होने के नाते, उन्होंने उन ग्रन्थालय के सरक्षकों का सहकार एवं सद्भाव प्राप्त कर लिया था। और अत्यंत परिश्रम करके यहाँ के (पट्टणके ग्रन्था-

मार के) साहित्यिक धन द्वारा उस साहित्यिक जगत में परिचय दिया। गुदडी के नाम की तरह साहित्यिक प्रकाश में लाया गया। साहित्यिक जगत में नई राशनी आई। पत्रमय रूप बड़ी-बड़ी रियामाजी श्री गायकवाड प्राच्य ग्रंथमाला (G O Series) के पढ़ते-गपादक एवं तवी-गए पर उनकी नियुक्ति की गई थी।

सम्पादनका श्रेय यह एक मान-जनक एवं आश्चर्यकारक घटना घटी है ऐसा कहने में सकोच नहीं होता है। क्योंकि श्री दत्तात्रय महोदय ने जिस अ-जन काव्यग्रंथों की सब ग्रंथों में उद्घोषणा की थी वही दोनों ग्रंथों के सम्पादन करने का सम्भाग्य प्राप्त हुआ है। कौन जानता था कि यह काम मुझसे होगा? किन्तु हो गया है। और अब भी हो रहा है। इसमें ईश्वर का कुछ सबेन होगा ऐसा मैं समझता हूँ।

ई स १९४२ (वि स १९९७) में माधवानल कामबदला प्रबंध मूल-मात्र, एक परिशिष्ट और उपोद्घात सहित ग्रंथों में श्री गायकवाड प्राच्य ग्रंथमाला में ९३ पुष्प के रूप में प्रकाशित हुआ है। विस्तृत प्रस्तावना, टिप्पणियाँ, तथा शब्दकोशका दूसरा भाग तयार होने जा रहा है।

सम्पादन का इतिहास प्रस्तुत 'सदयवत्स वीर प्रबंध' नामक ग्रंथ का सम्पादन कार्य करने का निश्चय ई स १९३९ (वि स १९९५) में किया गया था। उसके बाद अथ हस्तलिखित पोथियाँ एवं उपयोगी साहित्य की खोज में कुछ बर्ष निकल गये। प्रस्तुत प्रबंध का प्रकाशन काय अहमदाबाद की गुजरात विद्यासभा की ओर से होने वाला था। उससे मैंने वहाँ एक प्रेस कापी प्रकाशन के लिये भेज दी। वहाँ के 'नवजीवन' छापखाने से ई स १९५० (वि स २००६) के आसपास के समय में देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुई कुछ गलतियाँ वाली प्रूफ-प्रतियाँ प्राप्त हुईं। मैंने इन गलतियों की दुरुस्ती करने की प्रार्थना की। किन्तु वहाँ के कार्यवाहको को गलतियाँ दुरुस्त करने के लिये सुविधा नहीं होने के नाते, कुछ कठिनाई देखकर उस काय को आगे

बनाने में अनिच्छा व्यक्त की। छापखानेवालों ने यह सिरपन्ची वाला साहित्य विद्यासभा की ओर वापस भेज दिया। और विद्यासभा ने मुझे वापस लौटा दिया। और इस तरह यह प्रकाशनका काय यथायक रूक गया।

श्री नाहटाजी की प्रेरणा श्री अगरचन्द नाहटाजी महोदयने उनके 'राजस्थान भारती' नामके मासिक पत्रिका के अंक म सन् १९५८ म प्रकाशित एक विस्तृत लेख में 'उम प्रवच का प्रकाशन होने वाला है,' ऐसा नोट के रूप में उल्लेख किया था। बाद में (वि स २०१६) ई स १९६० के सितम्बर मास में श्री नाहटाजी महोदयने, प्रस्तुत प्रवचका श्री सादूल राजस्थानी रिसच इन्स्टीट्यूट बीकानेर प्रथमालाम प्रवट करनेकी, सस्था के सेक्रेटरी (मन्त्री) के नाने मुझे सूवन किया, प्राथना की। मैंने धयवादके साथ उनकी प्राथनाको सहप स्वीकार किया। इस तरह प्रस्तुत प्रवचके प्रकाशन-काय की कहानी या पूव इतिहास अब पूण होता है।

आभार दर्शन इस उपयोगी साहित्य रचनाकृति को प्रकाशने लाने की सुविधा एव सहायता देन के लिये, तथा तत्सब धी अनेक हस्त लिखित प्रतिया एव अय सामग्री भेजकर रचनाकृतिके सपादन, ससाधन एव प्रकाशन आदि कार्यों में जो सहायता प्रदान की है इसके लिये मैं श्री नाहटाजी महोदय को धयवाद के साथ उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

उस सपादन की प्रस्तावना लिखने में उपरिनिर्दिष्ट श्री नाहटा जी महोदय का 'राजस्थान भारती' म प्रकाशित 'सदयवत्स सावलिगा की प्रेमकथा' नामके अत्यन्त अभ्यासपूण एव विद्वत्तापूर्ण लेख का काफी उपयोग भी किया है। उसके लिये भी मुझे उनका ऋण स्वीकार करते हुये अत्यन्त हप होता है।

प्रस्तुत प्रथमे मैंने सशोधित की हुई एव अय सब गुजराती सामग्री का हिन्दी में अनुवाद करने वाले मेरे स्नेही एव साहित्यक-शिष्य श्री चन्द्रकान्त बापालाल पटेल (साहित्यरत्न प्रयाग) जी को मैं धयवाद देता हूँ।

इस प्रबंध के सम्पादन में मेरे मित्र पंडित श्री लालचन्द्र भगवान दास गांधीजी ने पाठ निराकरण और टिप्पणी में हृदयपूर्वक सहायता की है इसलिए मैं अत्यन्त उपकृत हूँ ।

फोटोग्राफ 'प्रबंध और' षडपाई की प्राचीन प्रतियाँ के आदि एवं अन्तभागमें फोटोग्राफ (चित्र कापी) भी लिये हैं । जो प्रतियाँ बड़ौचा प्राच्यविद्यालय के निर्यातक श्री डा० भोगीलाल जी साठेसरा के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं । जिससे लिपियाँ के प्रकारान्तरणों पर विचार भी होगा । और सुविधा रहेगी ।

टिप्पणीमें कई अपभ्रंश शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है जिससे इनका यथार्थ बोध होने में सुविधा रहेगी ।

प्रबंध में से एवं दिलचस्प प्रसङ्गों का चित्र की प्रतिवृत्ति एक सचित्र प्रति में से दी गई है ।

“वत-यथाम” ३४ प्रतापगज

मजुलाल मजुमुदार

बड़ौचा २

(गुजरात राज्य)

प्रस्तावना

प्रबन्ध का स्वरूप वीररस प्रधान एव ओजपूर्ण शलीवाला काव्य 'प्रबन्ध काव्य' कहा जाता है। गद्य या पद्य दोनों में की हुई साथक रचना का नाम है 'प्रबन्ध (मणिलाल बकारभाई व्यास का संपादित "विमल प्रबन्ध", प्रस्तावना पृ० ६२) ई स १००० से १५०० तक रचे गये ऐतिहासिक काव्योंके नाम, खास करके 'प्रबन्ध' रचे गये हैं। जसकि कुमारपाल प्रबन्ध, भोजप्रबन्ध, चतुर्विंशति प्रबन्ध, प्रबन्ध चिंतामणि, प्रबन्ध श्रेणि, जैसे सस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रंथों में एक या अनेक वीरव्यक्तियों के चरित्रों का बयान किया गया है। इन प्रबन्धों में संबन्धित व्यक्तियों में विमल मंत्री जैसे युद्धवीर तथा धर्मवीर भी हैं, एव जगड् जैसे दानवीर, और विक्रम जैसे युद्धवीर, और सद्यवत्स या पृथ्वीराज जैसे शू गारवीर भी उल्लेखनीय हैं। ये प्रबन्ध खास करके ऐतिहासिक व्यक्तियोंके चरित्र निरूपण के ही काव्य हैं।

वीररस का आलंबन- रसशास्त्रका एक सिद्धांत है कि उत्तम प्रकृति के नायकों का ही वीररसमें बयान करना चाहिये। क्योंकि वीरत्व उत्तम पुरुषों में ही होता है। वीररस का स्थायीभाव उत्साह है। उत्साह का राजस गुण किसी भी काय में वीर को प्रवृत्त करता है। क्योंकि उस कार्य में उसको विजय प्राप्त करना है। वीर का उत्साह यू पांच प्रकार का हो सकता है। जैसे कि युद्ध करने का उत्साह घम करने का उत्साह, दान करने का उत्साह, दया करने का उत्साह, तथा प्रेम करने का उत्साह।

महाभारत के पात्रों में अजुन युद्धवीर, हैं युधिष्ठिर महाराज धर्मवीर हैं। कण दानवीर हैं। भिविराज दयावीर हैं। भगवान् कृष्णचद शू गारवीर के रूप में विख्यात हैं ही। यदि कोई कहेंगे कि क्षमावीर, सत्यवीर, लज्जावीर, नीतिवीर, धृतिवीर जैसे भेद क्यों न हो सके? वीरके

अनेक भेद और केवल पाँच ही भेद क्यों कहे गये ? इगता समाधान इस प्रकार हो सकता है कि क्षमाता अन्त भाव दया म हो जाता है । तथा सत्य भादि का स निहित धम म ।

अग्रे जो वीरपूजा की भावना-कालांतर के 'वीर और वीरपूजा' (Hero & Hero worship) नामक पुस्तक म जीवन क विविध क्षेत्रो म वीरता दिखान वाले वीरों का पूजन करना उचित है ऐसा प्रतिपादित किया गया है । इसम वीरता को व्यापक अर्थ म सूचित किया गया है ।

पवि, धमगुप्त, वैद, व्यापारी, सैनिक प्रत्येक के क्षेत्र म हरेक को वीरता दिखलानेका पूरा अवकाश रहता है । और वीरता लिखलानेवाले सच्चे वीर कहलाने के योग्य हैं । उपयुक्त दिखलाये गये पाँच प्रकार के भेद म इसका भी अंतर्भाव हो जाता है ।

वीररस के अन्य पद्यस्वरूप- वीरोंके चरित्र 'प्रबध रूपमे 'पवाडा' रूप मे श्लोक (सलोका) रूप में, या रासा के रूपमें वीररसके लिये उचित ऐसे छंद में रचे जाते हैं । और रचे भी गये हैं । जिसके दृष्टांत ऊपर दिये गये हैं । सामान्य मनुष्यों के चरित्र कभी काव्य द्वारा बिरदाने के योग्य होते नहीं हैं या ऐसे सघोरण मनुष्यों के चरित्र काव्य में वर्णित किये नहीं जाते हैं, या योग्य भी नहीं होते । इसलिये गुजराती एव राजस्थानी पद्य-साहित्य में खास तौर पर चरित्र, प्रबध, पवाडो, रासो तथा छन्द, एव श्लोका, ये सब शब्द करीब पर्याय रूप में प्रयुक्त किये गये शब्द न हो ऐसा समझने का मन होता है ।*

* काहूडे प्रबध की कुछ प्रतियो में उसका शीपक काहूड चरिय, कान्हूडेकी चुपड, काहूड देनड पवाडउ, और श्री काहूडे रास ऐसा भी उल्लेख मिलता है देखिये प्रा० कान्तिलाल व्यास, श्री सिधी ग्रथमाला अग्रेजी प्रस्तावना, पृ० २० की पादनाट ।

वीरगाथा काल वीरगाथा काल के राजाश्रित कवियों एवं भाट चारगोने अपने आश्रयदाता राजाओं के शीघ्र पराक्रम एवं प्रभाव आदि के वलन अपनी ओजपूर्ण सनकासर बानी में काव्यों में किये हैं । ये लोग कमी कमी रणभेद में जात थे तलवार भी चलाते थे । और अपनी वीर बानी स स य में शौर्य का स चार करते थे । सुद भी युद्ध में प्राणार्पण कर देते थे । ऐसी रचनाओं की पीढीगत रथा भी की जाती थी एवं वृद्धि भी ।

हमें वीरगाथायें दो रूप में मिलनी हैं । (१) मुक्तक रूप में, और (२) प्रबध में । जिस तरह युरूप में वीरगाथा के विषय (Age of Chivalry) युद्ध एवं प्रेम थे वैसे भारत के साहित्य में भी हुआ है । किसी राज्य की स्वरूपवती राजकन्या का समाचार सुनकर अपने लखर के साथ उस राज्य पर घावा करके उसकी राजकन्या छीन ली जाती या अपहृत की जाती थी । इसमें वीरा का वीरत्व, गौरव, शौर्य, अभिमान, बल, प्रभाव, आदि माना जाता था । इस तरह प्रबध काव्यों में वीररस के साथ घृगार रस का भी मिश्रण होता था, हुआ है ।

वीररस के मुक्तक वीररस के प्राचीन मुक्तकों का संग्रह मुनि श्री हेमचन्द्राचार्य के 'ब्राह्मण व्याकरण' ग्रंथ में दृष्टान्त के रूप में प्राप्त होता है । इसके सिवा भी प्रबध काव्य एवं वीरगीतों के स्वरूप में रचना हुई है ।

रासा साहित्य गुजराती के रासा युग के समसामयिक काल के हिंदी साहित्य में "वीरगाथा काल" नाम दिया गया है । इस काल में 'सुमान रासो' 'विशालदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो' 'हुम्मीर रासो' 'जगनिक का आल्हाबद' आदि रचना हुई है ।

गुजराती में वि स १३७१ के आसपास श्री अबलेव सूरि रचित "समरासु" में पट्टण के समरसिंह नामक एक ओसवाल वणिक बनिया ने स घ (यात्रा) निकाल के शत्रु जय पहाड पर श्री ऋषभदेव के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया । और धर लोट आया उसकी प्राबस या तीथ-

माता आदि का वर्णन आता है । इसमें ममस्मित शब्द कावीर एवं
 धावीर भी लिखा है ।

श्री काव्यगुरि के वि स १३०२ में मद्रासमें रचित पद्य 'नामि
 मन्त शिरोधार प्रबंध' में भी उक्त वर्णन है । श्री अम्बेकरगुरि इस
 माता में सम्मिलित हैं । ऐसा उगम उक्त है ।

गुजराती प्रबंध साहित्य 'विगतान्त्य मातृसंभ पद्यामने
 वि स १५१२ में 'काव्ये प्रबंध की रचना की है । यह बिना मुक्तिरिचि
 तथा मुक्तिरिचि ही गई है । वि स १५९८ में श्री सावधानमया विमल
 प्रबंध' की रचना की है वह भी प्रसिद्ध है । काव्यगुरि गतादि ने
 'मापवात नामतन्ता प्रबंध की रचना वि स १५७४ में आम्नद,
 आमोद जिला भद्रोप में की है ।

शीत से, शांति गायक गायिका का दृ गार इसका वष्य विषय है ।
 इसमें मापव आरिच्य गुड दृ गारवीर है । नामतन्ता अभिजात गणिता
 पुत्री है । और यह मृच्छकटिक की पात्र वग तसेना का स्मरण करती
 है । इतीतिये उनका मितन साहवीर तथा परदु गभंडा ऐसे राजन
 विप्रम द्वारा होता है । इस प्रबंध में विप्रम तथा रतिगीडा या दोनो
 प्रकार के दृ गार रसप्रद भाषी में वर्णित किया गया है । फिर भी इसमें
 कविने शीतवा, पारिच्यवा, माहात्म्य अधिष भावपूर्वक स्थापित किया है ।

वर्णव कवि श्री गोपालदामन श्री वल्भभादयान श्री वल्लभाचाप
 (जीवनपाल वि स १५२९ १५८७) तथा श्री विट्ठलनाथजी (जीवन-
 काल वि स १५७२ से १६४२ में) धमवीर ऐसे गोस्वामी श्री विट्ठल
 नाथजी की प्रशस्ति की, प्रबंध रूप में नौ गेय पद्या में रचना की है ।

संस्कृत गद्य कथा श्री रत्ननेस्तर के शिष्य श्री ह्यवधन
 गणिने वि स १५२७ में 'सदयवत्स कथा' संस्कृत गद्य में रची है ।
 यह शायद एक जीनेस्तर कवि भीम ने रचित 'सदयवत्स वीर
 प्रबंध' की वि स १४८८ में श्री पट्टन में लिखी गयी प्राचीनतम
 प्रतिकृति प्राप्त हुई है । इस बिनासे इस कृति की रचना के संभव में

सकता है कि भीम की रचना अनुमानत वि स १४६६ म हुई होगी, एसा कुछ लोग न अनुमान किमा है । दूसरी प्रति वि स १५९० मे एव तीसरी प्रति वि स १६६२ की प्राप्त है । इस परम कहा जा सकता है कि सदयवत्स और सार्वलिंगा की प्रेम कथा का यह सबसे प्राचीन एव उपलब्ध संस्करण है ।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय न जिस प्रति की जाच की थी उसमे पद्य-संख्या ६७२ थी । दूसरी प्रति म ६८९ पद्य-संख्या है । विनु सर्वप्रथम प्रतिपा का मिचान करनेके बाद, प्रबन्ध की ७३० जितनी कडिया प्राप्त हुई हैं ।

म स्मृत कथानक भीम के प्रबन्ध का मुख्यत अनुसरण करता है । विनु उसम जिनघम की महिमा का गुधन करलेनेकी तक श्री ह्यवधन ने छाड दी नही है । इन प्रसंगो का उल्लेख कथा-भार देने समय बौंस या कोष्टक में सूचित किया जायेगा । खरतर गच्छ के यति श्री कीर्ति वधन ने इस कथानक में जिनमन का कुछ भी प्रचार नहीं किया है ।

कथानक का मूल कथा सरित् सागर* जो कि लोककथाओंके महाभाग स्वरूप गिना जाना है । उसमें भी 'सदयवत्स कथा' का पता चलता नहीं है । फिर भी उज्जयिनी, हरसिद्धिमाना, प्रतिष्ठान नगर, सालिवाहन, बावनवीर, और थापरा चार इत्यादि उल्लेखो से और सदयवत्स के अद्भुत वीरता भरे वणना से या गाथाओंसे इस लोक कथा की उत्पत्ति का सम्बन्ध 'विक्रम कथा चक्र' के साथ होना अनुमान किया जा सकता है ।

* संस्कृत में सदयवत्स, प्राकृत में 'सुदयवच्छ सुद्ववच्छ' एव सुह, गुजरातीमें 'सदयवच्छ और सदवत्' इस तरह राजस्थानी-भारवाडी में 'सूगे' एव 'सदेवच्छ' शब्द हैं । इससे ज्ञात जाना है कि ये सब शब्द कथानक से सम्बन्ध रखने वाले हैं । कथानक के निकटवर्ती शब्द हैं ।

सार्वलिंगा का निर्देश कही वही सार्वलिंगी के रूप में भी प्राप्त है ।

प्राचीन उल्लेख पद्मावतमे गणपद्वय कथा न शिरस म
 दा प्राचीन उल्लेख प्राप्त होत है । (१) महाक मुहम्मद जायसीरुज रचना
 पद्मावत में दृग कथाका का उल्लेख उगत किया है । और भी गुणकर
 दिवानी कथा जो ग स्वरण है उगमें पही पाठ है ।

(२) शिरस न जायसीरुज 'पद्मावत न कथा अथवी अनुवा' में
 पृ० १४४ की पाठ्यिणी में भी 'गदयवय पाठ का उल्लेख किया है ।

अपभ्र शमे उल्लेख एक दूगरा उस्तग भी प्राचीन समय का
 प्राप्त होता है, जो अदुत रहेमाने अरथ न काव्य गनेग रागक'में है ।
 जिसका रचनाकाल वि ग १४०० के आगपाग है । उगने मुजतानगर
 का कएन किया है । उसमें कही ने विषयण नागरिका की माहितक
 विनोद की कर्वा के प्रग ग में उहोंने किया है कि मुजतानगर क सब
 नागरिक पठित थे । य विषयण प सोम नगर में परिभ्रमण करते
 समय कही कहीं प्राकृत के मनोरम्य छं के आलाप सुनने में आते थे ।
 तो कही भेष परिवहन करने काज लोग (बहुरूपी) रागक' करते देसन
 को मिलने थे, तो कहीं ये, सदयवय कथा नन खरिथ महाभारत एवं
 रामायण (रामचरित) सुनने में आते थे ।"

● देखिये, मूल अपभ्र श रचना की स स्वत टिप्पणी—

"यदि विचक्षण सह पुरान्त परिभ्रम्यते तदा मनोहर छंदसा मधुरं
 प्राकृत श्रुयते ।

कुत्रापि चतुर्वेदिभि वेद प्रकास्यते ।

कुत्रापि बहुरूपिभिनिबधा रामको भाष्यते ॥४५॥

कुत्रापि सुयवच्छ कथा, कुत्रापि नलचरितम् ।

कुत्रापि विविध विनोदं भास्त उच्चरितं श्रुयते ॥

अथच्च कुत्रापि कुत्रापि आशिष त्यागिभिद्विजवरे

रामायणमभिनूयते ॥४४॥

यहा नरुचरित्र, महाभारत एव रामायण के साथ मदयवत्सकथा का उल्लेख प्राप्त होने से पता होता है कि उस समय यह कथा उन प्रयोगों की तरह ही लोकप्रिय एव प्रसिद्ध होगी ।

प्रान्त प्रान्तमें प्रचार- जायसी के पन्नावन म इस कथा का उल्लेख है इनसे पता होता है कि उस कथानक की प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश में भी इसी रूप में होगी । यह बात स्पष्ट नजर में आ जाती है ।

बहुल रहेमान के इस का इस रूप में उल्लेख, वास्तव में पजाबकी ओर इस कथा के प्रचार का द्योतक है । राजपुतानी (राजस्थान) एव गुजरात म भी इस कथानक का बहुत प्रचार रहा है । यह बात भी उस संपादित सशोधित एव प्रकाशित ग्रंथ से पता होगी ।

विक्रम कथाचक्र से सम्बन्ध जिन कवि के ससृष्ट कथानक में जिनाचाय कालक के साथ उमका सम्बन्ध जुटाया है । एव कथा में उज्जयिनी हरसिद्धिमाता (देवी), प्रनिष्ठाननगर एव शालिवाहन राजा बावन बीर, और खापरा चोर आदि के उल्लेख किये हैं । और इस प्रकार से विक्रमकथाआ के वाताचक्र (कथा चक्र) के साथ उसका सम्बन्ध व्यजित किया है ।

प्रबन्धके रचयिता कविका परिचय- कवि ने प्रबन्ध में अपने निर्देश के अतिरिक्त अथ कोई भी परिचय नहीं दिया है । नामका निर्देश निम्नलिखित काव्य पंक्ति में मिल जाता है, जो यहा उद्धृत किया गया है ।

“इम भणइ भीम तस गुण धुणिसु
जो हरिसिद्धि धर-लवघ ।”

नाम का निर्देश प्राप्त होता है । किंतु कवि ने अपनी जाति ज्ञाति एव जन्मस्थल या निवासस्थान के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया है । साथ साथ प्रबन्धके रचना कालका भी किंतु उनके प्रबन्धकी प्राचीन

तम प्रीति भी ७, १ में वि. ग. १६८ को रिमी हुई — १ हुई है।
 (वि. २२८ म. प्र. १५) तम का भी अनुमान किया जा सकता है कि
 १७८ म. प्र. १५ को १२ की गी. व. उपरान्त म. भवनीन म. है।

कविता विद्याम ग्यात कविन भान विद्याम ग्यातने योमो
 कुत भी ग. व. म. विद्या है। किन्तु कविता विद्याम ग्यात गुरोर भूमि हो
 एका प्रतीत होता है। कदाचि त्रय कायगाता व. ग्यात की विद्यामा केवत
 गुरोर वदगात्र म. ही हा मकी या। और ७८५ गुरोर वदरी कवि श्रीम
 न कायी प्रगाया भी की है।

प्राचीन काल की गुरोर भूमि का विस्तार भी गुरोर प्रीतिार राजाओं
 के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ हुआ है। त्रिम राज्य म. गौराष्ट्र,
 आन। एवं समस्त राजस्थान का भी मन्त्रिमण होता था। और इसी
 व्यापक साव भागाव भी समान था।

कवि की शक्ति कवि का बाल्य हीना सम्भव है। कदाचि
 उत्तम गणन, नगर, एव हरगिद्धि माता परमेश्वरीका उपास किया है।
 साथ साथ व. सावपति भगवान नगर के भागा का गुरोर वदाल विद्या
 है। (दे० कडी २१७ १८, १९)। प्रतिष्ठा नगर वगनक प्रगढ़में विद्यम,
 त्रिविद्यम, विष्णु एव सूर्य का भी उत्तर है। सावलिगा व. मन्त्रिप्रवेश
 की पूव सयारी के रूप में जा प्राधना दी है इससे भी पता चलता है।
 जस कि 'करउ साति त्रिम न तरणी' कडी (५९९)।

कवि रामायण एव महाभारत से भी विशिष्ट चीति से परिचित थे
 एसा जान पड़ता है। कुछ छंद एव काव्य पद्धतियों के द्वारा इसका पता
 चलता है। सदयवत्स के गुण एव कायों की प्रगासावली के अनुसंधान म
 नल कदप युधिष्ठिर गायक भीष्म पितामह भीमसेन, वण एव दुर्योधन
 जसाके उपमान भी कविन दिये हैं। (दे० छप्पय कडी २८७) कविके अमाने
 म जिनधम एव जीवदया अहिंसाका भी काफी प्रचार था। इसके दोतक
 निम्नलिखित काव्य-पत्तिया हैं। इससे पता चलता है। जैसे कि जिन
 शासन गाडउ गहगहह। जीवदया देखी मन रहइ ॥ (दे० कडी ४५१, ४५२)

प्रबन्ध की भाषा प्रस्तुत प्रबन्ध की भाषा किसी भी जिनेत्तर गुजराती ग्रन्थ की भाषा से प्राचीन जान पड़ती है। प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्द और प्रयोगों के रूप में उसमें इतनी सामग्रियाँ भरी पड़ी हैं कि न पृष्ठों की बात। यदि प्रारम्भ के मगलाचरण में कवि ने गणपति का नाम स्मरण न किया होता तो इसकी गणना किसी जिन कवि की कृति के रूप में गिना जाने का सम्भव था। डा० टेसिटारीने जूनी पश्चिम राजस्थानी का नामाभिधान जिस भाषा स्वरूप को दिया है। और गुजराती विद्वान महाशयोने अतीम अपभ्रंश' और 'जूनी गुजराती' ऐसे शब्दों से उसका व्यवहार किया है। उसी समयकी भाषा 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' में प्रनीत होती है। वास्तव में वि.स. १४८८ की प्रति की उपलब्धि से भाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा हुई है। और इसमें कुछ परिवर्तन एवं आधुनिकरण नहीं हुआ है।

सरस या सुन्दर रचना - कवि इस प्रबन्धके प्रारम्भ में 'सरस' 'मुञ्जय' एवं सुच्छन्द प्रबन्ध के रचयिता सब काँ प्रौ' एवं लघु छोटे बड़े ऐसे कविजनों को नमस्कार करते हैं। इसमें अनुमान किया जा सकता है कि कवि न किसी प्राकृत किंवा प्राकृत अपभ्रंश ग्रन्थों में से इस प्रबन्ध के विषय में प्रेरणा प्राप्त की होगी जिसका निर्देश हमें निम्नलिखित वाक्य पत्तियाँ से मिलता है। जैसे कि 'गुरु लट्टय जि कवि कवियण सरस मुञ्जय सुच्छन्द बधयरा।' कवि के पुरोगामी काल में ऐसी प्रबन्ध रचना होना भी शायद सम्भव हो। फिर भी अद्य-यावत् प्राप्त जिनेत्तर रचनाओं में कवि भीम की रचना सबसे प्राचीन है-एसा कहने में सकोच नहीं है।

भीम कवि की रचना एवं काल समय - सदयवत्स चरित कथानक के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य से निष्पत्ति किया जाता है कि उन रचनाओं का प्रारम्भ वि.स. की १५ वीं शती से होता है। प्राचीन गुजराती भाषा में रचित भीम कवि की रचना सदयवत्स वीर प्रबन्ध' ग्रन्थ उपलब्ध रचनाओं में सबसे प्राचीन है। इसकी प्राचीनतम प्रतिकृति

वि स १४८८ की प्राप्त हुई है। इससे अनुमान किया गया है कि यह रचना निदान २० बीस साल पहले की होना सम्भव है। अतएव इनकी रचना वि स १४६६ की है। ऐसा निर्देश कई लेखकों ने किया होगा। वास्तव में कवि का इसके बारे में कहीं भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

प्रबन्ध के छंद कवि ने प्रस्तुत प्रबंधमें दूहा, दूहासोरठा, पदड़ी, चउपई अडयल, वस्तु, छप्पय, कु डलिया चामर एव मौक्तिकगम इन मात्रामेल छंद एव एकताली कौदारराग, बीर धउल धनासी, जैसे गेय काव्य छंद प्रयुक्त किये हैं। अतएव ७३० कडिया में वह कति प्रसादयुक्त एव बहिष्यपूर्ण और सुंदर बन पाई है।

वस्तुछंद 'पिगलसारोदार'के नियमानुसार १२५ मात्राओका नवपदी छंद है। पहले तीसरे ओर पांचवें पदमें १५ मात्राये, दूसरे एव चौथे पद में ११ मात्राये और अत्यन्त चार पदा से दूहा बनता है।

पदड़ी पदड़िका और पाघड़ी छं कडवक के अंत में अपभ्रंश काव्यो में प्रयुक्त होता है।

आचार्य हेमचंद्र जी ने 'छानुशासन' में श्री पदड़िका चार चरणों से पदड़िका छं बनता है ऐसा लक्षण दिया है। चार मात्रा के गणकी चरण सजा है। एव १६ मात्रा का एक पाद इस तरह के चार पाद पदड़िका छंद में रहते हैं। इसमें उसका नाम चतुष्पदी भी है।

प्रबन्ध में रस कवि ने इसमें नौ ९ रस होने का उल्लेख किया है, किंतु प्रधानतया वीर एव अद्भुत रसका संचार अधिक है। नगर रस उसमें गौण रूप में पाया जाता है। 'सदयवरस वीर प्रबंध' नाम की गुजराती कवि की रचना प्रय वीर रस से ही प्रेरित है।

गुजराती रूपान्तर उज्जयिनी के राजा प्रभुवत्स के महालक्ष्मी रानी से सदयवत्स नामक पुत्र हुआ। उसे द्यूत का कुव्वसन लगा हुआ था। प्रतिष्ठापुर के राजा शालिवाहन के सार्वलिंगा नामक पुत्री थी। उसके स्वयंवर में जाने के लिये आमन्त्रण मिलने पर राजा प्रभुवत्स ने मन्त्री के साथ सदयवत्स को प्रतिष्ठापुर भेजा। मन्त्री कृपण होने से कुमार को खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य नहीं देता था। स्वयंवर में सदयवत्स ने अपन गुण एवं कला से आकर्षित कर सार्वलिंगा से विवाह कर लिया।

उज्जयिनी में महादेव नामक एक दरिद्र ज्योतिषी रहता था। स्त्री की प्रेरणा से एक दिन वह राजा प्रभुवत्स की सभा में उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय पूछा उसने कहा कि मैं ज्योतिष के बल से भूत, भविष्यत और वर्तमान के शुभाशुभ को जानता हूँ। राजा ने उससे इस अभिमान से क्रुद्ध हो परीशार्य अपन निकटवर्ती जयमगल हाथी का आयुष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह कल दोपहरको मर जायगा। राजा ने क्रोधित होकर उसे कैद कर लिया और नौकरो को जयमगल हाथी की विनोप रक्षा करने की आज्ञा दे दी। लोक ज्योतिषी की अवज्ञा करते हुए कहने लगे, देखो इन ज्योतिषी ने हाथी का मरण तो जान लिया पर अपने ब दीखाने में पड़न की बात को नहीं जानी।

इधर वैद्या की देखरेख में जयमगल की विनोप सुरक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। पर भविष्यतावश दूसरे दिन दोपहर के समय हाथी मन्त्रोन्मत्त हा भाग निकला और बाजार में उपद्रव मचाने लगा। इसी समय एक सगर्भा ब्राह्मणी के अघरणी उत्सव का वरघोडा उसके पीहर से समुराल जा रहा था, वहाँ वह हस्ति आ पहुँचा। उत्सव में सम्मिलित लोग भाग खड़े हुये पर ब्राह्मणी गभभार के कारण भाग न सकी। अतः हाथी ने उसे पकड़ ली। यह देखकर उसके पति ने चिल्लाते हुये उसकी रक्षा करनेवाले को हार आदि देने की उद्घोषणा की। सदयवत्स की दृष्टि भी उस ओर पड़ी और उसने हाथी का मारकर ब्राह्मणी की रक्षा की। इससे प्रसन्न हो प्रभुवत्स राजा ने कुमार को सुवराज-पद देने का

निश्चय किया। स्वयंवर में साय जाने वाले मंत्री ने कुमार को युवराज पद मिलता देख विचार किया कि मैंने इस आवश्यक द्रव्य ध्य के लिए नहीं दिया था। संभव है वह उम्र और का बदला मुझ से ल। अतः इस युवराज पद नहीं मिले ऐसा सोच राजा का उल्टी मंत्रणा दी कि कुमार ने एक साधारण स्त्री की रक्षा करने के लिए 'जयमगल' जैसे राजमाय हाथी को मार डाला यह उचित नहीं किया। राजा व मंत्री की बात जेंच गई उसने कुमार के बाय को अनुचित समझ कर उसे राज्य छोड़कर चले जाने की आज्ञा दे दी।

कुमार ने भी अपमान होने से अब वहाँ रहना उचित नहीं समझा और जाने की तैयारी कर ली। माता ने समझाया पर उसने नहीं माना। सावलिगा भी उसके साथ हो गई। चलते चलते वे एक वन में आ पहुँचे वहाँ सावलिगा को जोरा से प्यास लगी। कुमार पानी की खोज में इधर उधर घूमते हुए एक प्रपा पर नज़र आई। पानी लेनेके लिए पास पहुँचने प्रपालिका बुद्ध ने कहा यह हरसिद्धि माता की प्रपा है। जितना पानी लोगे उतना ही खून देने की शर्त से ही जल ले सकते हो। कुमार ने सावलिगा के प्रेमवश बह घात स्वीकार कर पानी ले जा कर सावलिगा को पिलाया। बुद्ध भी साथ गई और खून मागा। कुमार शिरच्छेद करने को उद्यत हुआ। इससे देवी ने प्रसन्न हो कर माँगने को बहते हुए कहा कि मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये जगल की रचना की है। और मैं उज्ज्वल एव प्रतिष्ठान नगर की कुलदेवी हूँ। कुमार ने सप्राम एव युद्ध में जय होने का वरदान माँगा।

देवी ने सारियों के छूत में जय होने के लिये दो पासे कपटक छूत में जय होने के लिये कपर्दिकायें, और सप्राम में जय होने के लिये लोहछुरिका दी। आगे चलते हुए स्त्रिया के समूह के बीच में एक कुमारिका को ध्यान करते हुए देखकर सावलिगा ने उसके पास जाकर वत्तान्त पूछा। कुमारिका ने कहा यहाँ से ५ कोस पर स्थित धारावती-नगरीके राजा धारवीरकी स्त्री धारिणीकी मैं लीलावती नामक पुत्री हूँ।

बदीजना व मुक्ष में सदयवत्स का गुण श्रवण कर उसे पाने के लिये इस कामितप्रत्न तीर्थ में ६ महीने में ध्यान कर रही हूँ। सदयवत्स के न मिलने पर कल बिना में जल मरूगी। नावलिगा ने यह बताया सदयवत्स का कहा। कुमार सबक साथ नगरी में आया और लीलावती से विवाह कर उसकी इच्छा पूर्ण की।

[इसी समय धमधाय नामक अनायास बड़ा पधारे और "घोडा बहुत भी धम जरूर ही करना चाहिये एसा उपत्न दन हुय मृगाक की कथा कह मुनाई। सदयवत्स ने उसे सुनकर थावक धम स्वीकार किया।]

लीलावती का पितृगृह में रखकर सावलिगा के साथ कुमार आगे चला। रास्त में एक पवन पर शिला से ढकी हुई गुफा देखी, दाना ने कौतूहलवश भीतर प्रवेश किया तो उसमें ५ चार बड़े दन्ते। चोरो ने सदयवत्स को अवेला देख उसे मारकर सावलिगा का ग्रहण कर लेने का विचार किया। उन्होंने दून रमने के निय सदयवत्स का आहान किया और जो हारे उसे मस्तक देना पड़े यह शत रखी गई। देवीके वरदानस सदयवत्स जीना पर संज्जनताने उसका शिर छेदन नहीं किया। इससे चोर प्रभावित हुए। और अदृष्टाजन में जीवनी, रसमिद्धि आदि विद्यायें देन को कहा पर कुमारन उन्हें नहीं लिया। फिर भी एक चोर ने गुप्तरूप से कुमार के उत्तरीय वस्त्र के छार से पद्मिनिपत्र वटित लक्ष्य मूल्य का क चुक बाध दिया। चारान यह भी कहा कि कभी आप स कट में पड जाय तो हम स्मरण करने ही हम आकर आपकी मत्प्य करेंगे।

कुमार आगे चलते हुए एक निजन नगर में पहुँचा। राजभवन के समीप आने पर एक स्त्री का राना सुन कर उसके पास जाके राने का कारण पूछा। उसने कहा मैं न द राजा की लक्ष्मी हूँ, अनायास हान से रो रही हूँ, तुम मेरे स्वामी बन जाओ।

[नगर का निजन हाने का कारण पूछने पर लक्ष्मी न कहा कि इन

बीरपुर नगर में एव तापस आया था। वह ब्रह्मचारी था। लोगो पर प्रभाव जमाने के लिये स्त्री का स्पर्श ही जाने पर बड़ा गुस्सा दिखलाने का ढोंग करता था। एक बार नगरी की बेश्या ने उसका स्पर्श किया, इससे उसने राजा के पास फरियाद की। बेश्या ने उसे ढांगी बनलाया राजा ने जमकी परीक्षा के लिये उसे महल में लाकर रानी के ससंग में अधिक रूप से आने की व्यवस्था कर दी। रानी को देख कर वह कामातुर हो उठा और भाग के लिये प्रार्थना की। रानी जोर से चिल्लाई तब राजा ने आकर तापस को मार डाला। वह तापस भरकर राक्षस हुआ और पूव भव के वरस नगरी की यह स्थिति कर दी।]

लक्ष्मी ने कुमार को धन का ढेर पडा बतलाया। कुमार साबलिगा से कहा कि यह धन अपने फिर कभी विधि विधानपूर्वक ग्रहण करेंगे। अभी तो प्रतिष्ठानपुर चले। चलते चलते वे प्रतिष्ठान के समीप आ पहुँचे और पास के गाँव में एक ब्रह्मभट्ट के यहाँ जा कर ठहरे। समुद्राल होने के कारण नगर प्रवेश के लिये योग्य वस्त्राभूषण लाने एव रचनादि की व्यवस्था करने के लिये कुमार अकेला नगर में जाने लगा तब साबलिगा ने कहा कि यदि आप ५ दिन में वापिस नहीं लौटे तो मैं चित्त प्रवेश कर लूँगी।

कुमार को नगर में प्रवेश करते हुए एक टूटक मिला। कुमार उसे अपशकुन समझ कर वापिस जाने लगा। टूटक को यह बात अखरी और वह पुष्प एव साद्यादि मागलिक वस्तुओं को लेकर पास में आकर कहने लगा कि मैं सिंहल के राजा का सुरसुंदर नामक पुत्र हूँ। वीतुनवश ५०० हाथी एव करोड मोहर लेकर नगर देखने के लिये यहाँ आया था पर मैं उसको जूए में हार गया। जुबारियों ने मेरे हाथ काट डाले। देव रुठता है वही जूआ खेतता है।

टूटक के साथ कुमार ने नगर में प्रवेश किया। रास्ते में सूय-प्रासाद में विवाद हो रहा था। विवाद का विषय यह था कि राज्यमाय कामसेना बश्या ने स्वप्न में देखा कि श्रेष्ठि दत्तक के पुत्र सामदत्तने उसके

पर आकर उससे भोग किया। अतः सोमन्त ने अपनी द्रव्य मुद्रा रूप में महिन कार्यों की गृह्य लेने के लिये वेश्या ने अक्का भेजी। श्रेष्ठि ने धन देने से इनकार किया। इसी कारण ३ दिन से विवाद चल रहा था कुमार का देख उसे इसका 'यायाधीश' चुना गया। उसने श्रेष्ठि से कहा कि राजमाय से विरोध करना उचित नहीं। अतः तुम इससे धन दे दो। कुमार ने श्रेष्ठि से धन मंगा कर उसका आधा भाग लेने के लिये अक्का को कहा पर उसने आधा लेने को स्वीकार नहीं किया। तब कुमार ने एक दण्ड भाग कर उसने सामने धन रख दिया और प्रतिबिम्बित धन लेने के लिये अक्का से कहा। क्योंकि स्वयं एक प्रतिबिम्बित अवस्था समान ही होती है। इस याय से अक्का लज्जित हो बिलखती हुई लौट गई।

कामसना यह वृत्तान्त जानकर नृत्य करने के बहाने सूप प्रासाद में आई और कुमार को देख कर मोहित हो गई। उसी कुमार को अपने घर चलाने का कहा। टूटकर जाने का विरोध किया कि वेश्या किसी की नहीं होती। पर कुमार निर्भीकता से चला गया और ५ दिन उसके यहाँ रहा। कुमार नगर में जूआ खेलने गया और बहुत सा धन कमा लाया। उससे उसे कुछ धन सार्वलिंगा के लिये आभूषणादि खरीद कराने के लिये टूटक का द दिया बाकी वेश्या का द दिया।

५ वें दिन कुमार ने वेश्या से जाने की आशा मागी। वेश्या ने रहने का बहुत आग्रह किया पर कुमार को सार्वलिंगा से वचनवद्ध होने के कारण जाना जरूरी था अतः रवाने हुआ। जाते समय वेश्या ने कुमार का उत्तरीय वस्त्र खँचा तो उससे चोर का बाधा हुआ पद्मिनीवष्टित के चुक खुल पडा। वेश्या ने वेष्टन खोलने पर रत्नमय के चुक देख कर कुमार से मागा और उसने वह उदारलापूवक दे लिया।

वेश्या उसे पहिन कर राजसभा में जा रही थी, इसी समय एक सेठ ने के चुक को देख, वह अपना चारो गया था वही है यह निश्चय

वर राजा ग इमरी परिवार की। राजा द्वारा वरगा का पूछने पर उसने कहा हमारे यहाँ अनेक वारादि भा। है मैं उनका नाम नहीं बता सकती। तब राजा ने वरगा का पूछा की गजा का हृषम द द्वारा। कुमार न जब यह बात सुनी तो यह गूरी क स्थान पर पहुँचा और जानवान का जाकर कहा 'शोर मैं हू वरगा का छाड़ दा' पर उमर गहा छाड़ने पर जबरन उमर छाड़ दिया राजान कुमार का पकड़न क लिय अपनी सना भजो पर कुमार न उस भी हरा दिया।

उपर ५ दिन तक कुमार क न आन क कारण सावनिगा ने चित्त प्रवेश की तैयारी कर ली। कुमार न यह सुनन ही अपन बदल सामदेव को वहाँ छाड़ वापिस आन की प्रतिज्ञा कर वहा पहुँचा। और सावनिगा को जलन म बचाया। प्रतिज्ञानुसार कुमार गूलीस्थान पर वापिस आया राजा ने ५२ वीरो को कुमार स मुद्ध करन क लिये भेजा। नारद स सूचना पाकर कुमार के पूव परिचित ५ चार वहाँ सहायताप आ पहुँच अत ५२ वीर भी हार गय।

राजा ने बल स काम निभालना न देख उमरना से कुमार का नाम पूछा और बसके न बनलाने पर वेरगा से पूछा। तो वरगा ने उसका नामाङ्कित खन्न लाकर राजा को दिवशाया। राजा को छनने के लिय कुमार ने वहा इस तनवार को तो मैं मदयवत्स से जूए म जीना था। राजा ने उसे वश मे करने का गजघटा बुलाई। उसे भी सिंहनाद द्वारा कुमार ने भगा दिया। अत मे राजा के अनुरोध से कुमार ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रगट किया। तो राजा को उसे अपना जामाता ही जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई और अपने पुत्र शक्तिसिंह को भेज कर सावनिगा को भी बुला ली।

अवान्तर कथा। कुछ समय तक दोना वहा आन दपूव क रहे। इसी समय सदयवत्स की मित्रता १ बनिक्, १ धत्रिम एव ब्राह्मण जाति के तीन यक्तिया स हो गई। इतन म ही एक विदेशी के मिलन पर कुमार न पूछा कि वही कुछ कीतुक देखा हा ता कहो। उसने कहा तुम्बन नगर म धनपति सठ क मृत पिता बहुत

समय हुए जला दिये गये थे, पर वे रात के समय जीवित अवस्था में घर पर आ जाते हैं। यह बड़ा आश्चर्य है। कुमार कौतूहलवश तीनों मित्रों के साथ वहा गया। तुम्बन म प्रवेश करते हुए एक ब्राह्मणकन्या को सीकोतरी पीढा दे रही थी,उसे छुडाकर उसका विवाह ब्राह्मण मित्र के साथ कर दिया।

आग चन कर मित्रो सहित कुमार सेठ के घर पहुचा। और अमुक घन लने का तय कर वे उसके पिता का शव जलादेने के लिये स्मशान ले गये। उसे प्रात काल जलाने का निश्चय कर रात को १-१ प्रहर बारी बारी पहरा देने की कर ली गई।

पहली बारी वणिक की थी। पहरा देते हुए उसे एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। वणिक शव को अपनी पीठ पर बाँध स्त्री के पास गया। और रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा मेरा पति शूली पर लटका हुआ है मैं उसके लिये घाली म भोजन लाई हू पर शूली के ऊची होने के कारण उस तक पहुच नहीं सकती। इसी दुखसे रो रही हू। वणिक ने कर्णवाचश उसे पीठ पर चढा कर ऊची कर दी। स्त्री ने ऊची चढ कर शूली पर लटके हुए पुरुष का मांस खाना शुरू कर दिया। जब एक मासख ढ वणिकके ऊपर पडा तब उसने उसको नीचे डाल दिया। पडते ही वह स्त्री भागने लगी पर वणिक ने उसका पीछा कर एक हाथ काट डाला और उस हाथ का बालुका म डाल दिया।

दूसरे पहर म एक ब्राह्मण ने एक राक्षस द्वारा एक राजकुमारी को ले जाते हुए देखा। राक्षस का राजकुमारी से भोग की प्राय ना करते देख पीछे म ब्राह्मण ने उमे मार डाला।

तीसरे पहर क्षत्रियकी बारी थी। शव को जलाने के लिये वह अग्नि लेने की खाज म निकला तो उसने भूतों को खीर पकाते देखा। उनके पास ७ पुरुष सिचडी के साथ साग की जगह खाने के लिये बधे हुए थे।

क्षत्रिय पुत्र ने भूतों को डरा कर भगा दिया। और पत्थर मारकर सिचडी की हाडी को फोड डाला। व धे ७ पुरुष राजकुमार थे।

चौथे प्रहर सम्पन्नता उठा ता कबो उग जूआ गेल्ले को मन्दन किया । शय म रहे हुए य ताओ भरो बाण प्रगामि कर एक शत्रुमृत म सो जूआ गेल्ले की गामपी उठाकर भ भी । जो हारे उपाय मराक धन कर दिया जाय । दम प्रतिभा पूरक गाय पैतालका श्रीरर कुमार ने शय को जला दिया ।

प्रभात म श्रष्टि के पाग जाकर पूर निम्नित धन मांग । श्रष्टि ने कहा बल गानरी करने दू गा । कुमार ने राजा के पाग पहिया की ओर रात का सारा वताय कह गुनाया । राजा के प्रमाण मांगने पर बालू म गड़ा हुआ हाथ उपस्थित किया और यह हाथ रानी का होते से रानी सीकोररी साबित हुई । राजकुमारी राजकुमारा को भी उपस्थित किया गया । श्रष्टि ने कुमार को अपनी ब्याह ब्याह दी ।

सन्धवत्स वहाँ से बागिस लौटते हुए निज न नगर को जिगे दम आया था वहाँ गया । वहाँ रागस की आराधना कर वीर बोट नामक नगर बसाया । सन्धवत्स के सीतावनी रानी से बनवीर और सावलिगा से वीरभानु नामक पुत्र हुए ।

[सदयवत्स ने धनुषी को सवत्सरी करने वाले जैनाचाय कालकसूरि के हाथ से अपने बसाये नगर के जैतम तिर की प्रतिष्ठा करवाई ।]

इसो समय उज्जयिनी, जो कि अपनी मूल राजधानी थी, पर शत्रुओ के ६ महीने से घेरा डालने की बात सुन कर कुमार ने ससय वहा जाकर शत्रुओ को परास्त किया । प्रभुवत्स राजा ने सदयवत्स को उज्जयिनी का राज्य दिया । वीरबोट का नवीन स्थापित राज्य राजकुमार को सौंप दिया गया ।

[अन्यदा कालकाचाय उज्जयिनीम पघारे और पूछने पर सदयवत्स का पूव भव कह सुनाया कि तू विध्याचल की पल्ली के गोत्रक नगर मे ब्याध्र राजा की धारलदेवी रानी के गुण सुंदर नामक सरलस्वभावी

एव दयावान पुत्र था। श्यामावाप के पास जीवदया व अभयदान का उपदेश श्रवण कर उसने सम्यक्व सहित श्रावकोचित १० व्रत ग्रहण किये। गुणमुन्दर मुनिया को अग्नादि का दान और प्राणियोंका अभयदान देने में सदा तत्पर रहता था। एक बार उद्यान में खड़ा करते हुए उसे ४ पुरुष मिले। उन्होंने कहा कि बताल नगर में देवी के बलिदान के लिये हम पक्का गया था पर हम वहाँ में भाग कर यहाँ आ गये हैं। वहाँ का राग बड़े निदयी है और मनीषी मानकर घाड़ोंमें स्वायके लिये जैसे और विगेष कार्य में मनुष्य तक की बलि दे देते हैं। गुण-मुन्दर का हृदय करुणाद्र हा गया। अब वहाँ जाकर बलि देनेवाले लोगों को भगाकर मनुष्या को बचाया। और अग्नी बलि देने के लिए कठ पर नलवार का प्रहार करने लगा। देवी ने उसके धैर्य एवं साहस से प्रसन्न हो उसका हाथ पकड़ा। तब उसने देवी को प्रतिबोध देकर सदा के लिये बलिप्रथा बंद करवा दी। मृत्यु समय में आराधन करने से तुम। इस जन्म में सदयवत्स हुए। जीव दया व अभयदान के पुण्यसे प्रबल पराक्रम और मुनि दान के फल से सब प्रकार के भोग प्राप्त किये। अपना पूव वृत्तान्त सुन सदयवत्स का पूव भव स्मरण हो आया।

राजस्थानी रूपांतर-राजस्थान में प्रचलित सदयवत्स कथा में केणव का प्रति सबसे प्राचीन है। अतः तुलनात्मक विचार करने के लिये यहाँ उसका सार दे दिया जाना है।

पूव दिशा के कोंकण देशस्थ विजयपुर में महाराजा महीपाल राज्य करते थे। उनका पुत्र सदयवच्छ था। राजा के मंत्री सोम के सावलिगा नामक पुत्री थी। याव्य वय होने पर महाराजा ने पंडित को बुला विद्याध्ययनार्थ कुमार को उसके मुमुक्षु कर दिया। इसी प्रकार मंत्री सोम ने सावलिगा को भी पणन के लिए उही की पाठशाळा में भेज दिया। और उस पाठशाळा के छात्रों से अलग रखकर पणने का निर्देश कर दिया।

सावलिगा की पढ़ाई परदे में होने लगी। राजकुमार के पूछने पर

पंडितजीने उसके परदे में पड़नेका कारण उगता मन्थी हुआ बताया। और कुमारी को कुमार का बाड़ी होना कह दिया जिगा परस्पर कोई सम्बन्ध न हो सके। एक दिन जिगी कारण में पंडितजी नगरमें गए थे और सबसे पढ़ाने का काम कुमार का सौंप गया। पढ़ा हुआ परन्तु म स्थित कुमारी ने कोई पाठ अगुद्ध बोला। तब कुमार ने कहा 'अन्धी ! अगुद्ध क्यों बोल रही हो?' प्रत्युत्तरमें कुमारी ने कहा 'बाड़ी' जगा पायी में लिखा है यसा ही पढ़ रही हूँ। कुमार का भ्रम इस उत्तर से दूर हो गया। उसने सोचा गुरुजी के कथनानुसार कुमारी यदि अन्धी है तो पाठी पर लिखा वह पढ़ने की बात कह नहीं सकती और मुझ कोड़ी कहना का कारण भी क्या? अतः हम दोनों एक दूसरे का देग न करें इमीनिये गुरुजी ने भ्रम फैला रखा है। भ्रम दूर होने ही कुमार का कुमारी के देखने की उत्कण्ठा बढ़ी। और एक दूसरे को दग करने प्रममूर्ख में पध गये। फिर परस्पर दूहा-गूढ़ादि लिखने व कहते रहने के द्वारा प्रीति बढ़ होती गई।

गुरुजी के बाग में सेत थे। उसकी रखवाली के लिये बारी २ से शिष्य वहां जाते थे। नियमानुसार सदयवच्छ अपनी बारी पर सेत पढ़ चा और सावलिंगा उसे भाता (भाजन) देने सेत गई। वहाँ एकान्त होने से प्रीति विनेप रूप से दृढ हो गई। सावलिंगा न किसीने भी साथ विवाह होने पर पहली रात उसके साथ रमण का वादा किया।

शिक्षा समाप्त होने पर यौवनावस्था देख, राजा ने सदयवच्छ का विवाह किसी राजकुमारी से कर दिया। और सावलिंगा के पिता ने भी कुमारी की अवस्था विवाहयोग्य जानकर, ब्राह्मण को भेजकर पुष्पावती के सेंठ घनदत्त से उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया। सदयवच्छ यह जानकर वेश्या के कथनानुसार स्त्रीवेप में कुमारी से उसके घर जाकर मिला। तब उसे देवी मन्दिर में मिलने का कुमारी ने संकेत किया।

निश्चित समय पर पुष्पावती से घनदत्त आया और उसके साथ सावलिंगा का विवाह हो गया। सदयवच्छ के साथ अपनी पुरानी प्रीति

एक वचन निवाहने के लिये देवी मन्दिर में अपनी पूर्ण मनीषी पूर्ण करने को पति से आशा लेकर वहा पहुँची ।

सदयवच्छ न उस दिन दूना नशा कर लिया और देवी के मन्दिरमें जाने सी गया । नशे की अधिकता से उसका इनती प्रगाढ़ निद्रा आगई कि सावलिगा ने उमे जगान के लाख प्रयत्न किये पर सब निष्फल गये । तब निरुत्तर होकर वह अपने घर लौटते समय अपने आन के सूचक चिन्ह एक फिर मिलने का सबत सूचक दूहा कुमार के हाथ पर लिख दिया ।

निद्राभंग होने पर कुमार ने सावलिगा के न आने का बड़ा अफसोस किया । दनीन के समय हाथ की आर देखने पर कुमार ने हाथ पर उसका लिखा हुआ दूहा पढ़ा । और अपनी गलती महसूस कर यागी होकर दोह की सूचनानुसार पाहपावती नगर पहुँचा । रास्ते में हाथ का लेख नष्ट न हो जाय अतः बावडी में पशु की भाँति मुँह से पानी पिया । इस प्रसंग में पतिहारियों से बातचीत करते हुए कुम्हारिन ने पता लगा कर वह घनदत्त सेठ के घर पहुँचा और सावलिगा से चार आँख होने पर दोनों अधीर हो उठे ।

उस समय सावलिगा ने अपने पति को कहकर नया महल या मन्दिर बनानेका काम शुरू कर रखा था । सदयवच्छ उमीके निर्माण कायम मजदूरी करने लगा । एक बार जागीका वेप घारण कर भिक्षा लेने सावलिगा के घर गया, जब उसने अन्य किसीके हाथ से भिक्षा न ली, तब सावलिगा देने आई और पुनः चार आँख होने पर स्तम्भित में हो गये ।

राजगवालमें बैठी हुई राजकन्या ने यह स्वरूप देख उपालभ सूचक दाहे कह । इन दोहों को सुनकर कुमार नाराज होकर चला गया । राजकन्या ने सावलिगा से मिलकर दोनों का प्रेम-सम्बन्ध ज्ञात किया ।

इधर सदयवच्छ ने सैन्य सग्रह कर पुहुपावती के राजा भाज का राजकन्या देनेका कहलाया । और उसके न मानने पर युद्ध कर उसे हरा लिया । तब भोज ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया । कर

साधा के समान कुमार म भक्त मरुतों म मकर पारत भेट को बरबर मंगवाना और उमम गार्वा तथा नेने का स्वीकार कराई जाइ दिया ।

सावलिगा और सत्यवच्छा मुक्त ज्ञाता विचर बहा प्रसन्न हुआ । कुछ दिवस रहने के पश्चात् सावलिगा अपनी नगरी को सम्प्रदायन करती हुआ विदाग करती रह्य । सावलिगा आदि गतिशते साय विचर मुक्त भागते हुए उमर ४ पुत्र हुए । महां कथा की समाप्ति होती है ।

कथा के विविध स्थांन-उत्पत्त कथा म प्रम और विरह प्रपात है मर्वाय नृ गारुग प्रपात है । गार्वा तथा न भी मानी प्रीति ब कथा निभाया । मर्वा परवर्ती स्थांतरा म सत्यवच्छ की नगरी का नाम विगी म मुगीपुर विगी म आत्पुर और विगी म पुष्पावती मिला है । उमके दिता का नाम मानिवाता ब महीपाल माता का नाम कथा सपरमाया कही गोभाग्यगुप्ती एवं मुक्त का नाम मगुन मताया दिया है । सावलिगा के दिता का नाम पम्ममन कही पम्मगठ और माता का नाम सोलावती दिया है । विद्याभ्यया ब लिय गुरु के पाग कही सावलिगा पहन गई और कहीं पीछे मगुराम का स्थान धारानगर मगुर का नाम हीरा, पति का नाम रत्नपाल एवं वही राजा का नाम विजयपाल दिया है । पुष्पावती म सत्यवच्छ ब पट्टया पर कई कथा नका म धर में आग लगा कर सावलिगा का शरीर में उतस जावे मितना, कही वहाँ भी सत्यवच्छ का तही पहुच सकना दिया है । वहाँ ब राजा का नाम कही भिन्न ही लिखा है और उमरी कथा के विवाह का कारण कथा का सावलिगा से अनुराग हा जाना बनलाया है । कहीं स्वपर विधि से उसवे साय विवाह होने का उल्लस है । कई स्थांतरा में सदबच्छा अपने नगर लौटने का कारण विता अन्वेपण कर बुलवा भेजना लिखा है । और भी कई घटनाओं में अतर ब कमीवरी पाई जानी है । अर्थात् अनेक व्यक्तियों की मूर्खता से इस कथा में बहुत कुछ समय समय पर जोडा एवं रूपांतरित किया गया है ।

कई कथानको के प्रारम्भिक भाग में उमके पूर्वभव का प्रसंग देखर

श्रीति का प्राचीन सम्बन्ध होना व्यक्त किया है। एक स्तर में अथ अनेक कथानकों की भाँति शिव पावती का प्रमग भी जोड़ दिया गया है।

कथाओं में भिन्नता-अथ गुजरान और राजस्थानी संस्करण में मुख्य रूप से जो अन्तर है उन पर प्रकाश डालना है।

(१) गुजराती संस्करण वीर एव अदभुनरस प्रधान है राजस्थानी शृंगार प्रधान है।

(२) गुजराती संस्करण में कई घटनाएँ हैं। तब राजस्थानी कथा में घटनाओं का प्राधान्य व अधिकता नहीं है पर प्रेम सम्बन्धी कथन ज्यादा हैं।

(३) गुजराती संस्करणानुसार सार्वलिगा सदनवत्स की विवाहिता पत्नी है, तब राजस्थानी संस्करणानुसार वह रत्नपालकी विवाहिता पत्नी और सदनवत्स की प्रेमिका है।

(४) गुजराती संस्करणानुसार सत्यवत्स उज्जैनी के राजा प्रभुवत्स का पुत्र है तब राजस्थानीके अनुसार विजयपुर, आनन्दपुर, मुगीपुर, या पुहपावती के राजा महिपान या सालिवाहन का पुत्र है।

(५) गुजरान एव राजस्थान में प्रचलित आधुनिक कथानक मिलता जुलता है अर्थात्-गुजरान में भी प्राचीन कथानक को अब मूला दिया गया प्रतीत होता है। इनमें पूर्वभावों के प्रेम सम्बन्धों की कथा ७१८ वर्षों तक बढ़ चुकी है।

शृंगारप्रधान कथानक की निवधन की सदनवत्स चउपई और मारवाड़ राजस्थान के अर्थात् मद्य पद्यत्मक 'सदेवत सार्वलिगा' नाम के कथानकों में प्रधान रूप में शृंगार रस पाया जाता है।

सदनवत्स कथा एव दो परिपाटी-राजस्थान की अनेक प्रसिद्ध लोककथाओं में "सत्यवत्स सार्वलिगा" की प्रेमकथा का कई शताब्दियों तक राजस्थान में सर्वाधिक प्रचार अधिक लम्बे समय तक

रदा है। इस कथा की अनेक प्रतियाँ एन सिविल सर्कार की उन्नति
इस कथन का समर्थन करती है।

सत्यवत्स कथा व विविध रूपों में अस्याग ने जाना जा सता
है कि उग सातकथा का मुख्य दा प्रवाहा म विनाम हुआ है। भीम
कवि का गुजराती 'सत्यवत्स कीर प्रथम' एवं ह्यकथने मन्तुन मन्थ
वत्स चरित्र' के गद्य कथानक की परिपाटी धीर रस म प्ररित कनी आ
रही है। तो राजस्थानी पद्यात्मक एवं गद्य पद्यात्मक सभी प्रकार क
कथानक गु गार रस-भूतक होने व नाने उगम कृत ही भिन्न रहे हैं।
पञ्चाव एवं उत्तर प्रेगम उल्लिखित सत्यवत्स कथानक का केवल
नामालङ्कन के अनावा विगय कुछ भी जान अभी तक प्राप्त हुआ
नही है।

सदयवत्स चउपई* राजस्थानी रूपतरा में सबसे प्राचीन
रचना सरतरगच्छीय जैनकवि नेगव अपर (दीगिन) नाम कीनि
कथन रविन 'सत्यवत्स सावलिगा चउपई है। इसकी रचना वि स
१६९७ के विजयादशमी को प्रथमाम्यास के रूप में की गई है। किनु
जान ऐसा पढता है कि वास्तव में यह चउपई भी कवि की स्वतन्त्र रचना
न होकर जनता में प्रसिद्ध दोहे आदि पद्यो को अपने धागेसे माला बनाने
के रूप म पिरोये हा ऐसे, सवजन सा लिखाई देता है। राजस्थानी भाषा
के पिछले सभी रूपतर प्राय गद्य पद्यात्मक रूप में ही हैं। जिनमें से
कुछ रचनाओमें दोहे हैं गद्यांश कम हैं। तो कुछ में गद्यांश बहुत विस्तृत
है। कीर्तिवधन ने अपनी रचनाकृति में बीच बीच में अपने पद्यो के
साथ २ प्रचलित पद्यो को भी यथास्थान जुटा लिये हैं।

गद्यपद्यात्मक रूपतर राजस्थान की गद्यपद्यात्मक 'सदयवत्स
कथा सचित्र रूप में भी मिलती हैं। अतएव वह विशेष रूप से उल्लेख
नीय हैं। सदयवत्स सावलिगा री कथा' गुजरात म आबाल बूढो में ज्ञात
है। उनके आठ भव के प्रेम एव वियोग की कथायें स्त्रिया भी बडे चावसे

पढ़ती हैं। उपलब्धि प्राचीन राजस्थानी काव्य ग्रंथों में पूर्ववर्ती केवल १२ एक या दो भव की कथा का वर्णन पाया जाता है। आठ भव की कथा का सम्बन्ध पीछे से जोड़ा जुटाया गया प्रतीत होता है।

कथा द्वारा जैन मनका प्रचार एवं प्रसार सदयवत्स कथा का संस्कृत गद्य रूप कि जो गुजराती कथानक से प्रेरित होना प्रतीत होता है, उसके रचयिता हृषवधन ने इस लोक कथा का अन्य जैन विद्वानों की भाँति ही जन स्वाग या चोला पहना दिया जान पड़ता है। जैसे कि सदयवत्स ने अपने बसाय हुए नगर में वीर जिनेश्वर के मंदिर की प्रतिष्ठा चतुर्थी की सवत्सरी मनाने वाले कालकाचाय के हाथों से करवाई है। जन कवि ने जनाचाय कालक के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ा जुटाया है। जिसने सदयवत्स को इसके पूर्वभव की कथा सुनाई उससे सदयवत्स को जाति-स्मरण तब हुआ। हृषवधन के उल्लेख के अनुसार सदयवत्स ने श्रावक धर्म स्वीकार किया था। किन्तु केशव (कीर्तिवधन) ने उसे राजस्थान में प्रचलित लोककथा के रूप में ही रहने दिया है।

परिशिष्ट १ में प्रकाशित सदयवत्स सार्वलिंगा पाणिग्रहण चउपई की रचना किस कवि ने की है उसका उल्लेख अप्राप्य है। प्रायः उसका रचयिता जैन होगा सम्भव है। कवि ने किसी प्राचीन चरित्र के आधार पर यह रचना की है। पाणिग्रहण अधिकार के प्रथम अधिकार होने का उस चउपई में उल्लेख है। जैसे कि 'ए पहिलु हुज अधिकार, कवि जोई चरित्र आधार। इसकी भाषा १६ वीं शती के अंत भाग की अथवा १७ वीं के प्रारम्भ के होना सम्भव है।

कवि केशव की रचना केवल कवि की सदयवत्स सार्वलिंगा चउपई की रचना (परिशिष्ट २) विप्रलभ शंभार रस में ही भरपूर है। इसमें जो छंद हैं द्रुहा (दोह), चंद्रायणा एवं कवित्त मनोवेधक है। एवं सुभाषित, अन्योक्ति अयान्तरयास कहावतें, और मुहावरों के द्वारा काव्य रसपूर्ण बनाया है। कवि ने कड़ी ४५४, ४५५, ४५८, में वस्तु निर्देशात्मक मंगलाचरण किया है। (पृ० १३५) और अंत में फल

श्रुति दी है ।

पूर्वभव का कथानक-मस्तुन कथानक म पूर्वभव की कानी की गई है । वह कीर्तिवधन की चठपई म नहा है । सत्यवत्स एव सावलिगा क प्रेमी युगल का सम्बन्ध नायक एव नायिका क रूप म है । इसमे पराक्रम की काई भी बात नहीं है । बेवत पुष्पावती के राजा को पद-दलित करके सावलिगा को सत्यवत्स प्राप्त करता है इनके पराक्रम का ही उल्लेख है । परन्तु इसमे कुछ अम्भुतता नहीं दिखाई देती । सत्यवत्स शौर्यवीर क रूप नहीं दिखाई देता, किन्तु प्रेमवीर के रूप म दरप मान होता है ।

सदेवन्त सावलिगा के आठ भव की कहानी कवि या लेखक इस कहानी क रचयिता का पता नहीं चलता ।

कथानक का प्रारम्भ जगन्माता पारवती जी ने बननीला देखने का हठाग्रह किया । इसलिए भगवान शंकर उनको साथ मे लेकर बनमे चल आये । रास्तेमे एक नारियल नामक प्राचीन वाक देखने मे आयी । तृषा लगी हुई थी जिममे पावती जी ने भगवान शंकर से पानी खाने के लिये प्रार्थना की । शिवजी ने प्रार्थना सुनकर पानी लाकर दिया । सती उमा पानी पीने की तयारी करता है कि वहा शिर उठाने परे एक नर एव भादा बदर की जोड़ी देखी । पावती ने भगवान शंकरसे पूछा कि ये बदर बौन से विचार म इतने मग्न हो गये हैं । शिवजी ने उत्तर दिया कि यह बात बहूत मन्वी चौडा है, छोड दो इसे । उत्तर सुनकर यह रूठ गयी और मारे क्रोध क जब भगवान शंकर क शिर के शतों में छुप गई । तब आखिर म शिवजी वह बात सुनाने के लिये तयार हो गय ।

अष्ट भव के नाम (१) ब्राह्मण-ब्राह्मणी (२) चकवा चकवी (३) हिरन हिरनी (४) मयूर डेलणी (५) हस हसी (६) राजा रानी (७) बदर-बदरी, और बाद मे (८) नर-नारी

पहले भव की कहानी ब्राह्मण ब्राह्मणी धारापुर नामका एक देहात था। उस गांव में दो ब्राह्मण रहते थे। दोनों निःसन्तान थे। जिससे उन्होंने वनमें जाकर तपश्चर्या की। ब्रह्माजी प्रसन्न हुए दोनों को वर दिये। एक को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ दूसरे को पुत्री-रत्न की प्राप्ति हुई। योग्य उम्र होने ही इन दोनों की शादी हो गई। युवक शादी के बाद विध्याध्ययन करके घर वापस आ रहा था। रास्ते में बीच में समुद्रसे भेट हुई वह जामाता को अपने घर ले आया। कुछ दिनों तक वह समुद्रालम रहा। और बाद में ये दोनों पति पत्नी (युवक युवती) अपने घर जाने के लिये निकल पड़े।

किंतु रास्ते में ऐसी घटना घटी कि इन दोनों की तृपत्तुर अवस्थामें मृत्यु हुई। पावतीजी ने भगवान शंकर से प्रार्थना की कि प्रभु इस जोड़ी को जिन्दा कीजिये। तो शंकर भगवान ने कहा कि अब ये लोग कृपा करने के योग्य नहीं हैं। फिर भी पावतीजी ने हठाग्रह धारण किया और उन्हें जिन्दा करवाया।

यौवन के मद में मस्त बने हुए ये भट भटानी एक शिवालय में आये। विषयवासना बढ गई, इसकी तृप्ति करने के लिये देवल में जो शिवजी का लिंग (मूर्ति) था उसको उखाड़कर कहीं बाहर फेंक दिया और अपनी मनोवाञ्छा पूर्ण की। इस अयोग्य और नराधम कृत्यसे भगवान शंकर क्रोधित हो गये और थाप दिया कि तुम्हें सात भव (अवतार) तक वियोग सहना पड़ेगा।

शंकर भगवान का थाप सुनकर ये दोनों काशी में करबट लेने के लिये निकल पड़े। रास्ते में एक गांव आया भट। (युवक) खुराक की तलाश में गया। जब वापस आया तब देखा ता पत्नी का पता नहीं था। अब क्या करे। इसलिये उसने काशी (वाराणसी) जाकर गल पर करबट लगवा दिया और मौत के शरण हो गया।

जब भट खुराक की तलाश में गया था, उस समय वहां एक राजा आया और भटानी का अपहरण कर गया। वह स्त्री रात्रि के समय

चूपचाप राजा के पज में स छुटकर निरल पड़ी । और उगने भी रागी (बनारस) की राह पनड़ी । और गल पर बरबट लगवा दिया । इस लोक को छोड़कर चली गई ।

कहानी दूसरी, चकवा चकवी-किसी एग जगल मे एक पेठ पर एक चकवा और चकवी रहते थे । उनी जगल मे एग बार अचानक अग्नि संचार हा गया । दावाग्नि का भीषण कांड गुरू हो गया । और जिस वक्ष पर ये दोना पछी रहते थ यह वक्ष भी जलने लगा । किंतु दोना का ऐसा लगा कि हमें आश्रय देने वाला वक्ष जल जाय और हम यहाँम भाग छूटें । यह बात ठीक नहीं है । ऐसा विचार करके ये दोनो पछी भी दावाग्नि मे आग के शोलो से जलकर भस्म हो गये मर गये ।

कहानी तीसरी, हिरन और हिरनी को-एक जगल था । वहाँ एक हिरन एव हिरनी रहते थे । ये वन मे घूमते थे और अपना गुजर वमर करने हुये आनन्द मे जीवन व्यतीत करत थ । उस जगल मे एक बार एक पारधी आया उसने हिरनी को फसा दिया, हिरनी ने बहुत मात्र दन किया । हिरनीका आफ दन मुनकर उस शिकारीके मन मे दया उमड पडी । उसने हिरनी को मुपन कर दी । अब तो हिरनी अपने पति हिरण की सोज म निकल पडी । किंतु रास्त मे एक पहाड के पास हिरन को मृत अवस्थामे पाया । हिरनकी मृत्यु देखकर उसने भी अपना शिर पटककर मृत्यु से भेट का । यह भी चल बसी ।

कहानी चौथी, मयूर डेलणी-इस कहानी के बारे मे कुछ लिखा गया प्राण नहीं होता ।

कहानी पाँचवी, हंस और हसी को-हम एव हसी की एक नोड़ी जगल मे रहती थी । उसकी रहने की जगह पर एक बार एक साँप आया । और उनको निगत्र जाने लगा । किंतु दवसजोग से उनके कणपट पर भगवान का नाम सुनाई पडा । दोना की मृत्यु हुई । किंतु इस पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म म (भव म) ये दोनो राजा एव रानी क रूप म अवतरित हुये ।

कहानो छटवी राजा और रानी एक नगर था उसका नाम देवपुर । वहाँ के राजा का नाम था मालवाहन और रानी का था दुमति उनके पुत्र का नाम था बल्लभ ।

एक दूसरा रायपुर नाम का नगर था । वहाँ सुव्रत नाम का राजा था । उसकी गुणवन्ती नाम की एक कन्या थी । उसके पिताने उसका विवाह सबंध किया था बल्लभ के साथ । किंतु उसकी माँ भाई और चाचाजी ने अलग २ स्थान एक अलग २ व्यक्तियों के साथ सगाई कर दी थी । खूनी यह थी कि इन सब रिश्तेदारों ने शादी की तिथि जो निश्चित की थी वह एक ही थी ।

शादी के दिन चारों बर बरात लेकर सजयज के साथ आ गये । राजकुमारी आश्चर्य में पड़ गई । शादी किसके साथ की जाय । क्योंकि यहाँ तो एक के स्थान पर चार चार बर आये हैं । इससे उसके मनमें बहुत दुःख हुआ । अपना जिदगी पर नफरत आयी और वह अग्नि में जल गई । दुनियाँ से विदा ली ।

शादी करने के लिये जो यहाँ चार बर आये थे । उनमें से एक बर ने कुबरी की मृत्यु से अपनी बलि दनी । दूसरा कहीं भाग गया । तीसरे ने उसकी हड्डियाँ की राख गंगाजी में बहा दी । चौथा बल्लभ था उसने उसका पिंडदान दिया और पिंड भक्ष्य करने लगा ।

जो व्यक्ति भागकर दूर देश चला गया था । उसके हाथमें अकस्मात् एक अमृत का घट आ गया । उसको लेकर वह जिस जगह पर राजकुमारी जल गई थी, वहाँ आया । और राख के ढेर पर अमृत का सींचन किया । फलस्वरूप वह राजकुमारी एक उसक साथ जलजानेवाला राजकुमार दानों जीवित हो गये । बाद में चारों के बीच में लड़ाई शुरू हो गई ।

इन लोगों ने इस लड़ाई का फैसला करने के लिये एक पंच चुना । और पंच से याच करने की प्रार्थना की । क्योंकि पंच में परमेश्वर का निवास है । पंच ने सारा हाल सुन लिया । बात में फसला दिया कि

राजकुमारी को जिसने जिन्ना किया है वही उसका पति हुआ। नती में रास बहानेवाला पुत्र हुआ। गु बरीने साथ जलजानवाला तथा उगा साथ फिर जम लेनेवाला उसका भ्राता होगा। और बल्लभ को उगा हतदार पति ठहराया गया। या आखिर में राजकुमारी की शादी बल्लभ के साथ हुई।

विवाह के बाद कुछ समय पश्चात् ये दोनों एक वार एक जंगल में सर करने निकले। वहाँ एक बाघ (शेर) आया। वह राजकुमार का भक्षण कर गया। राजकुमारी उसकी सोंज में घूमनी थी। इनमें वह एक चोर आया उसने इस कुमारी को लूट लिया। उसने सब कुछ ले लिया। इससे दुखित होकर इस स्त्री ने एक कुएं में गिरकर आत्म हत्या कर ली। दूसरे भव में ये दोनों बदर एव बदरी के रूप में अवतरित हुये।

कहानी सातवीं बदर और बदरी एक जंगल में बदर और बदरी रहते थे। वहाँ से एक दिन शिव जी और पावती जी गुजरे। उस समय पावती ने बदर बदरी की जोड़ी देखकर भगवान गकर से पूछा कि उनके सम्बन्ध में क्या बात है। तो शिवजी ने उनके गत जन्म की (भवा की) बातें कह सुनाई। बान मुनकर सती पावती जी ने उनको फिरसे मनुष्यावतार देने के लिये अनुरोध किया। प्रार्थना की। तो भगवान शंकर ने कहा कि 'इस मुहूर्त में यदि यह बदर एव बदरी इस वाव में गिर जाय तो मनुष्य रूप प्राप्त होगा।'

बदरी ने यह बात सुन ली। और पतिदेव बदर को भी अपने साथ इस वाव में गिर जाने को कहा। किंतु बदर ने न माना, बदरी की बात को स्वीकार न किया। बदरी अकेली वाव में गिर पड़ी। तो शिवजी के वरसे (कथनानुसार) यह बदरी एक सुंदर स्त्रीके रूप में पलट गई बदर अब पछताने लगा किंतु अब पछताने से क्या होवे, "जब चिड़िया चुग गई खेत। यह पुण्य क्षण तो अब व्यतीत हो चुकी थी।

३। इसी समय हीरासेन नाम का एक राजा अपने प्रधान के साथ वह

आ पहूचा वहाँ उसने इस रूपसुदरी को देखा । वह प्रसन्न हुआ । और उस सुदरी को रथ में बैठाकर अपने साथ ले चला । व दर धन में फल लेन गया था । वह वापस आ गया । स्त्री को न देखकर वह रथ के पीछे हो गया । रानी राजा से प्रापना की कि इस ब दर को भी साथ में ले चलिये । राजा ने स्वीकार किया । ब दर को भी साथ में ले लिया गया । स्त्री ने छ महीने के बाद राजा के साथ शादी करने का वादा किया ।

राजा नगर में आ गया । राजा ने इस ब दर को सुवर्ण की शृंखला से बांध रखने की व्यवस्था की । राजा की जो एक सम्मानित रानी थी । उससे मिलने के लिये राजा जाता था । किन्तु उस रानी से मिलने में ब दर रुकावट डालता था, रानी से नहीं मिलने देता था । इसलिये उसने रानी के ब दर का घाट घड़ने की युक्ति सोच ली । किसी भी तरह से उसका इलाज खोलना चाहिये । तरकीब की गई ।

उस रानी ने इस ब दर को एक मदारी के हवाले किया । इस कृत्य से रूपसुदरी एवं ब दर दोनों अप्रसन्न हुए, आखिर में रूपसुदरी ने इस मदारी को फिर एक बार आकर अपना तमाशा दिया जाने के लिये कहा ।

छ महा की अवधि बीतने के पहले मदारी वहाँ फिर से आया उसने अपना खेल शुरू कर दिया । इसी बीच में रूपसुदरी ने अपना अमूल्य हार तोड़ दिया । मदारी ने उस हार के मोती (मात्सिक) बीनकर इकट्ठे कर देने के लिये ब दर को मुक्त कर दिया । उस ब दर ने राजा की माननीया रानी से बैर लेने के लिये फलाग लगाई, किन्तु वह निशाना चूक गया और मृत्यु के शरण हो गया । ब दर की मृत्यु होते ही रूपसुदरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये और मर गई ।

ब दर दूसरे भक्त में सदेवत हुआ । सुदरी सावलिगा हुई । शादी की अभिलाषा रखनवाला राजा हीरासेन धारानगरी के पदमशा सेठ के पुत्र रपाशा के रूप में अवतरित हुआ । और प्रधान, लाल ब्रह्मभट्ट हुआ मदारी गोरख साधु हो गया ।

कहानी ८ थी सदयवत्स और सावर्णिगा- ज्ञानिवाहन

नामक एक राजा था उमके पुत्र का नाम सत्यवन्त था । उम नगर के नगरसेठ पदमशाह के सावर्णिगा नाम की सटकी थी । यह रूप का अवार थी । मानो रूपराशि यहाँ सटी हुई हो । उमके रूप लावण्य या सौंदर्य को देखनेवाले मोहित हो जाते पीके भी पट जाने । अपिह सु दरता के कारण उसका नाम राशन हुआ । उमक अनुपम सौन्दर्य की बाते सदयवत्स ने भी सुनी इससे वह उसको दगन के लिये आनुस व्याकुल हो गया था । मन भी अधीर हा गया था ।

एक बार एक गोरख नाम का साधु भिगा के लिये उम नगर के नगरसेठ पदमशाह के घर पर आया । उसने सटकी सावर्णिगा को देखा, और देखकर वह मोह के कारण मूर्छित हो गया । इतन में उसका गुरु भी वहा आ पहुचा । और उसको वहा से ले गया इस गढवडी म सदयवत्स भी वहाँ आ गया । और उसने अपने मित्र लाल बारोट (ब्रह्मभट) से पूछा कि यहा सावर्णिगा कौन है और कहा है ?

ब्रह्मभट लाल ने उत्तर दिया कि अगर सावर्णिगा के दगन करने हैं तो यह काय यहाँ नहीं बनेगा । किंतु एक रास्ता है कि आप उस स्थान पर चले जाइये कि इस नव डेरी पर सावर्णिगा गीत गरबी गाने के लिये जाती है वहाँ आप जावेंगे तो दशन होंगे । सदयवत्स वहाँ पहुच गया । वह स्त्रीमडल के बीचमे जाकर खडा हो गया । और सावर्णिगा के कहा कि “अरी तू तेरे घू घटका ओजल दूर कर दे और तेरा मुखचद्र दिखा दें ।” सब सावर्णिगा ने उत्तर दिया “कि मैं जिस शालामे पढती हू उस शाला मे आना ।”

यद्यपि सदयवत्स सदेवतकी पढाई खत्म हो गई थी । फिर भी पिता-जी से आज्ञा पाकर वह शाला मे गया । किंतु वहाँ मेहत्ताजी के भय से सावर्णिगा ने उसको समझाया कि अगले दिन चपाबाग मे प्रीतिभोज का प्रबन्ध करो । उसमे मेहत्ताजी को भी आमन्त्रण भेज दो

इसमें हम मित्रों और शांति से बातें करने का मौका भी मिल जायगा ।

दूसरे दिन गुरुजी को आमंत्रण भेजा गया । इससे वह चपाबाग में भोजन करने गये और सभी दूबों को निकाल दिया और बाद में इन दोनों ने एकान्त पाकर प्रेम से अनेक बातें कीं । दृष्टि से दृष्टि मिली और बातें करके तृप्त हुए ।

किंतु यह सब प्रेम विषयक बातें गुप्त न रह सकी, प्रकट हो गई । गुरुजी को भी जानकारी प्राप्त हुई तो वे दौड़ते वहाँ आ गये । तब दोनों शर्मिंदे होकर वहाँ से चल दिये और जाते समय निश्चय किया कि दूसरे दिन सदैववत्स गुरुजी के बगीचे की रखवाली करने को जाय और सार्वलिगा गुरुजी की आज्ञा से उसको भोजन देने जाय । निणय के अनुसार सदैववत्स ने गुरुजी से कहा कि आप सार्वलिगा को भोजन देने के लिये आना देने की कृपा कीजिए ताकि आपके बगीचे की रखवाली करनेवाला भूलो न मरे । गुरुजी ने स्वीकृति देदी । और सार्वलिगा को आना दी गयी । तो सार्वलिगा भोजन में बत्तीस प्रकार की सामग्री लेकर वहाँ गयी वहाँ कही गयी थी भान चावल देने की किंतु वह तो भाँति भाँतिके उत्तम खाद्य पदार्थों की सामग्री लेकर गयी । अधिक प्रणयकलह के बाद सदैववत्स एव सार्वलिगा ने भोजन किया । दोनों ने आपस में या परस्पर प्रेम टिकाने का निभाने का वादा किया ।

प्रतिदिन दोनों एक तोते के द्वारा प्रेमपत्र लिखकर परस्पर भेजते हैं । सार्वलिगा के पिता पदमशाह सेंठ ने लडकी की शादी फौरन करने के लिए निश्चय कर दिया । और रूपशाह एक बड़ी बरात लेकर बड़े सजघजके साथ शादी करनेके लिये यहाँ आ भी गया ।

सार्वलिगा ने सदैववत्स से सदेश भेजा कि आप स्त्री का भेष लेकर मेरे महल में आ जाना । सदैववत्स भेष बदल कर वहाँ महलमें आया किंतु वहाँ उसकी लीलावती नाम की ननद आ घमकी । जिससे इन दोनों में बातें न हुईं । इसमें सार्वलिगा ने सदैववत्स से कहा कि रात को भगवान शिवजी के मंदिर में आ जाना । भला यह बात याद रखना । भूल

मत जाना ।

सदेवत की पाटमने नामक एक रानी थी । उसने पति का परस्त्री से दूर रहने के लिए समझाया किंतु वह न माना । और उसने रानी को धमकी दी । भली बुरी मुनाई, रानी चुप हो गई ।

शादी का समय हुआ तो सार्वलिगा ने एक मुक्ति की । दाहण देव को फोड़ दिया गया, प्रणव किया गया । और सार्वलिगा ने अपनी लवि गिया नाम की बेटी को अपने वस्त्राभूषण पहिना दिये और लग्नमंडप में शादी के स्थान चोरी (शादी की बेटी) के सामुख बिठा दी । इस तरह रूपशाह सेठ की शादी उस दासी के साथ हो गई ।

रात को सार्वलिगा रूपशाह सेठ के पास आयी । और घू घट के पट खोल दिया । उसका रूप सौंदर्य देखकर मोहित हो गया, और उसने सार्वलिगा का हाथ पकड़ लिया किंतु सार्वलिगा ने वहाना दिखाया कि मैंने एक शरत की है । प्रणव किया है कि यदि मुझे रूपशाह पति के रूप में प्राप्त होगा तो मैं अकेली आकर 'हे भगवान शिवजी तेरा पूजन करूंगी । बाद में पति से मिलूंगी ।'

सार्वलिगा की बात सुनकर रूपशाह सेठ ने कहा कि रात का समय है और अकेली जाना चाहती हैं यह बात अच्छी और ठीक नहीं है । बहुत समझायी किंतु उसने सार्वलिगा ने नहीं माना । पूजन का थाल लेकर वह अकेली पैदल चलकर भगवान शंकर के मंदिर में आ पहुची । सदेवत भीतर से द्वार बंद करके नगे की खुमारी में नींद ले रहा था । बहुत कोशिश की, किंतु वह किसी प्रकार से जाग्रत नहीं हुआ । इससे सार्वलिगा ने मंदिर पर चढ़कर ऊपर के शिखर को उतारकर मंदिर में प्रवेश किया । और मोह-निद्रा में पड़े हुए उस सदेवत को जाग्रत करने के लिए अनेक प्रयत्न किये । किंतु ये सब प्रयत्न बेकार साबित हुए, निष्फल हुए । बाद में हताश होकर उसने सदेवत की हथेली में समस्या (निम्न-लिखित काव्य पंक्तियाँ) लिखीं । जैसे कि

“कोरे घडें कु वारि वा, जेने खोले आँखाणुनी जार ।

एवा शुक्रने तमो आपशा, तो मलशे सावर्लिगा नार ।

×

×

×

सुणो सदेवतराय, अमल बर्या आकरे ।

हु छु बालकुमार, जाउ छु सासरे ॥”

देह दद और हृदय के दर्द से पीड़ित होकर उतने हथेली में धाव के रूप में काव्य पत्तिया लिखीं। हतोत्साह हुई, और अपने घर पर बापस आ गई। तुरन्त वह पति के साथ पति के देश सिघार गई।

इधर सदेवन नींद से जाग उठा और सावर्लिगा का मिलन न होने से शोधित होकर अपने महल में बापस लौट आया। फिर उसकी रानी पाटमद ने उसको एक बनियेकी कयासे प्रेम करने के कारण कई अयोग्य बातें सुनाई, बहुत कुछ कोसा। महेणें टाणें लगाये। इससे शोधित होकर सदेवत्स ने कड़ी प्रतिज्ञा की कि सावर्लिगा से शादी करके उसको मुखिया रानी महाराणी या पटरानी बनाकर छोड़ूंगा। ऐसा कहकर वह अश्वशालाम पहुंचा। एक अच्छा अश्व लेकर उस पर आहूट होकर अकेला चल दिया।

सदेवत्स सावर्लिगा के नगर के बाहर पहुंचा। उसको तृपा लगी हुई थी। हाथ में काव्य रूपी समस्या लिखी हुई थी उसकी रक्षा करने के हेतु वह हाथ से पानी न पीकर पशु की तरह मुह से पानी पीने लगा। यह देखकर वहाँ की पतिहारियाँ उसकी दिल्लगी करने लगीं कि यह कोई ग वार है क्या?। किंतु वहाँ सावर्लिगा की चेरी तथा उस नगर की राजकुमारी कनकावती उस समय नदी तट पर आयी हुई थी। इन दोनों ने ताढ़ लिया कि यह तो कोई चतुर बुद्धिशाली आत्मी है। राजकुमारी कनकावती तो उसके दर्शन करके इतनी मोहित हो गई कि उसके मनसे निश्चय भी कर लिया कि मैं इस व्यक्ति के साथ शादी करूंगी, अन्य से नहीं।

समुराल में आकर भी सावर्लिगा ने अपने पति के साथ बहाने वाजी

बड़ा दी। और पति से कह दिया कि पीछे आते समय मैंने एक दान दिया है निश्चय दिया है कि यदि मैं गगुराल में गोमकुंगन पहुंच जाऊंगी तो मैं सात दिन तक अपनी शय्यागृह में नहीं रुंगी।

पति रूपगाह न इस बात का सत्य मान लिया। इन घटना में हमारे देश में उस समय समाज में दान मानना के विषय में विद्वानों का विचार भी इसका पता चलता है। विद्वानों का प्राबल्य दान के विषय में हमारे हमें दर्शन होते हैं।

अब तो सत्यवत्स ने एक मालिन को साथ लिया और उगड़ी सहायता में सार्वलिंगा से मिलने का निणय किया। सार्वलिंगा ने मालिन से कहा कि तुम सत्यवत्स को साथ का भेष पहनवा कर मेरे महल में जरूर भेज देना।

अब मालिन उस नगर की राजकुमारी के यहां चल दी। और पहुंची कुमारी के महल में। राजकुमारी कनकावती ने भी मालिन का कुछ लालच दिया। और कहा कि यदि तू मेरी शादी सत्यवत्स के साथ कराने के काम में सहायता प्रदान करेगी तो मैं जिंदगी भरके लिये तूरी ऋणी रहूंगी तेरे उपकार को न भूलूंगी।

मालिन दोनोंके सदेश लेकर सत्यवत्स के पास आयी और राजा सत्यवत्स से कहा कि मैं सार्वलिंगा के साथ आपका मिलान कर दूंगी। विनु साथ ही मैं भी आपसे एक वर चाहती हूँ, सत्यवत्स ने कहा क्या कह दो। मालिन ने कहा कि यदि आप मेरी बात के साथ सहमत होते हैं तो मेरी शर्त यह है कि यहाँ के राजा वीरमदे की राजकुमारी कनकावती है उसके साथ भी शादी करनी पड़ेगी। है यह शर्त मजूर? राजा ने शर्त को स्वीकार कर लिया। हाँ भर ली। क्योंकि उसका मन सार्वलिंगा से मिलने के लिये अधीर हो रहा था। जिसके फलस्वरूप उसने यह शर्त स्वीकार ली।

अब राजकुमारी कनकावती ने दूती मालिन के द्वारा सत्यवत्स के मनोभावा की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। और अपना निश्चय

सदयवत्स के साथ शादी करनेका यह उसने अपने पिता वीरमदेसे सुना । इस बात को राजा ने स्वीकार भी कर ली । साथ ही पितासे सार्वलिगा की सब बातें कह सुनाई । और उनका निश्चय भी बनला दिया । राजा ने इस काय में सहायता देन के लिए हा भर ली ।

अब राजा ने सार्वलिगा की शादी के विषयमे निणय करने के लिए रूपशाह सेठ को अपने पास बुलाया और सारी बातें बतला दी । रूपशाह को भी अब पता चला कि सही रीतिसे उसकी शादी भी सार्वलिगा के साथ नहीं हुई है एक चेरी के साथ हुई है । दूसरा पता यह चला कि सदयवत्स एव सार्वलिगा इन दोनों की परस्पर अत्यन एव हृदय से भी चाह है । ये सारी बातें जानकर उसने सार्वलिगा को सुपुद कर देने की सम्मति देदी । सदेवत को दे देने की भी रूपशाह ने हा मरी । अब राजा वीरमदे ने एक बडा लग्न महोत्सव निश्चित किया और सदेवत के साथ ये दोनों स्त्रिया सार्वलिगा एव कनकावती की शादी कर दी ।

कुछ समय यहा विताकर राजा सदेवत दोनों रानियो को साथ मे लेकर बडे सजधज के साथ अपने देश वापस लौट आया ।

राजा शालिवाहन को पता चला कि पुत्र आ रहा है । यह जानकर वह बडा प्रमन्न हुआ और बडी घूमघाम से लेने के लिए सामने गया ।

सदयवत्स की मा भी उमग म आ गई । उसने भी अपने बेटे को कि जो दो रानियो से शादी करके आया है, पाछ (शादी की विधिके अनुसार) लिय । सदयवत्सने निणयानुसार इन तीनों रानियोमेसे सार्वलिगा को पटरानी के पद पर स्थापित करके प्रण पूण किया । सदयवत्स ने कई वर्षों तक सुख से राजकाज किया । छाया पिया और मौज-मजा तथा शान्ति एव आनन्द मे जीवन व्यतीत किया ।

प्रबन्ध में सामाजिक जीवन-भूपति एव प्रजाजनोंके बीचका सब घ बहुतायत से नगरा म एव राजवानी म भी सदेवर्ताव एव प्रेम भावना से युक्त रहता था । फिर भी राजा की अमाप सत्ता के सामने प्रजाजनों का कुछ बस नही चलता था "राजा किसी का मित्र नहीं "

चीन सुभाषित के अनुसार, गणपतम के पिता प्रभुपुत्र का आचरण या
 नौव बधानक को नया मोड़ देता है। एक दिन पुत्र का पराक्रम पर
 गुष्ट होने वाले पिता दूगरे दिन प्रधान मंत्री के पश्यत्र गिरार बनता
 । स्वयं युवराज-गद पर स्थापित किये गये पुत्र का (रात्र कुमार को)
 ग्य की हृद छोड़कर चले जाने की आशा देते हैं। यदि
 त्वा किसी पर सगुष्ट (प्रसन्न) होता है सब उमों पसाय (स प्रसा)
 ते थे।

राज्य को कायवाही में-अनेक प्रकारके प्रपच एवं पश्यत्र
 की कायवाही चलती थी, यह बात हम प्रधान क पश्यत्र (पृ० १४) की
 कायविधि से ज्ञात होती है। बहुतायत स राजा लोग निष्क्रिय रहते हैं।
 , क्षणगुष्ट एवं क्षण दृष्ट ऐसी राजा की उन्नत भावनायें भी गणना
 पात्र हैं ही। प्रभुवत्स राजा को प्रजाजना ने ज्ञा चीजें प्रदान की थी
 उनका राजा ने स्वीकार भी नहीं किया था। किंतु वापस लौटा दी थी।
 (कडी ३९१)

न्याय देने की पद्धति का दर्शन सद्यवत्स राजा एक
 प्रसंग देता है (पृ ६४) वहाँ होता है। सास करके वानून के चक्कर में
 पड़ने के बजाय सरल समझदारी एवं व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करने
 ही न्याय का फैसला या निणय लिया जाता था।

ह्यौहार या उत्सव प्रसंगपर नगर जनो द्वारा नगर की
 जोसजावट या शुभार बदनवार होता था इसका भी कवि ने सुंदर
 बधान दिया है। (पृ १२ १३)

नगर मे एक ओर जैसे गणिकागृहो की अनिवायता देखने मे
 आती है, वैसे दूसरा ऐसा अनिवाय स्थान छूतस्थान (जू ठाण) प्रख्यात
 गिना जाता था ऐसा हमें पता चलता है (कडी ४०१) छूतस्थान छूत के
 क्षेत्रीय अखाड) राज्य-सम्मत गिने जाते होंगे ऐसा प्रतीत होता है।
 प्रसिद्ध जकारियोंके नाम भी कविने अंकित किये हैं। (कडी ५०९-५१०)

वमें ही प्रसिद्ध वाराणसाओं के नाम भी (कडी ५४२, ५५२) नमबद्ध एक व्यौरवार गिनाये हैं। आधुनिक युग के जिसकी गणना समाजमें होती है और इस समाजमें जितना महत्व का गिना जाता है उतना प्राचीन समय में गणिका एक छूतका स्थान होगा ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

महाजन श्रेष्ठियोंकीसत्ता-नगरों में उनके व्यापार के क्षेत्र में अवाधित रूप में रहती थी। उस समय के प्रचलित श्रेष्ठिया में नामों की जानकारी भी हम प्राप्त होती है। (कडी ५३०, ५३५)

वारहट्ट और ब्रह्मभेट-या चारन का स्थान राजा एक प्रजा के बीच में सयोग जोड़ने वाली ग वला के समान था। किसी भी व्यक्ति के लिये वह प्रतिभू यानी Surety किंवा प्रतिनिधि बन सकता था और वह राजमाय भी गिना जाता था। (पृ० १२) सावलिगा को बहिन (भगिनी) समझकर एक गाव का वारहट्ट कि जिसको राजा ने पसाव (ग्राम) प्रदान किया था और वह उसका उपभोग भी करता था। उसने पाच दिनोंके लिए आश्रय दिया था। यह उसका उदात्त चरित्र उदाहरण नीय जान पड़ता है।

राजा की आज्ञा का पालन करने वाले-तलार औरग (सेवक) उपस्थित रहते थे। (पृ० ८८-८९) द ड के भेदों में शूलि, अ ग-च्छेद एक कारागृहवास जेलखाना इतने भेद जानने समझनेके लिए प्राप्त होते हैं।

आत्महत्या इसके उपरांत स्वेच्छा से लोग से सार असार जानते ही जीवन से तग आकर काशी में जाते थे, और वहाँ करवट लगवाकर जीवन समाप्त करते थे। इसके द्वारा समाज की पूर्वजन्मके प्रति कितनी अदग अदा रहती थी इसका हमें दगन होता है। मालवा प्रदेश में शिक्षा के रूप में किमी धातु या सिक्का गरम करके निशानी कर दी जाती थी ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

॥ ५ ॥ अनामिकायास्तथासौ चोत्तमस्य ॥ अस्तस्य दस ज्ञः । अस्ति त्रिसासं सत्त्वमादेवगे
 दावन्नदत्राजायासासा विष्कसावेकारानमहारा ॥ अथादस्तीयुशिसामस्मान्दुपराण ॥ सर-
 अरकयणिविद्वत् ॥ सात्रलागोवाणा ॥ एयपणसविशुययमगमुप्रमरे ॥ यद्यपमबिनदरासावय
 मुदकरणा ॥ अमुदे अवरणा ॥ कुनुहिसिदि ॥ दायकागुगानाथक्यदमयगामसु ॥ अयमल्ल
 यत्किरि कवियणसरसमुअच्छाउरवे ॥ धयशागल्लुद्वृत्तिसिद्य ॥ कारुहृदलजाश्रि
 णिजाशि ॥ अशिराद्वास्यकरुणासादा ॥ वीरात्तयातवीताबा ॥ एतावन्नददरकि
 इमुअपिउदयस्साम्प्रथयामात्स्य ॥ दससद्वारिनदरज्जणिअपापम् ॥ यउ
 एजवन्नारिदनारिवज्जलद्विद्वितमतिद्वसु ॥ ययुदयऊमारसवत्तरममकिनता ॥ सादासि
 जसिप्यरसिपिसिवाज्ञागत्यतर्नुअरत्वाशिवन्नणिशिवसायासादकररथरातिवीरजिविबुधाइ
 मन्तणिइत्तमत्तमुयाराअणिज्जालदरकिदीयरत्तयो ॥ ६ ॥ अज्जणिअयणिअओनदन्दरतयरस
 यत्तस्थाराताणिअह्यज्जवत्ता ॥ पञ्चयइरएअथा ॥ ७ ॥ ताणिइन्थरिएकशिवसोविष्पासिज्ञा

आदि पृष्ठ । सदयवत्स वीरप्रद ध । त्विपि सवत नही है । प्राचय विद्या मधिर, बडोदा ।

कवि भीम विरचित

श्री सद्यवत्सवीर प्रबंध'

ॐ नम । श्री शारदाय २ नमः । श्री सदगुरुभ्यो नम ।

[मन्नाचरण]

(गाहा)

माई महामाई-मज्जे, बावन्न वन्न जो सारो ।
सो बिदु ओकारो, स ओकारो नमस्कारो ॥ १ ॥
जिए रचीय आगम निगम, पुराण सर अक्खराण वित्थारो ।
सा ब्रह्माणी वाणी, पय^१ पणमवि सुपय मग्गेसु ॥ २ ॥
गयवण गवरीनदण, सेवइ सुहकरण असुह भवहरणो ।
बहु बुद्धि^२ सिद्धिदायक, गणनायक पढम पणमेसु ॥ ३ ॥
गुरु लहुयजि केविकवियण, सरस-सुअत्थ सुच्छद-वधयरा ।
एकत्थ^३ ताण सब्बे, करजुअल जोडि पणमामि ॥ ४ ॥

[भव रसात्मक सद्यवत्स प्रबंध]

सिगार हास करुणा, रुदो वीरो भयाण वीभच्छी ।
अदभूत सत्त नवइ रसि, जसु जपिसु^४ सद्यवच्छस्स ॥५॥

१ 'सुदयवत्सवीर चरित्र' अ, 'सुदयवच्छुपइप्रबंध' या २ 'बीव-
शाशय नम' या ३ 'पय पूजवि हूँय मग्गेसु' या ४ 'लधि', 'वधि'
या ५ 'एकत वाणि सब्बे', या ६ 'वपिस', या

[घटयपुपार परिचय]

(छन्द)

मालवदेस-मज्झारि, नयरि ऊजेणि अणोपम^१ ।
पहु पहुवच्छ नरिद, नारि^२ बहु लच्छि लच्छि-सम ॥
तिह सुअ सदयकुमार, सबल सामलि भत्तारह ।
साहसि^३ पवर प्रसिद्ध, जय जगि जयत जूआरह ॥
खित्ततणि^४ खित्तीय सोहकर, रायरीति धीर^५ जि विबुध ।
इम^६ भणइ भीम तस गुण धुणिमु, जो हरसिद्धि वर लवध ॥६॥

[उज्जयिनी नृप प्रभुवत्स]

(गाहा)

ऊजेणि अवरणि-मज्झे, नयरीवर^७ नयर सयल-सिगारो ।
तेणि पहु पहुवच्छो, पत्थतह पूरण अत्यो ॥७॥

[नगरी निवासी ज्योतिषो दिप्र]

तिणि नयरि एक निवसइ विप्पो विज्जा निहाण चउवेई^८ ।
जोइत्तिव कला-कुसलो, निद्धण कणवित्तियाजीवी ॥८॥
तस घरणि इक्क अवसरि, अखय मत कत एक तस्स ।
“पिय ! पहुवच्छ नराहिव, पच्छसे^९ पत्थि हो पत्थि” ॥९॥
मनि घरवि घरणि वयण, विप्पो सपत्त^{१०} राय अत्थाण ।
सेई अक्खय करपत्त, आसीय वयण पयासिय तस्स^{११} ॥१०॥

१ 'निहरम' मा २ महिला मा, 'बहुवच्छि' म ३ 'साहसि
जधि' म ४ 'खित्ततणइ खित्तीय' मा ५ 'कीरति विबुर नर' मा
६ 'कवि भाग तासु गुण बसवइ, जा हरसिद्धि लवधवर' मा ७ 'नारीवर'
मा ८ 'चउवेपो' म ९ 'पच्छमे पत्थि हो पत्थि' म १० 'उपपन्न' म
११ 'मप्याणो' मा

[आशीष वचनाथ राजसभा-गमन]

(दूहा)

विष्प^१ सुविज्जउ ऊनखिउ, कीउ पहुवच्छि^२ प्रणाम ।
आदरि आसण अण्पीउ, ' कहिन^३ देव । कुण ठाम ?' ॥११॥

(छद पद्यों)

पहु^४ प्रच्छइ जपइ विप्पराउ
सुणि^५ नरवर । अम्ह ऊजेणि ठउ" ।
"दिन एता दिट्ठि न दिट्ठ देव ।
त काई कारण ? कहिन हेव" ॥१२॥

"जा लगइ कुकम्म-वसि हुइ कोई,
ता सुपरिस्-तरिमी भेट न होइ ।
जब टलिउ देव । दारिदनु भाउ,
तव पामिउ मइ पहुवच्छ राउ" ॥१३॥

[भ्रमुवरस वचन]

(दूहा)

विष्प-अण्णि^६ राउ रजिउ पूछइ वलीअ विगत्ति ।
"कवण कना गुण तू^७ अ तरणइ? कवण तुज्जक^८ कुल वित्ति ?" ॥१४॥

[विप्र वचन]

(वस्तु)

विष्प जपइ, विष्प जपइ "निसुणि नरनाह ।
जयवती ज्योतिप कना, कुलकम्मि अम्ह अच्छइ अग्गइ ।

१ 'पहुणा' आ २ 'सविजउ' आ ३ 'कहिन' आ ४ 'पहु
पूछिउ' आ ५ 'सणि' आ. ६ 'काइ' आ ७ 'तदुम' आ ८ 'गुन' आ
९ 'वित्ति' आ

बस्तारज^१ संवत्सर, गृह जन्म गवि विधि सम्पन्न ॥
 जं गुरुरादि जं गरुणुणि, जं जं दृढ पापानि^२ ।
 भरवर^३ इति मन्दिर पित्रु, तं जाणू त्रिणि वानि ॥१५॥

(इरा)

विष्य तागाद घाति यद वारणि, यगित राउ मति रोग ।

[पञ्चमस्य वचन]

"ज यमण^४ । गू^५ वरमित, तं^६ जाणिगु गू घ जोग^७ " ॥१६॥

त्रिणि^८ घयसरि भग्नानि रठित, गति गज्जइ गजराउ ।

[षोडश ज्ञान परीक्षा । गजराज अयपगन धामु प्ररा]

"अयवतु^९ जयमंगलद, एह वहि, वेतू^{१०} घाउ^{११} " ॥१७॥

मगा सेई^{१२} तव तागिणि, वहिय सडी वरि भक्ति ।

[सप्तमस्य वचन]

"जइ पूछिसि पढुयच्छ पढु, मरइ ति कु जर वल्लि " ॥१८॥

यभणु-वेरइ बोलइइ, राउ यमत्किउ चिति ।

"जउ कु जर वल्लि नवि मरइ, तउ तू भ वहि, वुण गति ॥१९॥

धागइ एक अणजाणता तइ यद बोलिउ बोल ।

धा तिहै पाहिइ अधिक, जाणइ निरम निटोल" ॥२०॥

विष्य भणइ "नरवर^{१३} । निमुणि, देव महु छि घनत ।

वे जयमगल हत्यीउ, तेअ यिइ दिणि घत ॥२१॥

१ 'वरतक' भा २ 'वेयास' भा ३ 'तइ घ ४ 'सिउ जाणिस तु
 बोस' भा ५ 'तीणि' भा ६ 'वइवतु' भा ७ 'कि' भा ८ 'विहउ
 बहुत तीणई' भा , 'स' भा ।

चिह्नं दिसि चिह्नं थम्मे सरिस, जइ बहु वर्धाण बद्ध ।
तोइ वि प्रुहरे [वभण भणइ] "चल्लइ मत्त मदघ ॥२२॥

गरुअ गुफा भल भुहिरइ, चिह्नं पक्खे पुत्तार ।
इम रक्खतइ राय । सुणि, वि पुहरि मडइ मार" ॥२३॥

[प्रभुवत्त नृप कोप कथन]

(वस्तु)

राउ जपइ राउ जपइ "वयण निमुणि^१ विप्प ।
मुक्क परतया पुव्व लगाइ, अधिक उच्च बोलइ स वाह ।
अलीअ न चल्लइ अम्ह-तणइ, सच्च होइ तुह कज्ज सारु ।
जउ वभण । वि-पुहर-समइ, मत्त न मोडइ खम ।
तउ तू^२ आगा तिलयनइ ठामि दिवारिसु^३ डम ॥२४॥

(चउपई)

"जउ जोसी । तू ज्योतिप साच, तउ थिर थापउ माहरो वाच ।"
[फेलादेण मिम्या करणोपाय]

इम बोली तुरी पाठविउ, राइ गज राखण आठविउ ॥२५॥

एकि भणइ "ए वाभण^४ बूड", एकि भणइ "ए^५ काचउ कूड"
एकि भणइ "ए पडिउ अपाइ किम छूटेसिइ राखिउ राइ ?" ॥२६॥

गज-पाखलि पायक सइ पच, ते^६ पुत्तारि मुणइ प्रपच ।
तीह आपी आकुस नइ आर, राइ^७ मेल्लघा राखणहार ॥२७॥

मत्ता-पाखलि पुहरा पडइ, एकि आकुस लेई ऊपरि चडइ ।
इणइ^८ परि राखिउ सघली राति, पुहतउ तिहा पहुवच्च प्रभाति ॥२८॥

१ 'निमुणि वर विप्प' आ २ 'तल तणइ' अ ३ 'दिवारिसु' अ ४ 'पूठ'
अ ५ 'कीघउ' आ, ६ 'जे' अ 'कुणइ प्रपच' अ ७ 'घूणी घरा पाडघा पुत्ताह'
आ ८ 'इम इधु गज' आ

[विशेष गज रक्षण प्रबंध]

१. धली अधिवि बधाविउ बधि, सवा भार लोह-सकन कधि ।
नवि सलसली सकइ थिउ ठामि, किरि^१ चित्र कि लिखिउ
चित्रामि । ॥२६॥

राई^२ तइ तेडया पु तार, "रे । रुडि-परि करिज्यो सार ।
गाढा थई रासउ^३ गजराज, वाभणि वि पुहर लहिणा आज" ॥३०॥

[उच्छृङ्खल गज गमन]

इम करता सिरि आविउ सूर, गज चालिउ पावरिमनू पूर ।
घाइ घसइ अनइ घडहडइ, किरि आसाढि अवर गडगडइ ॥३१॥
त्रोडी सकल मोडया खभ, चुहुटइ चालिउ गहआरभ ।
नवि लेखइ^४ आकुस नइ आर धूणो घरा^५ पाडया पु तार ॥३२॥

[उमत्त गज पथ विहार परिणाम]

गजि चउहटइ जई मडिउ गाह, पान-तणा सवि लाख्या लाह ।
फूल तणा तिहा पूर्या पगर, मइगलि माथइ कीघउ नगर ॥३३॥
पुहुतउ श्रेणि सुगधी-तणी, राज वस्त मेनी रेवणी ।
लाखइ केसर अनइ कपूर, वास्या तेल बहाव्या पूर ॥३४॥

[नीर-सभ्रम]

तीणइ दोठइ दोसी दडवडइ, पारिखिने पगि पीडी चडइ ।
फडीआ फोफनीआ सोनार,^६ नाठा लाक न जाणइ सार ॥३५॥
हाट माहि थिउ हानकनील, किरि कमलापति करइ कलोल ।
पौता लाख्या पारिखि-तणा, कापडि सरिस किरिआणा घणा ॥३६॥

१ 'जाणे गज लखीउ चित्रामि' या २ 'राज्यो' या ३ 'मानव'
या ४ 'परि' या ५ 'सूनार' या

एकि अटालि मालि गढि चडइ, एकि पात्ररि दह दिसि दडवडइ ।
 एकि^१ छावडा अछइ छडछोक, ते सौकिइ^२ -ध्या लूसइ लोक ॥३७॥
 गिउ गयद सुर-हटनी वाट, तिहा^३ मदिराना दीठा माट ।
 मधु महुअडा द्रवणि जस द्राख, ते गजवरि आरोग्या लाख^४ ॥३८॥
 प्रागइ पचायण पावरिउ, प्रागइ पन्नग पसावरिउ ।
 प्रागइ गज अ गि जमदूत, बली वाहणी भावि थिउ भूत ॥३९॥
 पु डाहल पूरइ परचड, दतूसल जाणे जमदड ।
 पाडइ विसमा पोलि प्रामाद, नर नारिनु^५ ऊतारइ नाद ॥४०॥

[गजनियत्रणे नपागमन]

राउ असवार थई थिउ^६ केडि "जे भड भला ते वहिना तेडि ।
 जे प्राणी बघइ^७ गज ठामि, तेहनइ आपू गाम अनामि ॥४१॥
 प्रापउ अ ग-तणउ शृ गार, आपू एकाउनिउ हार ।
 प्रापू अधिक बली पसाउ, जे बलीउ बघइ गजराउ' ॥४२॥
 एकि भणइ 'आघो थाईइ', एकि भणइ 'जमपुरि-जाईइ' ।
 एकि भणइ वरि रुसइ राउ, सरसिइ^८ एहना पखइ पसाउ' ॥ ५

[शाहण मीमतिनी गृहागमन प्रसंग]

नव^९ बारहि गयर ऊजेणि, नितु नव नवा महोत्सव तेणि ।
 बभण एक तणइ तिणिवार, आघरणि अबसरि जयकार ॥४४॥
 गयगामिणी धवल-धुणि करइ, वाह विष्य वेअ उरचरइ ।
 मस्तकि मेघाडवर छत्र, वाजइ पञ्च शबद वाजिन ॥४५॥
 भरोय सेसि सइ हथिइ भाई, पीहरि—थी पस पूरइ जाई ।

१ 'जे छा छडा पनइ छड छोक' भा २ 'पाछलि' भा ३ 'मन्त्रि-
 पूर्वा' भा ४ 'राय' भा ५ 'नवनरिद' भा ६ 'त्रिउ' भा ७ 'बघइ
 बलीउ' भा ८ 'हडिसिइ' भा ९ 'नव बाहरि' भा

[पर्यशकुन परम्परा]

जा^१ घडि चालइ पहिलइ पाइ, ता आडो उत्तरइ बिलाइ ॥४६॥

सडको खूली चानो घाट, जानो वाडि बिलागू घाट ।

जा^२ घाटइ विच्छोडो वाडि, ता तरु-मइ नी छीकी बिलाडि ॥४७॥

पग खचीनइ पाछी बलीइ, सूकइ काठि काग किलगिलइ ।

घनइ अनेरा हई असुण, तिहना कारण जाणइ कुण ? ॥४८॥

एकि भणइ 'एह पडिसि आभ',^३ एकि भणइ एह गलिसिइ गाम ।

एकि भणइ 'एह हवडा हाणि, एह असुण तणइ परमाणि' ॥४९॥

[गजराज कृत सीमन्तिनी प्राह]

गजर सुणी गज तिहा थउ बलिउ, पेखणहार लोक सहु पलिउ ।

सगू सणीजू गिउ सहू वही, विप्र-घरणि^४ गयवारि अही । ॥५०॥

इम साही सु डिहि कडि यत्रि, जाणे लाठि^५ लगाडी यत्रि ।

नवि मेहल्हइ नवि मारइ मत, पेखइ राइ राणा राउत्त^६ ॥५१॥

[सीमन्तिनी-पठित्त मोक्ष-व्याख्या]

(छन्द पदवी)

एव आविउ घाइउ^७ ति नारी-भरतार,

बु वारव उभण करइ अपार ।

'को सुभट शूर साहसिक गुद'^८

को धीर वीर वसह विगुद ? ॥५१॥

कोइ जाइउ चउदिसि चपल अ ग ?

को अकल अटल आहवि अहग ? ।

१ 'द्वेदि वीतइ' या 'आगवि' या २ 'जा घाटक कु व डीको
वाडि ता न रमइका छीक निनाडि' या ३ 'पडिसि' या ४ 'नादि
चरणारि' या ५ 'साठि' या ६ 'सामत' या ७ 'तिहि' या ८ 'सिद्ध' या

काइ खित्तीअ खल-बडण समत्य ?

को अंछइ छयल्ल खिति खगहत्थ ?” ॥५३॥

[मार्गे कुमाए सन्यवत्सागमन]

इम करतउ जउ जुवटइ जाइ,

पूछिउ^१ ताम पहुवच्छ-जाइ ।

[सन्यवत्स वचन]

“देव !^२ दया कर, कुण दूहवइ तुज्झ ?

थिर थइ भिइ-कारण कहिन मुज्झ ॥५४॥”

कुणि भारिउ ? डारिउ ? हरिउ रिद्धि^३ ?

कुणि लूसिउ ? लीघउ ? तू कहिन सिद्धि ?^४”

[विप्र रक्षण-याचना]

तीणि वयणि विप्प गोअं^५ विहलमुच्छ,

“करि वाहर स्वामी सदयवच्छ । ॥५५॥

(दूहा)

आघरणि अवसरि घरणि, आवती आवासि ।

मारणि अबला एकली, पढी महागज-पासि ॥५६॥

जम-मुहि किस्सू^६ जीवीइ ? , चतुर ! विमासिन चित्ति ।

सदयवच्छ ! सा वभिणी, मारीय हुसिइ मत्ति ।” ॥५७॥

[शीर सदयवच्छ भक्तगजाक्रमण]

(छंद पदढी)

तव धायो धू वड धसमसत,

किरि आवइ केसरि करि^७ कसत ।

१ 'तिहा पूछीय' या २ 'देव देव म करि' या ३ 'भरवि'
या ४ 'बयु बुहम पुञ्ज' या ५ 'केतू' या ६ 'कसकसत' या

बर्बरीय भटि मलननि^१ भानि,
कानि-मु^२ चोर पु मृगुटि भानि । ॥६८॥

मयमत^३ रत्तू जव दिट्टु दिट्टु,
तव भगिगर कट्टविवि विट्टु मुट्टु ।

मुट्टि मंडवि हविउ मयन हरिव,
गाहनीय^४ मुमट्टु मु दर मगगिय ॥६९॥

नवि मेत्तुद तारिय मू टि भगि,
दतूसान तोगवि यविउ भगि ।

इम एणुउ वरट्टि गरिगालि पधि,
जिम मूटि^५ सोगि गिउ थयण सधि ॥७०॥

(तव वेदाळ एवतापी)

राइ बोलाव्या मूह, जे भट्ट गय पड राट्टति ।
तेहू पातलि परिभमइ, नवि वारण मुट्टि मड ति ॥६१॥
भेगल भट्टालउ ए, गवि जाणइ पवरिस-मार ।
ध कुसि सरिसा भवगणी घूणी घर पाडया पुतार ॥६२॥

[सद्यवस्त वृत्त हकित निग्रह]

सदयवच्छ सूष सही, जीणइ बनीइ वमण-नारि ।
मेल्हावी हणी हायीउ, जग पेसइ जइ जयत जूमारि ॥६३॥

(छड पढबी)

गडभडिउ गयद कि पडयउ पुहव्व,
सुर अ तरिविस्स वेक्खिइ धपूव्व ।

१ मलकइ कवालि' ध २ 'मलकलिउ वटाणु, पिउ मृगुटि भानि'
ध ३ 'मयमतउ अद नयणि दिट्टु' धा ४ 'गाहनीय सू' धा
५ 'मू टि' धा ६ ट्टु क ६१ धी ६३ धा प्रति मां नयी ।

'जय जय' शब्द जपइ जगता,
पहुवच्छ पुता^१ पेखइ चरित्त ॥६४॥

[सोमगिनी प्राणजय आनद]

(चउपई)

ते वभण तेडिउ^२ तिणिवार, युवति समोपी किद्ध जुहार^३ ।
वभण घरि विमणउ^४ उच्छाह, 'सुद्' सुद् ' करइ^५ नरनाह ॥६५॥

[प्रभुवत्स-दत्ता ध-धवाद्]

लाजतइ जई किद्ध जुहार, राइ आलिगण दिद्ध अपार ।
वापिइ वेटउ वाहि घरिउ, राउ राजभवनि सचरिउ ॥६६॥
घारहट्ट वोलइ तिणि वार, सदयवत्स न सहइ कईवार ।
भाटइ भेद परीठिउ इसिउ "पशु मारइ पुरपारथ किसिउ" ॥६७॥

(छद तोटक)

मइमत्त कि भारिय लज्ज रयउ,
शर टकीय सुदर शल्ल विगयउ ।
गयमजण ! लज्जजइ रि किमइ ?
किम किज्जय सद् सुसमर तिमइ ? * ॥ ६८ ॥

(गाहा)

पोढा करीय पहारो, मेनावइ मुच्छ मोडए मूढो ।
साहसीअ सदयवच्छो, लज्जरिउ मारि मयमतो ॥६९॥

१ 'भवरिउ पेखइ पुता' घ २ 'तेढाव्यु ठाम' घा ३ 'प्रणाम
घा ४ 'मनिई' घा ५ 'सूदा माद'घा - 'रीछयउ' घा ७ टूक ६४
घा प्रति० घा नथो

[सद्यवत्स युवराज-पद्याभिवेक]

(चतुर्थ)

ते महरत ते मगलाचार^१, सेसि भराव्यउ सदयकुमार ।
राउ अप्पइ राणि मनइ राज,सूदउ भणइ 'न राजिइ काज'॥७०॥
घरि घरि तलीया तोरण बहू, ऊजेणी आणघउ सहू ।
हऊउ हग्गिप राजा मनि घणउ, पेखि पवाडउ सूदा-तणउ ॥७१॥

[सद्यवत्स विनय वचन]

“तुम्हि जगि जयवता^२ हुया देव^३, करिसु सदा हूँ तथा पय-सेव
नयरि^४ निचि^५ न रमू निशिदोस, तथा पसाइ पहुवच्छ पहीसा ॥७२॥
रमू भमू जाऊ जुवटइ चूरि^६ चाचरि खेलू घउवटइ ।
सुहडपणानी लोला फिरू, अधिपतिपणू न अ गी करू ॥७३॥
जिहा जिहा रामति हासा होड, जिहा जिहा कला कुतूहल कोड ।
जोवा जाऊ तीणइ ठामि, ईणइ सवटि पाडि^७ म स्वामि ॥७४॥
राज-काजि एक वधव बाप, मारइ पुख्य न बीहइ पाप ।
लीलावत-तणइ मनि लाज, [सूदउ भणइ] न राजिइ काज' ॥७५॥

[प्रभुवत्स प्रसाद]

आपिउ एकाउलिनउ हार, आपिउ अ ग तणउ श्रु गार ।
आपिउ आसण-तणउ तुरग, राजा अ गि^८ न माइ रग ॥७६॥
ते वभण तेडाविउ ताम, प्रति ऊठीनइ^९ किद्ध प्रणाम ।
आपिउ वासि वसंतू गाम, बहु^९ अरथ नइ अ बर द्राम ॥ ७७ ॥

१ 'मगलवार' या २ 'जइवइवता देव' या ३ 'निरतर' या
४ 'चरि' या 'निग्र' या ५ 'णउ काइ' या ६ 'रिदइ' या ७ 'राज'
८ 'प' या ९ 'अरथ सरीसु अ बर द्राम' या

बभ्रणनइ घरि भागी भूख, नाठू दुरीय-सरीसू दूख ।
महाराजि जउ दीघउ मान, लोक भाहि तीणइ 'वाघिउ'वान ॥७८॥

(दूहा)

बघी३ तलीया तोरणह, गूडीय वध्नरवालि ।
दीसइ दीवाली-तरणा,^३ उच्छव हई^४ भ्रगालि ॥७९॥

एच शब्द निनाद^५ रसि, वढावी बाजति ।
पड-सई^६ पूरी भुवण, गयणगण गज्जति ॥८०॥

विष्प वेभ्र धुणि उच्चरइ, करइ सुकवि कइवार ।
रायगणि राजा-तरणइ, मिलिया मगणहार ॥८१॥

वर मडपि मडीय गजर, वज्जइ मधुर मृदग ।
*रागरग गायण गमक, नच्चइ नाचिणि चग ॥८२॥

किहि कण्ठ किहि दिइ कणाय, किहि केकाण कच्छाहि ।
घन देयंतो^८ किलकिलइ, पढुवच्छ मन माहि ॥८३॥

*घासीस दिइ बहिनर बहू, मा भनि रग रसाल ।
भरीय सेसि सइ हथि-सिउ^९, वढावइ वर बाल ॥८४॥

(चरणई)

मणि माणिक मुत्ताहल-हार, *कापड-करण कपूर अपार ।
विवहारीए वधावू किद्ध, राजा किहिनु काईअ न लिद्ध ॥८५॥

१ 'तु'षा २ 'लाणउ भ ३ 'घरिघरि भ ४ 'दापाछव' घा
५ 'मपरि' भ ६ निरदह घरि' घा ७ स्पडिछदे रागरगि भानडिकरइ,
नाचइ पात्र मुरग' घा ८ वेवतु' घा ९ बहिन करइ ऊपारणा,
मा पनि घा १० 'हीर चीर सोवन शृंगार' भा

[चण्यवरम रामान मप्रसन्न प्रथा]

सदयवच्छन्तु गुरणी वृत्तत, मुदुतानइ^१ धरि चइठउ मंत्र ।

“राउ आपता न लीधू राउ , भूप जमलउ थिउ युवराज ॥५६॥

पान थिउउ इहनइ सिरि भार, राजा आरोपिसिइ अपार ।

नहुडपणा लगइ लक्षण सार आइ जूठउ अनइ जुप्रार ॥५७॥

जे माणस एहनइ नितु नमइ ते माणस एहाइ मनि गमइ ।

जे माणस आगइ एहना सरसिइ काज रावि तेहना ॥५८॥

आज थिवी^१ हिव एहनी आग आज थिकउ एहनउ बोसास ।

आज थिकउ राजा मनि एह आज थिकउ हिव^५ अन्हनइ छेहा ॥५९॥

आगइ इह सिउ नवि मुक्क रग, जे मइ जीव^१ विणासिउ रग^७

अरथ-त्तगउ अति कीधु लोभ, सगै सरणीजे^९ न रही शोभ ॥६०॥

[प्रधानवृत्त यवराज विद्व पड्यत्र]

हिय ते काई करउ उपाउ, जीणइ^१ एहनइ रूसइ राउ ।

इमिउ अरुख पाडउ रेस, कइ मारइ कइ काढइ देस ॥६१॥

कुट्ट तणू^१ साभलिउ कहिउ, मुदुतइ सोइ जि कयन^{११} सप्रहिउ ।

मति-पयहपणू तउ आज, जउ हू कालि कढावू राज ॥६२॥

[प्रधानवृत्त भेद प्रपचारभ]

तउ परधानि माडिउ परपच, उडद अणाव्या पाली पच ।

सा-कइ अरक^{१३} आयमणी दार^{१३} वीर कधावू लेई^{१५} तीणि वारा ॥६३॥

१ महितानइ^१ आ २ 'तु हू जमलि' म ३ 'पछी' सा
४ राज मनि आ ५ 'एहनइ नही मू ग' आ ६ 'जान' आ ७ 'रग'
आ ८ 'माहि' आ ९ 'जिम हिव' आ १० 'कुदुम्बि इत्यु विमासी'
आ ११ 'यण' आ १२ मूर' आ १३ 'वार' आ १४ 'वरइ' आ

घापणि कीघउ कालउ शृ गार, कालउ अ ग-तणउ आकार ।
 काला कापड कीघा भेटि, तउ राजा घण पइठउ पेटि ॥६४॥
 रा एकति मति लेई गउ, "काइ प्रधान काल मूहुअ थिउ ? ।
 एता सघलू ताहरू राज, नवू ति काई कारण आज ?" ॥६५॥
 बाणइ कामण मोहण कूड, जाणइ बुद्धि बोलतउ बूड ।
 बाणइ अ ग तणउ १अनुराग, २वातइ ततक्षिणि लेई ताग ॥६६॥

[पत्री वचन]

'नही उच्छव तम्ह घरि तेतलउ, वइरी घरि होसिइ जेतलउ ।
 'जयमगल' मारिउ' महाराज', इसिउ वधामणु छाजइ आज ? ॥६७॥
 मदि 'आव्या छूटइ मयमत्त, रोसि चड्या ते हीडइ रत्त ।
 आइ उपायि, वली घराइ, इम अजुगतिइ"न आलि मराइ । ६८॥
 जाम पसाइ दमिया देस, जास पसाइ नमइ नरेस ।
 जाम पमाइ दोहिलउ दुग्ग, लीधी पोलि त्रिभोगन' भग्ग ॥६९॥
 जीणइ तात । तम्हे' लिउ दड दमिय देस लीजइ' सवि खड ।
 ते उनग आवइ अहिठारि', जे जीता जयमगल प्राणि ॥१००॥
 मदि आविउ करि सारइ काज, वइरी-तणा विध्वसइ राज ।
 पाडइ विसमा पोलि पगार, प्राण-तणउ नवि जाणइ' सारा ॥१०१॥
 ऐरावण सुणीइ इद्र-नइ, जयमगल हूँतउ तुम्ह-तणइ ।
 श्रीजउ कोइ न त्रिभुवनि कन्हइ, प्रापति पाखइ' न रहिवा लहइ ॥१०२॥

१ 'आवार अ २ 'वात वरतु बोलइ मारि' अ । ३ 'मइ
 मइगल' अ ४ 'मन्दिर' अ ५ 'अजुगतउ अ ६ 'ति आ ७ 'तु महारउ
 पड अ ८ 'लीजता दड' अ ९ 'अप्पाणि आ १० 'लामइ पार' अ,
 ११ 'विण किम सहिवा लहइ ?' अ

अम्मूलिक चिता खण, जउ करि चडइ सुरक ।
ता धरि कित्तउ ते रहइ ?, जित्तउ वीय मयक" ॥१०३॥

[भासकित्त राजा चित्त]

(चउपई)

मुहूतई मत्र भार जउ भणित्त, तीणि राजा-भन धारित्त घुणित्त ॥
न सहि कोई नीसासा फूक, जाणे पूरव पूरित्त डंक ॥१०४॥

जे बहु नेह धरतउ बाप, ते माचु तीणइ कीधु साप ।
रोस चडावित्त सघली राति, पुहुतु तिहा पट्टवन्ध्य प्रभाति ॥१०५॥

[रोपपूण प्रमुवत्स]

फूकी घमी घमावित्त एम २ जिम ते ततक्षणि चूटई^१ प्रेम ।
बूड^४ बोसंत^३ आवित्त वधि, सूदा-सरसी पाढी सधि ॥१०६॥

[स्वस्ववत्स माता वचन]

थित्त भवसर ऊलगनु जाम, माइ बेटउ बोलाभ्यउ ताम ।
'सूदा ! सुप्रभातनी वार, जई राजा प्रति^२ वर जुहार" ॥१०७॥

[क्रुद्ध पिता मुल-दशन]

माता-वयणि सभागित्त मुह, ता राजा-मुनि^१ दोट्टउ रउह ।
सिर नामना बोनिउ राड^४, हासा मिसिइ भागा^५ हाड^६ ॥१०८॥
नीच नइ न-पाणीउ कूउ तिह ऊपरि ढालइ दीवूउ ।
वार वार पय^७ करइ प्रणाम नीर-नगू नीठाडइ^८ १^९ ठाम ॥१०९॥

१ 'पाछइ बोलावित्त वरभाति घ २ 'इम घ ३ 'नोडइ तीज'
घ ४ 'बूड' घ ५ 'राधानइ कणइ घ ६ 'मनि' घा ७ 'साह' घा
८ 'भवइ' घा ९ 'माहिउ' घा १० 'सिदि' घा ११ 'नीवाउइ' घा, घ

(गाहा)

मा जाणिमि खन नमीय, जोहा जपइ अमीय-सा वयण ।
ढीङ्' कूप विलगो, पय लगवि, सोमए जोय ॥११०॥

(चउपई)

जे आकारइ ऊनखइ अ ग भमहि-तणउ जे वूभइ भग ।
स्ते नर बालिउ ^३वूभइ इसिउ, एह वातनू^४अचरिज किसिउ ॥१११॥
वोर विचारी जाइउ सत्प, भमहि भावि ऊनखिउ भूप ।
कुमर ततशणि विमासइ चिति, किमी कहीइ ज उत्तम रीति? ॥११२॥

(षडपल्ल)*

जिम जिम केसरि पइ ऊहटइ, जिम जिम विसहर नूली वटइ ।
दीन वयण जिम जपइ सूरु, देमि देसि कीघह बहु पूरु ॥११३॥

[सत्पवत्स पिता-वदन]

अणवोनिइ ऊठिउ कू आर, जातइ "नरवर किद्ध जुहार ।
वारु लोक विमासण भरिउ, शिर नामी आघउ सचरिउ ॥११४॥
जे आपी अधिकारी हाय, ते तिवार मुहि^१ नई नरनाथि ।
ते रणि रहइ जे हुइ लाजणउ, तेजो तुरय^२ न सहइ ताजणउ ॥११५॥

[उत्तम-जन लक्षण]

सपदि हरिख न विपदि विपाउ, ए आगइ सतपुरिस सभाउ ।
जाउ करमनू कारण आम, त्यजी^३ राज वनि जाई राम ॥११६॥
एक दिवस प्रभि किउ पसाउ बीजइ सूदा रूठउ राउ ।
एकि राउल नइ बीजू रान, सूदानइ मनि सहू समान ॥११७॥

१ 'जे' घा २ 'प्रीछइ' घा ३ 'कारण' घा ४ 'टूक ११३५ प्रति०
या नयी' । ५ 'जातउ' घा ६ 'लोधी' घा ६ 'किम साहइ' घा
७ 'राबधार मनि' घा ८ 'प्रति' घा ।

सभा-समाहि जे घानिउ राइ, ते गूरउ जाणीतः जाइ ।
 एउ गुपुग्मि-नइ मंवन माय एउ रिऊ तइ वोजउ हाय ॥११८॥
 [सपथसमा माय यना]

बलीय घोर मति वगिउ विहार जातउ जणणी तः ब्रुहार ।
 जस ऊपरि वगिउ दस माम, पाय प्रणामू जणणी ताम ॥११९॥
 (गाढा)

जस ऊपरि वसोम वाम नव माम दिग्ग अट्ट अग्निया ।
 पय पणमवि जणणी तास करिमु निवाम विदमम्मि ॥१२०॥
 (मध्यस्त)

जई लागु जणणी-तणा पाय
 आमोस-वयण उच्चरइ माइ ।
 "कहि पुत्त ! अज्ज चलचित्त काई ?
 अम्ह ऊपरि कीय' कुदिट्ठी राइ ॥१२१॥

[पिता रोप कथन]

"मइ " भारिउ आसण-तणउ मत्त
 तीणि वज्जि कोप बहु छरइ तत्त ।
 जे पामिउ कल्लि दीउ पसाउ,
 ते सयल अजुता जुत्त आउ ॥१२२॥
 (ब्रुहा)

आयस राउ-तणा पखइ, जे मइ कीघू आल ।
 बाल-स्त्री ऊगारिवा, कु जर सिरि करवाल ॥१२३॥
 एक अबला नइ वभणी, गन्धिणि गजि आरोडि ।
 जु देखी ऊवेखीइ, तु क्षित्ती कुलि २ खाडि ॥१२४॥

१ 'कुट्ठि' अ २ खित्तण अ मा' मा १ लीटी वधारे तत्त जे
 पामिउ कालि पसाउ दाउ, ते आज सयल हऊ जिवाउ

बनेवा नइ कारणि, बहु माणस मेल्या राइ ।
जउ मनि मारण चीतवइ, तउ करि केत्यउ जाइ ? ॥११५॥

[अयायी राजानापालन अणवयता]

राउ अयाय जिंसा सहइ, वेटा वधव वाप ।
प्रहि ऊगमि तीह पट्ट-तणइ, मुहि दीठइ बहु^२ पाप ॥१२६॥

एकि अम्या छइ इह-तणइ^३, साहसवन्त सुभट्ट ।
जे रणि मगमि अ गमइ गुडीय महागज घट्ट ॥१२७॥

'रूठइ * जीवन जोखिम-ह, त्रूठड पयड पसाउ ।
[सदय भणइ] स्वामीपणा, तीह जूठउ जस-वाउ ॥१२८॥

जस असख सोआल सिउ, इक्क सरोवरि सीह ।
पीइ जल जमला रहीय, लोपी न मक्इ लीह ॥१२९॥

एक भलेरू भोगवइ, राजा-पाहिइ रज्ज ।
अधिपति-पणू एतइ अधिक, जे सहू मानइ मज्ज ॥१३०॥

राय धम्मू तिहि^६ रायनइ, रूडू * दीसइ रज्जि ।
जे अयाई^८ अप्प-पर, लेखइ समउ सहज्जि ॥१३१॥

[माता वचन]

“देसाउरि दिन केतला, जाइस रुठइ राइ ? ।”

[सदयवत्स वचन]

“देवि । म चित्तिसि दोहिलउ, वलिमु वहिल्लउ माई ।” ॥१३२॥

१ 'वे वायवा' भा २ 'हुई' भा ३ 'प्रभु ठणइ' भा
४ 'रूठइ भेषिम नारि, तूडई नहाय' भा ५ 'जमला रहिया' भा
६ 'तेडराउ नउ' भा ७ 'रूडइ-रापइ' भा ८ 'अयाय' ९ 'परिसि' भा

अवगिणू गू घाने^१ पाण्डिऊ,^२ गूपां गपत रुमारि ।
 बजी धर मजनि पडो, जाणे^३ तांग घमारि ॥१३३॥

[माता-३ ग गृहार्थ] .

बेटा वेर बोनट मा मनि वगिउ विगाण ।
 उतार आपवा^४ भगी गवि तीगरिउ माद ॥१३४॥

चित्ति घटवउ नीगरिउ गन्वर गनइ त माइ ।
 *ऊगासे तीमामडे, जाणे जीवी जाइ । ॥१३५॥

बागा वेरे बीजणे वारिणि^५ छण्ड वाउ ।
 मइ-हृत्थिइ सूदउ वरइ, जणणी जीवेवाउ ॥१३६॥

*महूरति एक जि माउली मनि मूरध्या जि भग ।
 "जावा दि जणणी । भलू^६ [बेटउ बोणण लग] ॥१७॥

[सदयवस्त वचन]

"जाऊ तउ जीवी ऊगरू, रहू तउ^७ रूसइ राउ ।
 कहि, 'जणणी' किम सासहइ, ए एवडउ अयाउ ? ॥१३८॥

^८ मत्र मइलउ मती अण, जे पइसिउ पडु-वनि ।
 सीण भाडी । मू मारिवा, राउ सोधिसिइ रनि ॥१३९॥

(गाहा)

त त जपति कहा, दूअणा होइ सब्ब सारिच्छा ।
 अम्मतरे न होइ, ज नवि होइ जम्म^९ 'जम्मेहि ॥१४०॥

१ 'सांभत्यु' भा २ 'करुव' घ ३ 'जीवी जइ' घ ४ घानेवा
 तणउ घ ५ त सभनि मूनामही, जाण जणणीअ मारी'घ ६ 'बीजी'भा
 ७ 'ममरति जणणी जवा दिइ नही' घ ८ 'इअइ' भा ९ 'रहइ
 भाडी' १० 'मत्री मयकनु मह मलिण' भा ११ 'लकुवेहि' * ।

नह मा भेज जिणाणो १ दोमुहो ण्हि-गडण गमच्छे ।
 तह विहि मज्ज वापउ, नमो तता ण्हि ण-गरिच्छा ॥१४१॥

(इडा)

भयं एव दूयात्त ए सु २ दुहिना ह्रीण । •
 जे नवि जाणइ तातो, ते वहिना विणमति ॥१४२॥

[माना एव अनु भोजन]

बारण जाणी मुमरू, उरुण मउउ मड ।
 मउण भणी सीरामणी, प्रीयू ३ दही मणउ ॥१४३॥
 गदं गुणवि घणि घवत्त, घ तरि ४ जोषु जाम ।
 वन रउ सीरामणी, मातू मु ५ यिऊ म्याम ॥१४४॥
 जणणी जिणाणी ६ मपिऊ, बीडू विडु करि निड ।
 मउवच्छ मामनि-णी, भनी भनामण दिड ॥१४५॥

[सहपात्रा एमोःगुहा एली समती]

मा भोजनायी चलिउ, ७ मगिमर ८ नेई हयि ।
 पादलि ९ नेउर गर मुणी, मामनि आवइ मयि ॥१४६॥
 पप मचरि १० प्रमदा वहिउ, ११ "दवि ! म घरिसि दुहिन्त ।"

[गूण-वचन]

"मुणि मामनि" [मूदउ भणइ] "माविमु वनी वहिन्त ॥१४७॥

(घटयत्त) १२

मनि म्पणइ गुणिन मनि माणिणि । ।
 त्रिय पाय पयि पुलिसि ? भो माणिणि । ।

१ 'जणणी' मुद तोहटि' २ 'दुह' घ ३ 'दीयू' घा ४ 'मूर'
 घा ५ 'उतरि उऊ' घ ६ 'यमाणी' ७ 'मापयु' घा ८ 'मसिडडण'
 ९ 'रिण मिणइ' घा १० 'पाधी' घा ११ 'कहई' घ १२ 'पात' घ

हू गय-गामिणि । गमिगू^१ गिरी इदरि
रहि रागा । २अमिय-न्यायणि । मदिरि' ॥१८८॥

[सामली-वचन]

"जे सूर नर साखि करी, बापिइ बाधिया बह ।
सुणि सूदा । [सामलि भणइ] ते विम छुटइ छेह ? ॥१४६॥

[नर विहीन नारी प्रतिष्ठा]

नर ३विण नारी ४कली, लगइ कोडि कलक ।
अगइ एक मइ ससहिऊ, मुग-उप्पम जि मयक ॥१४७॥

नर-बापइ नारी ५तणइ, राउल ६जाणइ रत ।
रति जि प्रीय सरिसी ७पुलइ, राउल मानइ मत ॥१४८॥

शशि विण निशि, दिशि दिवस विणु, जिम नदी विणु-वारि ।
८तिम सूदा । [सामली भणइ] तर विणु न सोहइ नारि ॥१४९॥

माइ बाप वधव ९बहिनि, पोढी पोहर वेडि ।
१०मइ भेलही जस- कज्जिहि, कत । न छइ वेडि ॥१५०॥

जे ११सोहिलइ 'स्वामी' भणइ, दोहिलइ छडइ पूटि ।
नारी रूपी निशाचरी, जाणे १२देव ति दुटि ॥१५१॥

स्वामी । सुहिल्ले दीहडे, सहुको वचगइ सत्थि ।
भाई १३भी छति भामिनी, जे आदरइ १४अणत्थि ॥१५॥

१ 'भामिगु २ 'मग लायणि' भा ३ 'वापई'भा ४ 'तणइ' भा
५ 'सतइ भा ६ 'मानइ' भा ७, 'भनू भा ८ 'सुणि' भा ९
'बहू' भा १० 'सह्य करणि मइ परहरी भा ११ 'सुहिलइ दीहडे विइ'
दुहिल्लिइ'भा १२ 'देवविष्णु' भा १३ 'भाछह भा १४ 'सत्थि' भा

[सदयवत्स्य-नामली प्रयाण]

अणवोलिउ चालिउ चनुर, नारी-^१तिश्चउ जाणि ।
सामलि सामू पय नमी, साथिइ थई सुजाणि ॥१५६॥
पय नगना प्रीय जणणि, “होयो अविचल आयु’ ।
एहि विवच्छिन्न वयण मुणि, अमृत आरोगु माई^२ ॥१५७॥

(छंद पद्धती)

गय गमणी गमणी तुर गति गमति,
^३भड अनिल लग्ग अ गिहि नमति ।
पय-पकजि लक ^४तलि वडवडनि,
पति भत्ति चित्ति ^५घरि चडवडति ॥१५८॥

[मावनिगी सामन्नी रूप वणन]

जस जघ-जूअन वर रभ-थभ ।
^६पिथल कि उरयल करिण कु भ ॥
कर पल्लव नव शाखा अशोक ।
सोवन्न वन्न साम शरीर रोक ॥१५९॥
मुख-कमल अमल ससिहर-सरिच्छ ।
निलवटि तिलय ताडीक मच्छ ॥
कु डल कि कन्नि पायार मार ।
कोसीस निकर परिगर अपार ॥१६०॥
तिल-फुल्ल^७ नास-सजुत्त मत्त ।
^८त्रुटि दाडिम दत्त, अहर राग रत्त ॥
अजन सह खजन सरिस नेत्त ।
सीमत्त कु त किरि ^९मयर-केत्त ॥१६१॥

१ 'निश्चय मन अ २ 'डूउ' अ ३ 'कल अनल' अ ४ 'तिश्चउ वडति' अ ५ 'करि पडवडनि' अ ६ 'प्रच्छल' अ ७ 'कुमुम नासिका' अ ८ 'त्रुटि' अ ९ 'मघरि' अ

दूद भमति वाग ता-२ म-२ ।

वति ३५५ प्र ३५५५ वगि-२२ ॥

उरि हार ता-२ श्रेणा ममा-२ ।

३५५५ व-२ व-२ व-२ उ-२२२२ ॥१२२॥

मजोर पोरि आवराग मुम गि ।

मा-२२२२ गिरि मा मा-२२२२ ॥१२३॥

(३२)

मुगासण आमण प-२ वरण २ वरगि-२ ३५५ ।

सा सामलि पाली पुन-२, प्रीय गुण-२२२२ वद ॥१२४॥

[सावतिगा वचन]

“मुणजि ३५५५ पुमार १ हृष २२२२-२२२२ ३५५५ ।

वामगो पूछ-२ विगति, सावलिगि मु विचारि ॥१२५॥

भरि मप्यर भएनी 'उदउ जागिगि जिमगी जाइ ।

[स-२२२२ वचन]

मुणि सामला १ [सूदउ भएइ] तूसइ विभुवन माई ॥१२६॥

[गहुन भीमाता]

अवला अ गि अलहरी, कारइ वमिन्नु कुमारि ।

मुणि सामलि १ [सूदउ भएइ] निश्चइ लाभइ नारि ॥१२७॥

हय सुपल्हाणु समुहुउ, ३५५५ गज्जनु गज्ज ।

मुणि सामलि १ [सूदउ भएइ] रानि ३५५५ रज्ज ॥१२८॥

१ 'ढलति लव' भा २ 'तन महन उरथर छिउ' भा ३ 'व-२
कुमार नइ' भा ४ 'गज्जइ गज्जराज' भा ५ 'वसती' भा

वायस जिमणउ ऊतरइ, 'डाउ ऊतरइ स्वान ।
 गुण सामलि । [सूदउ भणइ] पणि पणि २गुरिम निवान ॥१६॥
 खर ३डावउ सखर करी, जउ किरि जिमणउ जाइ ।
 गुण सामलि । [सूदउ भणइ] मगपणि कनहु कराइ ॥ १७० ॥
 तरु ऊरि तेनर लवइ, ४धूडि सर शिवा करति ।
 सार्वलिनि । [सूदउ भणइ] एक अणैक वरति ॥१७१॥
 अघूरा पहिनइ पुहरि जगनि जिमणा जाइ ।
 गुण सामलि । [सूदउ भणइ] मिलीइ ५सुअण-ममाहि ॥१७२॥
 धीक डावी घाह जिमणी, ६भुडनइ मुखि माम ।
 गुण सामलि । [सूदउ भणइ] सफन मनोरथ तास ॥१७३॥
 सडमु सारमु खर तुरीय, डावी लाली हूति ।
 गुण सामलि । [सूदउ भणइ] अफल्या ७ताह फलति ॥१७४॥
 वामा देवा वामा वायसी, वामी मीज भुकति ।
 ममु अ उरमय पुनह, विहू नाजि पामति ८ ॥१७५॥

[कुणवान प्रसमा]

(चउपइ)

राजा-गुणि राउत रणि रहइ प्रीय गुणि प्रमदा दोहिनउ सहइ ।
 गुण विण काइ न किटनइ गमइ, जे गुणवत ते ९सविहूगमइ ॥१७६॥

१ 'हुइ सावइ स्वान' घा २ 'परख घा ३ 'डावी निति उतरइ
 मुर करि' घा ४ 'धूडिइ मूडि सरि सेव' घा ५ 'सजन सुयाइ' घा
 ६ 'वारणा घालू' घा ७ 'बूझ' घा ८ 'घा' प्रति०म नहीं ९ 'सवि
 करइ' घा

-[सहनगील सामली]

१सामलि चालती मन रगि, भूखी तिसी नवि जाणइ^२अ गि ।
मारगि नई-नीभरण निनाद, मधुरा मोर सुहावा साद ॥१७॥
तरुअर-तरणइ ३तलि सीली छाह, वाट घाट विलगइ वर वाह ।
कद ४मूल फल अ व ५अहार, इणि परि गम्पा दिवस दसबारा॥१७५

[निजस बन प्रयाण]

पुहुता परवत पइली तीर, आगलि खारू रण, नही नीर ।
सीसि सुर, तलइ वेलू ताप, सार्वलिंगि ६रणि तिसा प्रलाप ॥१७६॥

[सामली-प्रश्न]

(इहा)

'नाह ! कुर गा^७रण थनि, जल विण किम जीवति ?' ।

[सूदा उत्तर]

नयण-सरोवर प्रीति-जल, नेह-नीर पीयति' ॥१८०॥

[सामली प्रश्न]

'रति न दीठु पारधि, अ गि न ८लागु धाण ।
सुणि सूदा ! [सामलि भणइ] इह किम गया पराण ? ॥१८१॥

[सूदा उत्तर]

''जल थोइ सनेह घण, तरस्था वेऊ जणाह ।
'पीय पीय करता सूकी गउ, मूआ दोय जणाह' ॥१८२॥

१ 'चानती रनि वनि मन रगि' अ २ मगि अ ३ 'तीरि अ
४ पुल' घा ५ पवार घ ६ 'सव' घा ७ घा ८ 'रति न
देमू' घा ९, जणि' घा

[तृषातुर-शामलो]

(चउपई)

जिम हीमइ ^१कमलिण कुरमाइ, जिम वसति परजालइ जाई ।
तिम जन विण सामलि-सरीर, ^२देखी करइ विमासण वीर ॥१८३

[अश्रुत प्रया-दशन]

दह दिसि ^३निरखइ नयणे जाम, पाघरि परव भरइ स्त्री ताम ।
ते देखी नर हरखिउ हीइ, इसी ^४वाट विसमी न रहीय ॥१८४॥

वहिनउ थई पुहुतउ तीणि ठाहि-‘जस भय भग नही मन माहि ।
ऊभी अचला दीठी द्रेठि, माडया गोला ^५माडव-हेठि ॥१८५॥

‘गीतल जल सरवइ सवि ठामि, जीणि दीठइ मनि ^६भाजइ आमि ।

[मूदा-वचन]

^७“माई” भणवि शिर नामइ वीर, वहिलउ थई ^८नइ मागइ नीर ॥१८६

“वाई” वार म लाइ, स्त्री त्रीसी, तीणिइ बोलइ ते बईअर हसी ।
आऊ ^९अन-जाण पुहुतउ आघ, जाणे किरि वउलावइ वाघ ॥१८७

[माता हरसिद्धि प्रया]

इणइ परविइ कीजय पाप, आई ^{१०}वाई म बोलसि वाप ।
पाणी पलीय न पाइ कोइ, एह परव हरसिद्धिनी होइ ॥१८८॥

‘लीजइ लोही दीजइ नीर’ तिणि वातिइ ^{११}विलकिलिउ वीर ।
‘देम्यु लाही वार म लाइ प्रमदा तिसीय पाणी पाइ’ ॥१८९॥

१ ‘पोइणि’ अ २ ‘देखी वयल विमासइ’ अ ३ ‘नयणि
निहालइ’ अ ४ ‘वाट विमासी’ अ ५ ‘मडप’ अ ६ ‘हुउ
विश्राम’ अ ७ ‘शरमती नइ साहसवीर’ अ ८ ‘नर’ अ ९ ‘मापन
जाणइ आघ’ अ १० ‘माई म बोलसि’ अ ११ ‘व्याकुलीठ’ अ

गारि यारि तरवउ गरि भरी, गावविगि माहूमो मारी ।
जउ 'तरुणा पोटउ त्रिगना' बाउ प्राणणउ पात्रिा बाप ॥११०

[मूला २२५ ॥३ प्रपरा]

तर 'गीमर' न यथाणि विरग मणीयालिय मुहि उजिउ मग ।
म'छरि तडिउ छ'इ तस भाग, १ नरुइ लाही-नणउ निवास ॥१११

'वामर' गरि गिर गाही रेणि जिमणुइ जिम-दड तारी तेणि ।
बउ मस्ता 'यादइ मा गुद्धि, तउ हगो हायि'साहि हरसिद्धि ॥११२

[प्रसन्न परिनिद्धि कथन]

करि 'भानीनइ कारण वही 'माहसीव तू सूदउ सही ।
पे मइ जोइऊ ताहरू माह तू 'मजीह ऊजेणी-नाह ॥११३॥

ऊजेणी माहरू अहिठाण बाजू पाटणपुर पहिठाण ।
है वउलावा भावी धीर', जोवा ताहरू साहस धीर ॥११४॥

है जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवच्छिन 'रिद्धि ।
ताहरा 'पवरिस नही कोइ पार तू सुरा सविहू शृंगार' ॥११५॥

[सद्यवरस देवी-वर-याचना]

'जूअ सग्रामि ठामि 'बहू जइत्त, 'परमेसर तू पामे पहित्त ।
प्रभु ऊजीनइ लागउ पाइ, मया किह्वारइ म' 'टालिसि माई' ॥११६॥

[वर प्रदान]

काली कक लोहगी छुरी, 'सायिइ काली कउडी खरी ।
ए वि आप्या 'वेटा भणी, 'जय' जपवि चाली जागिणी ॥११७॥

१ 'तिति त्रपातु भागु ताप' २ नीसकपण नइ नवरग मणी भावी
मुहि उरइ' म ३ 'वाम करिइ करि मा ४ 'छेदइ मनसिद्धि' मा ५
साहिउ मा ६ 'वारी नइ' मा ७ 'मभग' म ८ सिद्धि' मा ९ 'साहम
न सहू' मा १० 'बहू' मा ११ 'परमेसर तू पामे' मा १२ 'भेल्हवि'
मा १३ 'वीजी भापी' मा १ ।

१जोगिणी वनी, टली ते परब, हुई वीर मनि विमणी वरब]
 जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेला तूठी हरसिद्धि ॥१६८॥
 रनीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता चित्ति वसिउ विपवाउ ।

[पति-दू छ वारण सामली क्षमावाचना]

“करु अ वीनती वे कर जोडि, प्री । माहरी पग-वधण छोडि ॥१६९॥

तइ मू पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
 मइ आविइ गुण होसिइ एह, आगइ दूख, नइ सूक्सि देह ॥२००॥

[पीहरमां मूखा विनति]

प ताउ करी मू पीहरि आवि, मू मेलही नइ स्वामि । सिधावि ।
 जाता कोइ न करइ पचार, वली सन्हारइ करयो सार ॥२०१॥

[भवलाए चीतविउ उपाउ], तिहा आव्या तउ राखिसिइ राउ ।
 दाखिन पाडी देसइ देम, “रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस” ॥२०२॥

वनिता-तरणा वषण नय वाच, सदयवच्छि ते मायो साच ।
 “१ मेल्हिसु लेई पाद्रि पहिठाणि, जई १ ऊलगि सु अवरि अहिठाणि २०३

ऊनग लेई नइ आणू करु, ता लग स्त्रीइ-स्यू के यउ फिरू ? ।
 जिहा उलगस्यू लहिसिउ तिहा लाख,
 प्रमदा पीहरि न १ मेल्हउ पाख” ॥२०४॥

प्रमदा मनि पीहरनू राज, १ चितइ कत अनेरु काज ।
 ‘मनि बिहु जणा मोन जूजूउ’, ए ऊन्नाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

१ योगिणि तणी वुनी जु घ २ ‘तूठी’ आ ३ ‘मू’ अ ४ ‘मया’ घ
 ५ ‘मभ’ आ ६ ऊचार, वली वहिनी’ अ ७ ‘गया’ आ ८ ‘जिम पण
 घ ९ ‘मनि’ आ १० लेई मुक्सि पाटण’ भा ११ ‘उलगोष’ अ
 १२ ‘मुक्सि’ अ १३ कतह मनि’ अ ।

[मरुदिव वन प्रवेश]

करइ वान वे चालइ वाट ट्राडिउ रण्ण नइ छाडया घाट ।
 धागलि ऊमटिउ आराम, जिहा छइ सनल सदाशिव ठाम ॥२०६॥
 जिणि वनि 'वारइ माम वसन दीसइ कोइ न 'पामइ अन्त ।
 नही पापीया-जीव प्रवेश, इसी 'अद्रइ मरज्याद महेस ॥२०७॥
 मार मधुर मरि करइ निनाद कोइलि 'तणा साहावा साद ।
 मुमर 'मद मूढा मालहा भमइ भमर 'माल्टइ मालही ॥२०८॥
 'मुरहा मीत मू आला वाउ, जे लागा तनि टालइ ताउ ।
 सने सदा-यन रुडा म्म, 'जेहनइ दरमणि भाजइ भूल ॥२०९॥
 जिणि वनि योगी 'यनि विश्राम जिणि दीठइ 'मनि भाजइ आम
 'पुटुतउ धीर तेह वन माहि हूउ हरिख त्रिहु मन माहि ॥२१०॥

[वन धी वन]

(७१ पद्य)

तिहा दिहु तम्पर अति 'वमाल ।
 जातितीय जाईवन तज तमाल ॥
 वनि अगर तगर चदन 'विचार ।
 कबोन कसय घनमार मार ॥२११॥

बदली दन ३ ३ ।
 न व ॥

३

।

२।

२

पा

१२

१महमहइ मलय मानय महुल्ल ।
 सेवती जती वकुल बेल्ल ॥
 वणवीर कुसुम थोखंड सार ।
 रयवपु २पाडल जूहीय अपार ॥२१३॥

केतकी अट्टदल कमल-वृद ।
 कृष्णागर वालु करल कद ॥
 वरुडीय कुलीय पयडीय पलास ।
 ३चिहु पखि वन पाखलि ति वास ॥२१४॥

तिहि-मिभ सजन सरवर ४सुरग ।
 उत्तुग पालि पूरीय तरग ॥
 तिहा त्रिविध कमल कैरव कमोद ।
 रस ५रुद्र हस पामइ प्रमोद ॥२१५॥

तरवरइ तोरि बहु वतक वक्क ।
 चिहु पखे ६कुरलइ चक्कवक्क ॥
 नवकुड अमीय उप्पम ति नीर ।
 शीतल सुअच्छ गहिरु गभीर ॥२१६॥

[ककामपति मदिद वणन]

७तस अगलि उमयापति अवास ।
 कैलास छडि जिणि कीधु वास ॥
 मड निवीड तुग तोरण पयार ।
 अपुव्व पुष्प दीसइ दूआर ॥२१७॥

१ महमहन्ति अति मनया अमाल, फूल सेवत्री जाती विकल बाल'
 २ 'पाडलनु नही आ ३ वन पाखलि विहुपखि शव निवास' आ
 ४ 'मह' आ ५ लीय आ ६ 'कुरलइ' आ ७ 'तिहि' आ ।

धिर पथरि मडीय थोर थभ ।

पूतलीय १रूप विभ्रम कि रभ ॥

मडपि गववस्त चिट्टे पक्ख चार ।

मणिमइ सनाका मित्तर मार ॥२१८॥

कण्णयमइ दड ऊटइ सहित्त ।

लहलहइ धवन घज वड विचित्त ॥

३आसन्नउ आगलि सोहइ सड ।

पडिआर ४नदी चडी प्रचड ॥२१९॥

[सुदा-सामली म्दि र प्रवश]

(चउपई)

नमल नीरि पलात्या पाउ ५मानिनी म्यू मन रगिइ ६राउ ।

तो जाइ जगदीमर भणी ७देखी मडपि महिना घणी ॥२२०॥

हरणीरी प्रणाम]

गहरि थिका वे जोडइ हाय, प्रणामिउ प्रभु जडधर जगनाथ ।

रउ गजर गभारा माहि, भवला एक तिहाई म आराहि ॥२२१॥

गळ वन ते पेली मनि, आणदिउ ऊजेणी घणी ।

तिहीरी घोती सबल मांछरिउ, राणी सग्मु रा नीमरिउ ॥२२२॥

सामली पूछिउ ८सूदा पाट्टि, वनिता वृ द ९महावन मांहि ।

रीय ! प्रासाद तणइ जानीइ, १० ए कारण निरतिइ निहानीइ ॥२२३॥

१ 'भनोरम भमनि' धा २ 'कनक मचिइ कनक' धा ३ 'मावास
धा ४ तन माह' धा ५ प्राय मानिनिरय ' धा ६ 'जाई' धा ७ 'वेडई'
धा ८ 'श्री पाठि धा ९ 'दृढवाणी' धा १० 'कृतिग निरतिइ' धा ।

[सार्वलिंगी विमामण]

सार्वलिंगि ते सभली, चित्ति चमक्कइ लग्ग ।

१ मूदि जि मउण विचार कीय, ते मू परत्तखि पुग्ग ॥२५६॥

(चउपई)

लीलावनीइ कारण कहीय, सार्वलिंगि ते सभनि रहोय ।

भ्रम चीतवइ अदीठइ भूप, मूदइ सहू सभलित सत्प ॥२५७॥

जाणी मूत्र तग्गू जगदीस सार्वलिंगि तउ धूणित सीम ।

हर माहम्म जोईनइ हसी, लीलावनी-नइ विमासण वसी ॥२५८॥

[लीलावती प्रश्न]

“गारी ! गुज्ज कहना काइ, मायू धूणी भरक्या काइ ? ।

साचउ कहउ , सदागिव ध्याण, नहीतरि आहा आव्या अप्रमाण १२५९

सूदइ सपय दीजतउ सुणित, राजा हूदइ बोल रुणमुणित ।

[सामनी विमामण]

सामनी वली विमामण पडी, वहिना वाट सउकि सापडी ! ॥२६०

एक अण-कहइ तउ एहनू पाप, बीजउ वली सदाशिव शाप ।

रवि उगइ जु विहाइ राति, तउ ए प्राण तजइ परमाति ॥२६१॥

आगद एक माहरइ काजि, मस्तक ऊडवित महाराजि ।

आ बीजी पग-वधण मानि, राजकुमरि प्रीउ पामित रानि ॥२६२॥

सार्वलिंगि अति उतावली, अण-बोलता हुई आकुली ।

लीलावनीइ उमाडित लाग, ए मइ काइ पाडित पाग ? ॥२६३॥

[लीलावती-वचन]

“बाई ! का अण-बोल्या रइउ काई जाणउ तउ कारण कहउ ।”

१ 'मूदइ सकन विचारिया' अ २ 'उगमणि विहाणी' अ
३ 'पाम्यु' या ४ 'म म रइउ ? जु जाणइ, आ

[सावलिगी-वचन]

“भवला जे तइ आराधित ईस, ते जाणुं तूठउ जगदीश ॥२६४॥
वली म थार्ई पूछिमि पछइ, बहिनि ^१ बाहिरि न ऊभउ अछइ ”
^२सावलिगी-मुवचन सभली, धामोदगे सब एतभनी ॥२६५॥

[लीलावती सद्यकस-द्वान]

लीलो गई लीलावई गारि आवी ऊभी देव-दुआरि ।
निय नयणइ नर निरखइ जाम, ^३विरि मरतिमय ऊभउ वाम ॥२६६॥

(गाहा)

^४लीलावय सारिच्छा मभवडि लीलस रायहसम्म ।
उमरि वणी-दडा, पुट्टिवि मोहइ ए हारो ॥२६७॥

(दूहा)

“लज्जा सकटि दिट्ट, प्रीय बोल सवरु न जाइ ।
लिउ रे नयणा रिट्ट, धउ, जा नवि अतरि थाइ ” ॥२६८॥

(वजपई)

बलिउ सूदउ मट्ट साभली, सावलिगी ^५साथि जई मिली ।

[सूदा प्रति सावलिगी वचन]

भलउ भावि वीनविउ भूप ^६‘स्वामी’ तुम्हि ^७‘साभलउ म्वरूप ॥२६९॥

ईश सूत्र अवधारिउ आम, किहा ऊजेणी ? किहा आराम ? ।

कीयो थाउ हूउ रूपसाउ, ते जाणि जगदीश पसाउ ॥२७०॥

इम जावा जुातू नही बन ^८, आ वनितानउ सुणी वृत्त त ।

एव हत्या, बीजउ हर लाप, कहिता वात म करिसिउ कोप ॥२७१॥

१ ‘लीला वतीइ’ भा २ ‘जाण मूरित वतुवाम’ भा ३ ‘प्रहिली
वपण समरि सा समरइ लीलमि राय हसम्म’ भा ४ टुक २६८
५ ‘सा’ भा नथी ६ ‘सीकिइ’ भा ६ ‘सांभनु’ भा,

[सउकि (सपत्नी) विवरण]

आदि 'सकृति कीप्रउ आग्रहउ, स्वामी ! सउकि किसी हुड' कहउ ।
 माखण-तणी महेसरि घडी तीणइ तउ उमया वीर 'धीगटी ॥२७२
 खेडि माहि अधिपति अधभाग, बेटा वधव लखमी लाग ।
 'मविहू-पाहिइ सपराणी सउकि, 'वर वहिचवा चाली चउकि ॥२७३
 स्वामी ! कहिउ महारू मानि, सिरजी सउकि 'मिली मू रानि ।
 माहरी 'काई म करउ लाज, अण परणइ अनरथ हुइ आज ॥२७४
 दिनि एकइ आगमि छ मासि, राणी राउ वीनविउ विमासि ।
 कुमरि-नणू कारण जाणीइ, 'अति आग्रहू माडी आणीइ' ॥२७५॥

[धारानति(लीलावती विता) चिंता]

राणी वयण विमासइ राउ, पुत्रि-तणी प्रीछवण उपाउ ।
 सदयवच्छ नवि 'जाणइ गुद्धि, कालि कुमरिनइ तपनी अवधि ॥२७६॥
 धारानयारि गउ धरवीर, सभा बईठउ साहसधीर ।
 सुधि पूछइ कुमरि-नइ काजि 'कोई ऊजेणी आव्यउ आजि ? ॥२७७
 नीलावतीइ लीधइ नीम, ठमासि छइ थोडी सीम ।
 'आणइ भवि अनरउ 'वरू, कइ मूदउ कइ ' जमहर करू ॥२७८
 फूज घतूरा धरणि पडइ, कइ महेमर मस्तति चडइ ।
 प्रीजी गति नवि तीह लहीइ' तिम कुमरीइ हठ लीप्रउ हईइ ॥२७९॥

[बदीजन वषित सदयवत्स-समाचार]

राजा वयण सुणी तिरिण वार, बदिण एक भरइ 'जइकार ।
 'हू ऊजेणी आविउ आज, सूदा मुधि साभलि महाराज । ॥ ८०॥

१ 'सकृति लीघु' घा २ 'धीघटी' घ ३ 'मिवहू आ ४ 'वर
 विहवावइ सागीउकि' घ ५ 'वली' घा ६ 'काई करसि' ? घा
 ७ 'माग्रह करीनइ माहा' घा ८ 'अधि' घा ९ 'वरइ' घ १०
 'साहस करू' घ ११ 'न'वार' घ

[सावनिगो प्रश्न]

सावनिगि ते गंभली पूरुद्र 'वयग्न विमेग ।

"तद् रिहि रिडुड, रिहि 'गुगिउ, गही ।" सद्य नरेग ?" ॥२४७॥

[सीनावती ३५१]

'रायगगि राजा तण्णद बोवद् वदिण-व द ।

धीर भणी ते वणवद् सही । ए सद्य गरिद ॥२४८॥

धीर 'माहाण्ड माउलउ तान यदीनउ धीर ।

धीर भणी मूदउ वरू, वद् दवि दू शरीर । ॥२४९॥

जिम जिम पाणि ग्रहण नउ घवमर जाइ अजुत्त ।

तिम तिम माय-ताइ 'नद् चिंता चित्त वट्टत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहू, वात विमासी एइ ।

धारू माणस भोकन्धी, बईठा ब्रेटी देइ ॥२५१॥

कुमर किह्वारइ न आविसिइ, परणेवा परदेसि ।

सउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा भूमी भला, मागी रह्या महीस ।

माय बाप सहू वूभवी, सही ए सही न रोस" ॥२५३॥

तीणि वारणि तप आदरिउ, भइ महेसर-वासि ।

पूरी ईस आसि अनेकनी, 'परतु छट्टइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमाहि अजुत्त ।

आवइ बोइ किह्वार ते, जे हूइ 'पुण्य पवित्त ॥२५५॥"

१ 'वली' आ २ 'सामत्य' आ ३ 'मह्याइ' आ ४ 'तनि' आ

५ 'अ' मा टू क २४३ नधी ६ परता छठइ' आ ७ 'पुनि' आ

१ गित्ति साहसि सुयमि, लीला अ गि अणु पमो ।
इत्तिय गुणि पहुवच्छ २ मूनु, ३ न कोइ सुमट सूदा ममो ॥२८७
[धारापति प्रश्न]

(इरा)

४ रा पूछइ “गुणि बदीयण १ कुण दिमि कुमर पहुत्त ?” ।
[बदीजन वचन]

५ “उत्तर ऊजेणी थिवो, गिउ सामलि-अजुत्त’ ॥२८८॥
(वस्तु)

भूप चिनइ, भूप चितइ, निय मन माहि ।
“ए ६ काई कारण शिव-तणू, मूदा प्रनि जे राउ स्ठउ ।
७ कामुककुल जगि जाणीइ, लीलावई ८ जि तूठउ ।
वयणि विमामो चालीउ, राजा लोर सिउ राउ ।
उच्छव ईसर अ गणइ, सपत्तउ समवाउ ॥२८९॥
(चठपई)

९ लीला सूदउ सामलि सचरइ, वनिता सवे विमासण करइ ।
१० का जाई ? आठवइ उपाउ ता राणी सिउ ११ पुहुतउ राजा ॥२९०॥
कोलाहल कोयउ कामिणी, बिइ बड वाहगि वदामणी ।
[मध्यवस्तु वधानी]

१२ प्रवसरि भलइ पपार्यां आज, वू अरि-तरणा हिव सरिया काज २९१ ॥

१ ‘कीरति मा०स सिद्धि, जस लीला वयण’ भा २ ‘तणू अ
३ ‘कोइतेह सुमट मू० समउ’ भा ४ ‘पहु पूछइ, कहि अ ५ ‘को
बालिउ ऊजेणी । वय जु’ भा ६ काईम परम तणउ सत्त, पुत्त पुह-
वच्छ हसइ’ भा ७ ‘कामिक लिगजु’ भा ८ ‘लावइ तुठो’ भा ९ ‘ठा’ भा
१० ‘जा काई’ भा ११ ‘माविउ’ भा

[सावर्निगो प्रश्न]

सावर्निगि ते सभली, पूछइ ^१वयण विसेस ।

“तइ किहि दिट्टउ, किहि ^२मुण्ड, सही । ए सदय नरेस ?” ॥२४७॥

[लीनावती-वचन]

“रायगणि राजा तरणइ, बोलइ वदिए-वृ द ।

धीर भणी ते वप्रवइ सही । ए सदय नरिद ॥२४८॥

धीर ^३माहारउ माउलउ तात यदीनउ वीर ।

वीर भणी सूदउ वरु, कइ दवि दहू शरीर । ॥२४९॥

जिम जिम पाणि ग्रहण नउ अक्सर जाइ अजुत ।

तिम तिम माय-ताइ ^४नइ, चिता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहू, वात विमासी एइ ।

घारु माणस मोकनी, बईठा बेटो देइ ॥२५१॥

कुमर विह्वारइ न आविसिइ, परणेवा परदेसि ।

तउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा भूमी भला, मागी रह्या महीस ।

माय बाप सहू वूभवी सही ए सही न रोस ॥२५३॥

सीणि वारणि तप आदरिउ, मइ महेसर-पासि ।

पूरी ईस आसि अनेकनो, ^५परतु छट्टइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमाहि अजुत ।

आवइ बोइ विह्वार ते, जे हुइ ^६पुण्य-पवित्त ॥२५५॥”

१ वली' या २ सामत्य' या ३ 'ग्रह्याड' या ४ 'तति' म३
५ 'म' मा टू क २४३ नथी ६ परता छठइ' या ७ 'पुनि' या

१वित्ति साहसि सुयसि, लीला अ गि अणु पमो ।

इत्तिय गुणि पहुवच्च २सूनु, ३न कोइ सुभट सूदा समो ॥२८७

[धारापति प्रश्न]

(दूहा)

१रा पूछइ “सुणि बदीयण १ कुण दिसि कुमर पहुत्त ? ” ।

[बदीजन वचन]

“उत्तर ऊजेणी यिको गिउ सामलि-सजुत्त” ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चितइ, भूप चितइ, निय मन माहि ।

“ए १काई कारण शिव-तरणू, सूदा प्रति जे राउ छूठउ ।

२कामुककुल जगि जाणीइ, ली नावई ३ जि तूठउ ।

वयणि विमासी चालीउ, राजा लोक सिउ राउ ।

उच्छव ईसर अ गणइ, सपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चउपई)

१लीला सूदउ सामलि सचरइ, वनिता सवे विमासण करइ ।

२का जाई ? आठवइ उपाउ, ता राणी सिउ ३पहुत्तउ राजा ॥२९०॥

कानाहल कीघउ कामिणी, बिइ वड वाहगि वढामणी ।

[मदयवस्त वषामणी]

“भवसरि भलइ पभार्या आज वू अरि-तरणा हिव सरिया काज २९१

१ कीरति साहस मिदि, जस लीला वयण' भा ० 'तणु अ
१ 'कोइतेह सुभट सूदा समउ' भा ४ 'पहु पूछइ, कहि' भा ५ 'को
बालिउ ऊजेणी ! क्य जु' भा ३ 'काईप परम तणउ सत्त, पुत्त पुह-
वच्छ वसइ' भा ७ 'कामिक तिगजु' भा ८ 'लावइ तुठा' भा ९ 'ठा' भा
१० 'जा काई' भा ११ 'माविउ' भा

जस 'काजि तप तप्पउ छमास, ते परमेसरि 'पूरो आस ।
' स्वामी । दिमि आणी अवधारि, 'आ सूदउ नइ सामलि नारि२६१

[धारापति प्रागमन]

भाहेसर प्रति करी प्रणाम, रा चचलि चडी घमक्कयउ ताम ।
पूठउ थिक्कउ 'परि थिउ सहू पूलिउ, सूदानइ जई सीकिइ मिन्पउ३६१

[बारहट्ट वचन]

बारहट्ट बोलाविउ वीर "साभलि सूदा । साहसधीर । ।
ऊभउ रहउ, अवधारि सरूप, तू भेटेवा आवइ छइ भूप ' ॥२६४॥
बदिण तउ बोलाविउ जाम, पय खचीनइ 'रहिउ ताम ।
सा राजा छाडी रेवत, साई 'दीरू सामलि-कत ॥२६५॥

[सीतावती पिता स्नेह वचन]

सावलिगि नइ नामइ सीस 'पुत्रि -भणी 'बोलावइ पृहवीस ।
'माई महासति जे आगिली ते तू अ भगतिइ दीसइ भली' ॥२६६॥
बारू वक्ष एकनी छाह 'राउ सूदु वे बईठा ताह ।
ऊजेणी अधिपतिनइ आधे, सदय 'भेटिइ हुई समाधि ॥२६७॥

[सदयवत्स विचित्र प्रश्न]

"ऊजेणी वमुधा विग्पात सूदा नामि 'अच्छइ सह सात ।
अण भोलखिइ म आदर करउ वात विमानी वाहइ घरउ ॥२६८॥
ते किम 'इम एकलउ नमइ ? , ते किम पालउ वधि अवगमइ ? ।
तू धारा-नयरी-नायक, हु पाघरउ अछउ पायक । " ॥२६९॥

१ 'कामिनी जि तप नप्पु' धा २ 'पूगी' धा ३ 'आ' धा ४ 'बहु
परि प्पु पछइ' धा ५ 'सू' धा ६ 'जोइ' धा ७ 'सीधु'
धा ८ 'ते दिइ घामीस' धा ९ 'तइ तोठइ भावइ धा १० 'रात्रा
वेदू० धा ११ 'दीठइ' धा १२ 'वसइ धा १३ 'एकनां वनमाहि' धा

[बारहट्ट-प्रवच । परिचय-निवेदन]

(इहा)

बारहट्टि 'इण्डि अचसरि वदियण बालिउ इम्म ।
'सूद' ३ति सहू अम्हि सभलिउ, तू अ राउ रुठउ जिम्म ॥३००॥
ऊजेणी अधिपत्ति तू, आ धाग 'धरवीर ।
मेलउ माहसरि कीउ, छडि विमामण वीर ॥३०१॥
अदिण-केरड बोलडे, वसिउ सूद सकेत ।
परण्या पाखइ न छूटीइ, ए सहूइ हर हेत ॥३०२॥
'सिउण ममत्थि म अचगणइ, मूदइ मा महिलाउ ।
सावलिणि साथिइ सती, 'तह मुहु रक्खइ राउ ॥३०३॥

[लीलावती गुण-वणन]

(गाथा)

नर नारि मार परिवारे, पक्कलि 'मिनिथ नरिद नर खने ।
लीलावई लावण्य-वयणि, न बुनो 'गेलीय बलिहार मज्झम्मि ॥३०४॥
अह लीलावई नाम, लीला-गई रायहसम्म ।
उयरि बणी पडिबिब पुट्टीय पडिबिबिउ हारा ॥३०५॥
'गिब जोम समे उपवासत्त ये मज्झि रयणि सर मज्जे ।
अल-बेलि-करण मुक्क, 'नीरस तरूइ नील पगुरण ॥३०६॥
तह पगुरण प्रभावं पल्लवियउ, मुक्क तरूअर तिवारो ।
तिरिण 'पल्लवण पुञ्जिय गिब, वच्छति सदय भत्तारो ॥३०७॥

१ 'तण्ड' मा २ 'तुम्हें सहू साभलिउ' मा ३ 'नयरी धरि' मा
४ 'मूषण सवे मह भवणया, मूदु अछइ सामइ' मा ५ 'तेणइ' मा
६ 'तह मरा जेहिमि' मा ७ 'गिब-योग उपवास समइ, पय-मभि' मा
८ 'नो सस्य तरवि' मा ९ तिणि पूजिसि, शिव-कठिनू' मा

१ मउडडय गउनीया, भूपाना गवन मूर मामता ।
 ते १ भवगाणिय आणया, गीनायय लग लग्न सुदे ॥३०८॥
 २ अधिपति अधिपति गधि, मेणाटिव वारहट्ट वहु वभो ।
 पाणे पाणि-प्रहण विद्ध, सग्गि मुदयवच्छम्म ॥३०९॥

[सदयवत्त सीमावती-पाणिप्रहण]

(वस्तु)

राउ १ रिज्जउ, राउ रिज्जउ, सिद्ध स हि वज्ज ।
 २ गयन लाव आणदीउ, वदीजण मुयस तम बोचइ ।
 विष्ण वेद भुणि उचरइ, हगगमणि हरसाति बोचइ ।
 साडीय चउरा चग तिहि बिहु राजा रहि आवासि ।
 अध-दल सिउ अप्रिकारीउ १ म् विउ मूदा पासि ॥३१०॥
 ताम २ चह्लिउ, ताम चल्लिउ मिलवि मनरगि ।
 ३ राजासिउ राणी सवे, कुमरि माई घरधीर घरणि ।
 सीलावई-वर जोइवा, सार्वणि सिउ भेट करणि ॥
 सदयवच्छि प्रमदा सविहू कीघउ एरु प्रणाम ।
 साई देई सामलि-तणा १ बोलइ वहु गुण-प्राम ॥३११॥

[सामतो म्प वणन]

(पटपद)

आगइ अहर रस रत्त अनइ अहर विलासीय ।
 आगइ लोयण लाइ अनइ वज्जलिहि वलासीय ॥

१ 'मडा वा आ २ 'भवणीय आगय नयी' आ मा
 आ ३ 'द नयी ४ 'उठउ सिद्धि सह' आ ५ 'दिइ महेससि मग्गिउ क्त
 जि सीलावतीय लघु तत्तखि तीण दिणि नुरित लग्न लेउ दिल करण
 विद्ध' आ ६ 'मेह्लिउ' ७ 'वलीय' आ ८ 'राजा एसिइ आ ९ 'ते
 बोलइ गुणप्राम' आ

आगइ थणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय ।
 आगइ काम गायम धारि, अनइ भभरि भमकारीय ॥
 आगइ काम कीय कामिनी, अनइ वस तन सि ऊजली ।
 पहुवच्छ-तणउ भमर रगि रसि, इसी नारि सूदा मिलो ॥३१२॥

[सार्वलिगा-सत्कार]

(षडपई)

आसणि वईसणि आदर वहु, ^२सार्वलिगि सतोमिउ सहू ।
 बीडा आपइ आपण हायि, जे धणि आवी धारणि साथि ॥३१३॥
 सार्वलिगि सनमानी राइ, राणी सवि रलीयाइति थाई ।
 ठठी अवला आयस मागि, सतोधी सामलि सोहागि ॥३१४॥
 चानी चद्रवदनि चमकत ^३किरि कदप लीलावई वत ।
 राजकुमारि रूपिइ रति जिसी, सार्वलिगि सविहू -मनि वसी ॥३१५॥

[लग्न निमित्त मिष्टान्न भोजन]

षडो वडाहि गमि बहु बहु आदर-सिउ आरोगिउ सहू ।
 लग्नवार लीलावई रेसि सदयवत्स वर भरीइ सेसि ॥३१६॥

[वर-तुरग प्रशस्ति]

(राग षडल धनासी)

आमण-तणउ अणाविउ ए ।
 नरवरिइ तरल तुरग, ए सखी । ।
 साहण-मति पल्लाणविउ ए, ^४पलाणि पवग ।
 तीणइ वरराउ चडाविउ ए ॥३१७॥

^१ 'द्व क ३१२ अमां' नधी ^२ 'लीलावई' मा ^३ 'काम जिस्सु' मा
^४ 'मति मानहर' मा

(छठ चामर, त्रितास)

चडति तेवि जे जडति ते तुरग प्राणीउ ।
 जे मुद्ध तित्त सानिहुत्त, ससणे वसाणुउ ॥
 पायालि हु ति 'वीभयउ हो मदीय प्रासणे ।
 सोहति सदयव न बीर, त तुरग प्रासणे ॥३१८॥

*(घउल)

चिहु दिसि च्यारि चमर बनइ ए प्रा प्रा ।
 मिरवरि ए सोहइ छत्र, विप्र वेय-धुनि उच्चरइ ए प्रा प्रा ॥
 प्रागलि ए, नाचइ नानाविध पात्र ।
 बह वदिण कलरव करइ ए ॥३१९॥

(छठ चामर त्रितास)

वरति वदिणा अणिकक मगलिकक मालय ।
 विचित्त त्रित्त, पत्त पाउ राग रग तालय ॥
 चढी तुरगि, चगो अ गि, 'सार सुदरी रसे ।
 ति चालवति नारि च्यारि, चामर चिहु 'दिसे ॥३२०॥

[वर यात्रा धवलगीत वणन]

*(घउल)

वर प्रागलि पिउ सचरइ ए प्रा प्रा ।
 राण ले ए सरिसउ राउ, पायदल पार न पामीइ ए प्रा प्रा ॥

१ 'सिद्धि खिति' प्रा २ 'पयाकिउ' प्रा ३ 'मदीइ सासणे'
 प्रा ४ सत्तर सोहइ छत्र प्रलब कि चिहु दिसिच्यारि चमर बनइ ए ।
 'सत्वारि सारि सुदरी,' प्रा ६ 'दिसि किनिरी ॥ ७ 'वर प्रागलि
 पिउ चालइ ए राउ कि पयदल पार न पामीइ, ए । तत्तलिण बल्प
 नीसाण जे भाउ कि हिइ हीसइ गज सारसी ए ॥' प्रा

वालीय जउ ए नीमाण जे घाउ ।
ह्य दीसइ गयराय सारसी ए आ आ ॥३२१॥

(छद चामर, त्रिताल)

१करति भारसी गइ द, सूडि-दडि डबर ।
नीसाण २वाउ, ठक्क घाउ, ठोल बज्जइ अबर ॥
प्रवित्त वाउ, ३दिन्न राउ, वेगि वावरइ करो ।
४प्रेमि सदयवच्छ वीर, सपत्त तोरणइ बरो ॥३२२॥

(घवल)

गय गामिणि गुण वनवइ ए-आ आ ।
ससिमुखीय सुकामल महमहइ ए ॥
करइ सिणगार हार एकाउलि उरि ठवइ ए ।
ककण कुडल कनहलइ ए ॥३२३॥

(छद चामर)

मरिद इ द मत्त लोय, लोय-मज्जि सोहिइ ।
षदिठु दिठु माणिणी, २मणत रगि मोहिइ ॥
भवानि पत्ति-पाय भत्ति कन लद्ध कामिनी ।
ति ३सूद वीर, बलवति, ४गेलि गयद गामिणी ॥३२४॥

(घवल)

कद्रप ए ममउ कुमार, अहिणवउ इ द नरिदवरो ए ।
ससि भरति कुमार, सदयवच्छो शृ गार करति ॥
हरसिद्धि भत्ति विप्र, वेदधुनि उच्चरइ ए ॥३२५॥

१ 'हय गय हीस' सारसी कहि, २ 'ठोल ठक्का घाउ हूअ
साव प्रवर' घ ३ 'दितिराउ' घ ४ 'इणि परि सदयवध वीर, मपत्त
करिसी-नगो बरो' घा ५ 'मन्न रगि घ ६ 'तेसूदवार' घा ७ 'वेतिह
पायवर मामिना' घा

१ (मोक्षिककदाम छद तत कु डलित)

पउमिणि हस्तिनि, चित्रिणि दारा, सखिणि सारइ किद्ध सिंगारा ।
 रति पति रगि, मिलवि सहि रामा पेखिवि सदयवत्स वरकामा ३२६
 जे काम-नरिद तणइ दलि सारा, गमइ मत्त पयोहर भारा ।
 जे हेलि सा गिहिल्लि ३चलइ चमकति ते सुद् नरिद स्पू रगि रमति ३२७
 जे नेय भय दिट्ठ कि तद् कुरगि ३यत्त सरेह सुनेह सुरगी ।
 जे ३पकि चदनि अ गि गमति, ते ३सुद् नरिद स्पू रगि रमती ३२८
 करइ नित्त मानिनी आणणि सोह, जे जाणि जुवाण तणइ मनि माह
 जे पत्ति उरत्थलि नारि नमति, ते सुद् नरिद स्पू रगि रमति ३२९
 ३ठवइ उरि हार कि तारय-श्रेणि, ढलति नित्तव प्रलबित श्रेणि ।
 जे तारुणि आरुणि नित्त घुमति, ते सुद् नरिद स्पू रगि रमति ३३०
 [लीलावती सखी विनोद]

(पद्यपद)

‘हे सही ! कहि कुण कज्जि, अज्ज उ-हास अ गि बहु ? ।

३कु कुमि वज्जलि वणय-कुमुमि, सिंगार किद्ध सहु ॥

भरीय सेसि सीमत, ३कन वदर्प रायवरि ।

गुडीउ माहण मयमत्त नित्त सरि सज्ज कि ३उपरि ॥

माणिसि मयव मधु रति मधुप, ३पहुवच्छ-तनय मुज्ज मनि वसिउ ।

उल्लवण अनल ३ न कित्तनु रयणि सदयवच्छ सुखनिहि जिसिउ ३३१

अगइ ३अहरा रत्त अनइ वलि विलासीय,

अगइ लोयण लोइ, अनइ वज्जनिहि वनासीय,

१ ‘मोक्षिक कु डलित’ घा २ ‘वसइ’ घा ३ ‘जेउव’ घ
 ४ ‘ते सुदव वत्त निउ रगि रपति’ घा ५ ‘निइ’ घा ६ जे कुरणी
 निच्छइ हरमनि’ घा ७ ‘कुमरिति’ घा ८ ‘कन ठक परिय’ घा
 ९ ‘उपरि’ घा १० ‘पुहर मनि सनुक्कमु १’ ‘न कित्तनु रयभि’ घा

अगइ धणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय, '
 अगइ गय मयारि अनइ अनेउर भकारीय
 अगइ कामुकीय कामिनी, अनइ वसत निसि उज्जली ।
 पहुवच्छ-तरणउ भमर रगि रसि, *इनी नारि सूदा मिचो ॥३३२॥

[लीलावती वरप्राप्ति-धयता]

[दूहा]

लीलावई मनि चीतवइ "ईमरि किउ पसाउ ।
 ऊजेणी थिउ आणिउ, सदयवत्स पहु जाउ ॥ ३३३॥
 जस कारणि मइ एकली, तप कियउ छ मासि ।
 ते आशा *मुक्त पूरवो सामी लील विलासि ॥३३४॥
 हारि दोरि ककणि हि, सयल शृ गार किद्ध ।
 लीलावई मन रगि *रसि, सदयवच्छ कर लिद्ध ॥३३५॥

[चतुर मगल]

राय पखानइ पाय वर, सासू सेसि भरति ।
 विष्ण अनइ वनिना सवे, मगल चार करति ॥३३६॥

(छंद पदवी)

मगल चार करति, हत्य लेई 'हत्ये लावउ,
 अतरपट उद्धरीय, किद्ध बिहु कर-मेलावउ ।
 सभ सूर स जोई, नारि वर नयणि निहालइ,
 करइ सुकवि कइवार, राय वर पाय पखालइ ॥३३७॥

१ 'सिहण सुघोर' अ २ 'भभरि' अ ३ 'वसत
 निसि' अ ४ 'अनइ सवर मुदा मिली' अ ५ दूक ३३
 'अ' मा नथी ६ 'पूरी हुई' अ ७ 'पुइती वम्मडवि तिहि' अ ८
 'मपवालउ' अ ।

(वस्तु)

नारि लद्धी, नारि लद्धी, नाह नव रग ।

नारी लद्धी नवल, अमर वेगि^१आ ह्मिस्ति पामीय ।

अध^२सपत्ति अध रज्जस्यु, दिद्ध उदक सइहत्थि स्वामीय ॥

^३वीर वली चिंता बहु, जिमजिम व्याहइ राति ।

हेम धणू हरसिद्धि भणइ, पुरिस^४पुत्र प्रभाति ॥३३८॥

[विवाह-कृत्ताचार]

(चउपई)

^१जउ मनरगि विहाणी राति, दातण करइ कु अर परभाति ।

ता ^२साला सवि आव्या सार पुण्यवतना पुत्र अपार ॥३३९॥

^३तीणइ ते ऊजेणी धणी बोला विउ 'बहिनेवी'-भणी ।

शिर नामी बईठा सुविचार, ऊगम लगइ^४जिके जूअर ॥३४०॥

[धृत श्लोका]

मदयवच्छ सविहू दिइ मान, प्रीति सरिसा आपइ पान ।

^१तीणइ मेलही पू जी पड माहि, जूअर मागइ सवि सूदा-पाहि ॥३४१॥

ते बोलइ 'सूदा ! सुणि वात, करो सूय अम्ह-स्यू रमि रात ।

भइ आपणी भलउ सहू कोइ,^२ पडि पियारी दुहिली होइ ॥३४२॥

मदयवच्छ लहुडपण सीम, जू आव्या ^३ता भणिवा नीम ।

रमिवा ^४मसि असिवर ऊडवइ, हस्या^५वीर कलवलिया सवइ ॥३४३॥

१ 'माहति' भा २ 'सपत्तिसु तस जुगत उदक दिउ' भा ३
वीरवर' भा ४ पत्र' भा ५ 'भलइ भावि जागीउ जूअर दातण
करवा काजि कु अर' भा ६ 'साला स्यु' भा ७ 'उत हे ऊजेणीनु धणी'
भा ८ 'सेनुउ' भा ९ 'जण मेली बईठउ' भा १० 'पडइ' भा
११ 'तइ कहिवा' भा १२ 'रसि' भा १३ 'धीतिवउ छलीय' भा

लिउ ह्यीअर हरावी सही, सूय पाखइ १न रमाडइ मही ।
गाठइ गरय न हाटि निखेव, मूदउ वीर मनावउ सेव ॥३४५॥

[हरसिद्धि दत्त-वर छूत-जय]

सदयवच्छि समरी हरसिद्धि रामति मिसि लूसी निइ रिद्धि ।
पाडिउ अपइन १पहिल्लइ दाणि, साला हाभारथ नइ हाणि ॥३४६॥

लीघा लाख हरावी हेम, ए ऊवाणउ साचउ एम ।
१ग्या अन्य काजि, अनेरू थाइ, ते घाठी कट्टि कट्टिवा जाइ? ॥३४६॥

सालाने वानइ ते वाठि, १वहिनेवी ते वाघीउ गाठि ।
१ऊठया सवे अतारा भणा, अइ पसरावी सूदा-तणी ॥३४७॥

[सत्यवत्सकृत छूत-त्रय-दान]

राजा-नइ घरि जाणि जग, मागणहार-तणइ भनि रग ।
सदयवच्छि वरि माडिउ करण, हाथ आडावी अठारइ वरण ॥३४८॥

वारट्टु पुरोहित पढीअर, १सूदा सामलि ? १भनाव्या सार ।
निह मन गुद्धिइ दोषू मान जुगता-जुगति दिवारउ दान ॥३४९॥

छ दरसण पाखड छनवइ, १ दानि मानि मागण रजवइ ।
आपइ सविहू काजि सुवर्ण, किरि अहिणवउ अवतरिउ वर्ण ॥३५०॥

११ राज मानि माणस अति बहू, आपी अरथ सतोसिउ सहू ।
मूदउ वीर पडावइ साद, १२ अठार वरण दिइ आसिर्वाद ॥३५१॥

पहिलू १३ मोकलावी महेस, तउ ससरा प्रति १४ गिउ नरेस ।
आपस मागी ऊमउ रहइ, ससरउ सदयवच्छि प्रति कहइ ॥३५२॥

१ 'रमाइ नही' घा २ 'मनायु' घा ३ 'जइत' घ ४ 'चिट्टु'
घा ५ 'गणु काउ नइ' घा ६ 'तु पूषी पू जी बाघिउ गाठि' घा
७ 'जेई राजा' घा ४ 'मूद वाल' घा ९ 'तोडाया सुविचार' घा
१० 'मानिइ मागण मन अ ११ 'राज माहि' घा १२ छ दरसण घरि
पासि वदि' घा १३ 'जेई मोकलावइ ईस' घा १४ 'नामइ सीस' घा

[भीमार्जुनी गिता पागपति वचन]

“ऊज्रेणी घधिपति । अघघारि, १पगाउ बरो अम्ह नयारि पघारि ।
भागवि घत्र मपति घत्र राज, २मागि जि राई जाईइ वाज ॥३५३

दे ाउर बहु गीधु दत्र । तुम्ह जावा जुातू नहीं हूँ ।
आगइ एउ नारिनउ गाय रीजो- गिउ त्रिय बाधु हाय ’ ॥३५४॥

[मूला वचन]

मूढु ससरा आगनि साच वाउइ बान त ब्रह्मा-वाच ।
“लीलावती नइ सायिइ लेमु सामलि पोहरि पुहुचाडिमु ॥३५५॥

बरोय रहण पहिलू परनेमि, तउ ३आणिमु अत्रला बिहु रेमि ।
जउ सासरइ रहु सुख भणी, तउ ४नाजइ ऊज्रेणी घणी ॥३५६॥”

[कवि वचन]

जिएइ तात तणइ अघवान, छाडीउ राज बरो तण तीन ।
त विम सूदउ सामरइ रहइ ? सामलि-भरिमउ मारणि वहइ ॥३५७॥

[प्रमाण]

बल्या परवत विममा घाट आगलि इ द्र वाहण-नउ घाट ।
बाघ सिध चानर वनि मिलइ देखी वीर सुभट खलभलइ ॥३५८॥

मुपुरिम नसीह नामइ सयर ते प्रति दीघ हरसिद्धिनु वर ।
मधुरइ सादिइ मोर कीगाइ, वावन-ना वध ढीला घाइ ॥३५९॥

[गाढ परण्य प्रवेश]

आगलि अतोपम अति कातार काठ समुद्र न लाभइ पार ।
नवि जाणीय सवार अमूर, वनमाहि पइसी न सरुइ सूर ॥ ३६०॥

१ गया'घा २ मागिन देव' घा ३ 'आबिहु अत्रला' घा
४ 'जय जाइ' घा

पुङ्गु वीर ते वन मझारि, गाढइ करि करि साही नारि ।
“स्वामी ! धार अपार अवजारि”, विण बाबो तिहा पांचइ सालि ३६१

मत्त धान खडधान अपार, पखि जाति नवि लाभइ पार ।
मृग नइ सालीही महिगहइ, षडार भार वन देखो मनीरहइ । ३६२

मजलि सरोवरि भीलइ हस परवन पाखिलि अति बहु बस ।
बम घसाघस परवत जलइ, नई नीभरण गिरि हि उत्तरइ ॥३६३॥

निगि नीरि उहाइ आगि, गज बे मडलि जई लागी घागि ।
इति करमदा दाडिम द्राख, नालिकेरि लीकइ-ना लाख ॥३६४॥

[चक्रवाकी प्रति-सावनिगा प्रथोक्ति]

वानु वीर नीर-तटि रहिउ सामलि सूडु बोलावीउ ।
“स्वामी ! आ साविज अवजारि, काठइ बईठा करइ पोकार ॥३६५

अचारि पुदर चक्रवाक इम रडइ, जाणे पाटणि पुहरा पडइ ।
विहस्या कमल, विहाणी राति, प्रीति प्रीय पामिउ परभाति ॥३६६॥

मामइ पडरां ते साहमू जाइ, सावनिगि मुख दीठउ रोइ ।

(उपजाति)

विनाकर बाबा मुख चद्र विव । कठे च मुक्ता मणि-हार तार ।
पुननिगा विभ्रम भीति हेनि । मूर्खोदये रोदिति चक्रवाकी ॥३६७॥

(चउपड)

मूविउ नयर मही निटोल, मूविउ वन ते बोलइ बोल ॥३६८॥

[धूमकार-स्वरश्रवण]

जा प्रवगमइ पथ अति घणउ ता सुर सुणिउ जूषारी-तणउ ।
हाप माहिल्या हीरा सोइ, एक भणइ “ए जीता जोईइ” ॥३६९॥

[पवत प्रवार प्रवेण]

परयत-शिरि पोठउ प्राकार, जस कमाड वामीमा पार ।
दोसइ हट्ट, धवलगृह श्रेणि, रा मदिरि जई 'रहिमु तेणि ॥३८६॥

[प्रनाथ स्त्री रदन-श्रवण]

(दूहा)

राती रोअती साभली, नीधणीमाई नारि ।
सूदइ सा पूछी विगति, धरिण 'धावल हर मभारि ॥३८७॥
पूछी ता प्रमदा कहइ " 'साभलि साहमधीर ।'
है निधि नद नरिदनी, सूद । विलसजे वीर' ॥३८८॥

[नद नरेद्र निधि दशन]

सावलिगि नवि सभलइ नारी निद्रा लिद्ध ।
सदयवच्छ 'रवि ऊगमणि पेखीय सयल 'समृद्धि ॥३८९॥
धरिण मणि मुत्ताहल रयण, हीरा हेम अपार ।
अवलोई सूद सह, उरी दिद्ध 'दूआर ॥३९०॥

[निर्लोभी सदयवत्स]

बलि बाकल पूजा पखइ, लच्छि न लीधी हत्थि ।
दोठी अण-दीठि करी, 'सपय मूकी समत्थि ॥३९१॥

[पुण्य प्रशसा]

(वस्तु)

पुण्य तूसइ पुण्य तूसइ, सकति सुर सच्छि ।
पुण्य प्राणि वनिता वरी, 'पुण्य पुव्व पयरहण लब्धइ ।

१ 'रहीमा' भा २ 'धवल' भा ३ 'मूणि हो' भा ४ 'सूरि' भा
५ 'सपद्धि' भा ६ 'बार' भा ७ 'मूकी सूदइ' भा ८ 'पवर पुण्य' भा

दान दिइ ते घय नर, 'अदयवत वीहइ न खन्मइ ।
 पुष्य ज पुन्वय भव पखइ, 'वद्धित सुख न होइ ।
 'पुष्यवन पुष्य ज करउ, सुख मतोप सवि होइ ॥३६२॥

[नगरी सबलोकन]

(चउपई)

'सविह परि गढ जोयउ फिरी, चालिउ 'वीर मनि चिता करी ।
 परमेवर जउ करइ पसाउ, तउ ए ऋडउ रहिवानउ ठाउ ॥३६३॥
 दिवस च्यारि वनि 'वहिउ नरेस आगलि दीठउ वसतउ देस ।
 'पुर प्रासाद नइ घट्ट निन्वाण, गामि गामि गिरूआ अहिठाण ॥३६४॥
 वाक लाक-तणा तिहा वाम 'पखी पथिक करइ उल्हास ।

[मार्गे भाट मिलाप]

त्रा वि जाइ 'वहना वाट ता सर-पालिइ भेटिउ भाट ॥३६५॥
 'नर एक नउ अवारउ जाइ, पूठिइ प्रमदा पाली 'पाइ ॥
 भाटि बोनाविउ 'मुणि हो दूर' रहि राउन' 'अति थिउ असूर' ॥३६६॥
 भाट भोगवइ 'गाम नि ग्राम आदर सिउ आणिउ आवासि ।
 देवा अ ग-तणउ 'आकार, ते आवर्जन करइ अपार ॥३६७॥
 तेडाविउ वालद तिवार, मर्दन दवा काजि कुमार ।
 क्तावली हुईय अ घालि, भोजनि शालि दालि घृत घोलि ॥३६८॥

१ 'प्रहसहत पण पुष्य शु-मड' अ २ 'जि मुख गरीरि' अ ३
 'पुष्यइ ए पामीय सट्ट मयइ मू-इ वीरि' अ ४ 'गाढा गुहरि' अ ५ 'शीत
 शीतवण' अ ६ 'बनिठ' अ ७ 'पूरव' अ ८ 'पखीय हृदय' अ
 ९ 'वसनी' अ १० 'दासड नर एकनु जि' अ ११ 'काइ' अ
 १२ 'वड' अ १३ गामनु अ १४ 'अधिकार' अ

‘नवरइ मदिरि िद्रा टाण, ऊठउ पयिन’ वरउ विप्राम ।
जा वे जण वईटा एवति, ता यामिणि बोलावी वति ॥३

[गूदा-वचन]

मुणि सामलि । बोचिउ माहरू कोस पच पीहर ताहरू ।
दिवस पच राह १चड प्रदशि, हूँ पूहचू पहिठाण प्रदेसि ।।४०
प्रहि ऊगमि पेवू पहिठाण, जई जू ठाणइ मारू ठाण ।
जे १भूरा समरथ जू-जाण, तीह-उपरि माइरू मढाण ॥४०
लीला लाछि हरावी १लिउ, तेहनउ अरथ दोसीनइ ४दिउ ।
तू पहिरेवा सरोखा सार बुहरू वस्त्र विविध शू गार ॥४०
घाट हडी नइ वस्त्र विहीण इम जातो तू दीमिसि दीण ॥
पहिरण पखइ पीहरि गमिसि, तउ माहरी माम नीगमिसि ॥४०

[चारण गद्द निवास सूचन]

बदिए तणइ बहिन क्षत्रिणी क्षत्रिणी मानइ ‘भाई’ भणी ।
ए नातरू नवू नही आज भाट भुवनि रहिता १नही लाज ॥४०१
१जे भड माहि भवाडइ भला जावणि मरणि नही एकला ।
१रूठारा मागी निइ मड, क्षामोदरि । क्षत्री गुरु चड’ ॥४०४
सामलि मूदानू मुणिउ वयण नारी नीर भर्या वे नयण ।
‘पारणी बल जे पेखइ प्रदसि, पच दिवस प्रीय’ किमइ रहेमि’ ४
नारी ‘देव’ भणी नर गिणइ, नरनइ नारी पय लू छणइ ।
इम करता १नर न रहइ ठामि, ते नारी काइ सिरजी स्वामि’ १४

१ ‘छड’ मा २ ‘मूषा म ३ ‘लपोस’ मा ४ ‘जोन’ मा ५
‘नवि’ मा ६ जे रणि चडथा मा ७ ‘रूठरा मा ८ ‘व’ मा

[मूदा-वचन]

दुद भणइ "मामलि ! सुणि वान, नर जाइ जोयण सइ सात ।
ति दिवस महिना मनमाहि, जिहा प्रपला तिहा आवइ ठाहि" ॥४०८

[सामनी-वचन]

'स्वामा ! ए उत्तर भवप्रारि, धरयो घणू विसासइ नारि ।
नर नवनवइ भवनि रसि रमइ, मुकुलिणी दीह दूनि नीगमइ' ॥४०९

'कणय रयण मुत्ताहन हार, हीर चीर सोत्रण शृगार ।
र सहु समपइ भवला हाथि, बीजा मरिमउ आवइ थाथि' ॥४१०

'प्रीणि उत्तणि ते भवना रहो, वान एक पुणि धरनइ वही ।
'सामीय ! कहिउ माहरू मानि, प्रीय ! पाटण ते नथी समानी ४११

[मन्थवस्तवचन]

'सदयवच्छ प्रम पूछइ इमिउ "कहि कामिणि ! ते पाटण किन्धू ? ।"

[सावनिगा वचन । नगर पाटण-वर्णन]

'स्वामि ! सहरइ आपू छेक, लागइ दव दीहाडउ एक ॥४१२।

जिणि पाटणि पोढा प्रासाद, मेरु निखर सिउ 'वहइ विवाद ।

'गरुउ गढ ऊ चा आवास, किरि अहिणव दीमइ कनाम ॥४१३॥

माहि महेम विष्णु नड वड्ड, महु समाचरइ कुलाचिन 'धम ।

'दिनवर भगति-तणउ अनि भाव, अधिवउ परमेमरो प्रभाव ॥४१४

बावन वीर वमइ तिहा वासि, पूजइ जिनवर फलीइ आमि ।

जिन शासन गाढउ महगहइ जोव दया देखी मन रहइ ॥४१५॥

१ 'भाणि मानिक' प्रा २ 'सहुइ आपणइ' प्रा ३ 'नरवर नइ' प्रा
४ 'लीगे' (४१२) 'प्रा मा नथी' । 'मुदयवच्छ कहि आपू' प्रा ६
'नोइ वान' प्रा ७ 'गणप' गुख' प्रा ८ 'कम प्रा ९ 'दिन करनी
भगति पति भावि' प्रा

[प्रतिष्ठान पुर-प्रवेश]

पामिउ पुर पहिठारण प्रवेशह, नयणि निहानइ नयर निवेशह ।
ता सरोवरि जल भरइ सुवेशह, चनुरि चनुविघ नारि निवेशह ॥४३१॥

[विरह विसंगित पुरप प्रगग]

भागइ विरहि ^१वितवलो पाणी, लागी अ गि ^२तरस मपराणी ।
कज्जल लग्ग दिट्ठ दुउ पाणि, पीघउ पुसि पगू जिम पाणी ॥४३२॥

‘नर नवरग सहो सवे जन, विणि वारणि पगू जिम पीइ जल?’ ।
नारि-^३नयणि वरि लग्गउ कज्जल, तिणि ^४दीठइ नर भरइ न अ जल ॥४३३॥

(दूहा)

ईणि नयरि जे ^५निद्वणह, तेह तणी धर नारि ।
वारु माणस जे ^६वसइ तेह ^७तनु पाणीहारि ॥४३४॥

पाणीहारिइ परखीउ, नर पीयतउ नीर ।
सदयवच्छ त सभलि, चित्ति चमवयउ कीर ॥४३५॥

[भमगत कवय दान]

पढम पेखइ नयणि, पोलि प्रवेशि प्रवीण ।
पुहप एक पय-पाणि विण, सरडु श्रवण विहीण ॥४३६॥

[गणपति मन्दिर प्रवेश]

तं पेखवि पाछउ वलिउ, गिउ गणपति प्रासादि ।
आणि असुउणि ज ईणि नयरि, पडोइ वडइ विवादि ॥४३७॥
तिणि ठूठइ ते उलखिउ, ए अन्ह पेत्ति वलति ।
आणि भलेरु भेटणू, देउल-^८मज्झि मिलति ॥४३८॥

१ ‘घत्परवइ’ या २ ‘तिहा मप्याणी’ या ३ ‘नर करि’ या
४ ‘भीउजय-मय’ या ५ ‘निमच्छ’ या ६ ‘मछूइ’ या ७ ‘तनु’ या
८ ‘माहि’ या



- (१) देखिये पृष्ठ ६२ कडी ४३२ ३३
 'पीघड पुरसि पगु जिम पाणी ।
 ओर (२) पृष्ठ १७०-१७१ कडी ३२९
 'पमूआ जिम पाणी पीघड ।

पूग-पत्र-फल फून सिउ, आणी अमृत आहार ।
लीला लेतउ उलविउ, जाणी किद जुहार ॥४३६॥

[ठटा-जन वृत्त मूदा-बन्दन]

सउण भणी ते वदीया, नीघा पूगी पान ।
'भाई' भणी बोनाविउ, दिइ मनगुदिइ मान ॥४४०॥

[ठटा जन आत्म-परिचय]

जूठाणइ जूय केतलू ? अकेनू जाण जूमर ? ।
उडइ नइ उडिउ सहड, ते अम्ह दाखि विचार ॥ ४४१॥

(वस्तु)

मित्र मभलि मित्र मभलि, मुमह वीतक्क ।
हूम्र स्वामी मोघल-तरणउ, कु अर कोडि वचण सहित्तउ ।
मइ गय हय मय पच, लेइ ए पाटण पेवण पट्टतउ ॥
ते हला रसि हारिउ, नाक पाग कर वत ।
ईणि जूठाणइ जूमर रमइ, वलीया भड वावत । ४४२॥

(चउपर्द)

मूघ न वाई देखू म्वामि !, जूउ-दड पडइ ईणि ठामि ।
मसिवर एक-मू ठि हारीइ, रोजा वात्रिइ बाजी सारीइ ॥४४३॥

[कामनेना गणिका जूठ-प्रवण]

अवे जगु पाटण मज्जि पट्ट, दीठउ देउलि लोक बहुत ।
'कहि भाई ! कोलाहल किमिउ ? ए अण-खाघइ पाणी रिमउ ६६४
'कामनेना जे नाचिणि नाम, लिइ पच सइ सोना द्राम ।
मुहणइ सोमदत्त माणिउ, ते इहा ऊहडी नइ आणीउ ॥४४५॥

१ 'सह वदीउ घा २ केता रमइ जूमर' घा ३ 'त मुणि' घा

‘गणितानी भा धरिनि रडीन, गिहारीउ मनाबिउ मिन ।
होनरी मंडिउ गाउउ डोः धरि धाराउ १ छुद सह’ ॥४४१॥

[गदगवग वषा]

‘गदगवग वषा वानद गुणि मिन’, ए गादु धरि गरद धगत्र ।

[द्र ठा-वषन]

‘देव’ धोरउ तपी धयाउ, मागी राउद योडिउ याउ ॥४४२॥
एक भोटगिया ठठी भाः बीजउ मरि मूडिउ गाडा ।

त्रोजी राउल-वार्द रौद ‘दणि वारण टनीद मोंड’ ॥४४३॥

ते जावा पुहुनु प्रासादि, होनरि दोठी वडनी यदि ।

‘गर तवयोवा छद नवरगि, ए योतिम्यद धम्टारद ‘म गि’ ॥४४४॥

एकदति योतद ‘गुणि साह’ धम्टि परठया छद राउत घाह ।’

मेठि-नुमर ऊचरद गुजाण ‘भापण विहु जण एह प्रमाण ॥४४५॥

तव तीणद विहु वारण वही राउति वात विमासी सहो ।

सदयवच्छि विचि लीघा साद, तेह तउ निरवान्यु वाद ॥४४६॥

[सदयवत्स वृत्त चतुर पाप]

एक सेठि हारिउ ताम, ‘भाणि विच्छे दिइ दर्पण द्राम’ ।

सेठिइ जे जण बोलाविउ, धरथ धारीसउ लेई भावीउ ॥४४७॥

धन रेठी ओडिउ धारीस, एकदति तव दिइ भासीस ।

भाघी थई लेवानद धय, ‘दरपणमाहि गिणी लिउ गर्य ॥४४८॥’

[गणिका ११८ उपहास]

हाथि ताली देई हसिउ लोक ‘राडइ लीघा टका रोक’ ।

अ तरि तेडावी डोकरी, काढी बाहरि बोंहि धरी ॥४४९॥

१ ‘इतनी धरि भावली रडील’ २ सुदय भणइ सुणि द्र ठा मिन
अ ३ ‘ए मुह’ अ ४ ‘भगि भा

इकि छाणिइ, इकि छाटइ छारि, इकि खोजवइ अनेरइ सारि ।
 एकदति तव 'ओपी इमी, राय राजा छवि राणी जिसी' ॥४५५॥
 तेह-नणइ छाकरि नही छेइ, डोकरी देखी हरखी तेह ।
 बादिइ विवहाराइ हरावी, टका टोक राक लेइ घरि आवी ॥४५६॥

[गणिनाप्रति कुन्मन्त्रीजन घृणा]

प्रागप्राणा घवनहर धनी, अत्रला मत्रे आवी उद्धसी ।
 "कहउ किमी परि जीतउ वाइ ?," बोली न सकइ बईठउ साइ ॥४५७॥
 जीणइ घणा घामन्या ति छाठी, कला बहुतरि सिउ बृद्धि नाठी ।
 त्रिणि दिवस जि लाघणइ लाघी, घणे घाबू ए कीवी घाघी ॥४५८॥
 परब्या पावइ पुरप बीमनी, नयर-माहि नग मघनइ हसी ।
 "नाई रे छोडी ! पूछइ काज, हारिउ वाइ 'विगूती भाज'" ॥४५९॥

[सद्यवत्स प्रति कामसेना-प्राकरण]

काममेनि सर्भतिउ स्वरूप, ते राउत-नू 'जोईइ रूप ।
 तेडिउ सघलउ सपरदाउ चातुरि चतुर जोएवा जाउ ॥४६०॥
 पुन्ती मडपि 'मू घा दीती, वाजिउ 'गजर सधुडिउ गीत ।
 बशकारि सातइ सुर सारि, आलति कोधा आलतिकारि ॥४६१॥
 उडीमान उडवीउ तान 'भृगुभृगु करइ मृदग रमाल ।
 धुरी घूमानी घूरली आदि रही रेख 'रविनइ प्रायादि ॥४६२॥
 नयण 'वयण मन मस्तक नास, हावभाव कटि-तणा कलास ।
 उर कर चरण नगइ वानवइ इम जूजूआ अ ग जानवइ ॥४६३॥

१ 'देखी' या २ 'विगोई' या ३ 'जोय' या ३ 'जोवा नइ
 तिहा' या ४ 'मधि आदित' या ५ 'गुहर मुद्ध मगीत' या ६
 'रणभिण' या ७ 'देवनइ' या ८ 'मयण' या ९ 'करइ' या

[कामसेना विह्वलता]

उत्तर ऊत्रेणी पति दिट्टु बन्ठउ मत्त बारणइ बनिट्टु ।
कामसेनि १ थर्द काम विवाम, माणस याइ न जाणइ माम ॥४६४॥

१तेउ घलावी भणी भवाम, नूटो नाडि न १सनकइ सास ।
नयर १नरेसर बाहर करइ, इसिउ पात्र भण-नूटइ मरइ ॥४६५॥

[उपचार]

राजवद जई जोई नाडि, एउ विकार नही भम्ह पाडि ।
देस विदेसी बीजा बहू, राजा भायसि आविउ सहू ॥४६६॥

एकि भणइ “ऊतारउ १आच,” एकि सेक दिवरावइ पाच ।
एकि भणइ “आलस छाडीइ,” एकि १भणइ “मडल माडीइ” ॥४६७॥

एकि भणइ “भम्ह हलूउ हाथ” १एकि भणइ दिइ कडूउ कवाप” ।
आपापणी कला सवि बहइ १गुणीया नइ वईद गहगहइ ॥४६८॥

[गूर्जर वद्य निदान । घनग रोग]

गूर्जर वद्य तिह्वारइ हसिउ, जाणे घरणि घनतरि जिसिउ ।
दीठइ रूपि सरूप ओलखइ, वद अनेरु रा आगलि भखइ ॥४६९॥

“एहनइ अगि अगलउ अणग नरवर १ को दीठउ नवरग ।
महूरति एकि मूर्छा भाजसिइ, मिलिउ लोक देवा लाजसिइ” ॥४७०॥

तास वचनि कालमुहा थाइ बलिउ चेत १ वद ऊटथा जाइ ।
बाहरि वरतइ भीडाभीड, प्रमदा पचबाणना पीड ॥४७१॥

१ ‘हइ कामिनी काम’ घा २ ‘लेई’ घा ३ ‘लाभइ’ घा ४
‘नरेस न घा ५ ‘इसि ते’ घा ६ ‘साच’ घा ७ ‘कहइ’ घा ८ ‘एक
पाइ छत्रीमु काय घा ९ ‘गुणीया नोकारकि’ घा १० ‘वेगि ऊठी’ घा

[राजपुत्र प्रानयन उपाय]

नाचिण १जस नायिकीदे नाम, ते तेडीनइ कहिउ काम ।
'तू २डाहा डाखरी भ जेडि, रवि ३मदिरि जई राउत तेडि ॥४७२॥
उत्तरि बईठउ ऊची पाटि भड जे पाखलि वीटिउ भाटि ।
केकि-कना सिरि भाटि भमाल, आगलि ऊडण अनइ करमाल ॥४७३॥

[वडा एकदति विरोध-दशन]

एकदति तीणि बोनिइ बली, ४रीमिइ पुरप एक ऊछरी ।
'जिणि ५हलूई कीधी आज, ते टीटउ तेडिइ ६कुण काज ? ॥४७४॥
राय राणा ७भूनलि ८जेतला विवहारीया कहूँ केतला ? ।
करइ साद कोडिसर केडि, केहा गुण तू राउत तेडि ? ॥४७५॥

[गणिका द्रव्यहरण नपुण्य]

पारसि सिउ जउ कीजइ प्रेम, पाडी दिइ पीयारु हेम ।
घोठी वानी तउ घणउ विराम, सारी लोइसू ९सारा द्राम ॥४७६॥
दोसो १०कोर कापडा दियइ, लूगड माहि ति विमणू लीयइ ।
काज सुरहीउ सारइ घणू, आपइ सदा सुरहू घूपणू ॥४७७॥
सोना काजि ११किह्वारइ १२वाहि, सूघ चउय लिइ सूना माहि ।
पहिलू घाट घडीनइ हाटि, घरि आवइ घडामण माटि ॥४७८॥
बाभण सिउ बहु नेह म करइ, मास पक्ष पूठिइ परिहरइ ।
भाट भलउ हुइ दोह वि च्यारि, जा जूवटइ न थालइ हारि ॥४७९॥

१ 'जे' घा २ 'गाढी' घा ३ 'मडवि' घा ४ दीसइ घा
५ हू हानू घ ६ 'तू' घा ७ 'भपति' घ ८ ज भना घा ९
घाला' घ १० कापड वारु घा ११ जिह्वारइ 'घा १२ पाहि' घ

तबोलोनी धोटी तीम, जिहनइ पान पाचनी सोम ।
टीटा दखी टाले द्रोठि, साहमा जईनइ मनाव सठि ॥४८०॥

माली आपइ ^१सुरहा फल, जे वाह नइ अति बहुमूल ।
मोटा भोटो अनइ छड छक तेह-नइ दोजइ त्रिलु छेक ॥४८१॥

फुटरसी नइ ^२फरफट कूच, हाथ किह्वारड न मेल्लइ मू छ ।
ते उमगूनइ म दसि अडाउ कूडा करगर लाउ नसाउ ॥४८२॥

[धनवान परीक्षण]

नाणाबटि नाणू ^३निरखीइ तिम आपणाइ पुरुष परखीइ ।
^४जिहा जिहा दीसइ द्रव्य जतलउ, तिहा आदर कीजइ तेतलउ ॥४८३॥

[काममेना वचन]

कामसेना नइ चडिउ काय नायक^५ प्रति दीध निगप ।
^६ए बूढो-नणा बाल म विमासि राउन तेडो आणि आवासि ॥४८४॥
गई रामा ^७रवि मडप भणी, कही ब्याधि ते कामिएण नणा ।

[सदयवन्स प्रति वचन]

^८सुणि सावगजन माची वान, काममेना तू राता रात ॥४८५॥
हू पाठवी तीणइ तू अ पामि ^९पसाउ कगे अम्ह आवि आसागि ।
अथ अनेपि अछइ ^{१०}अम्ह पणउ त वनिना विक्रम तू अ-तणउ ॥४८६॥
बार म लाउ बहिनउ अद दव । टाला तणी ^१ टनी छद टव ।
मरइ अगूटइ मोटू पात्र तद दाठद दु म फीटद गात्र ॥४८७॥

१. उरस्य नैह मन मा २. फाफट' मा ३. 'क' पस माउ' मा
४. 'परखीइ मा ५. जहनउ भाव दीसइ' मा ६. रधि' मा ७. 'महा
मा ८. 'मति मा ९. विभ्रम' मा १०. व करिषिउ' मा

[ठूठा प्रति मूठा वचन]

मुद्द भणइ 'सुणि ठ ठा मित्र', इणि माडिउ एवडू चरित्र ।
'इम तडइ १निम कारण कहइ एहू वात विमामगु लहइ' ॥४८८॥

[ठूठा-वचन]

ठ ठू भणइ ३ 'नवि जाणुउ भेद, ग्वारि राड-तणइ मनि खेद ।

'दहरा माहि दूहवी जेम, डम बीसरइ न डोवरि तेह ॥४८९॥

इणि वोमासी बाह्या वीर, इणि ४खाइ पाडया घर घीर ।

'इणि वमाड विगाया भना ५इणि रोल्या राउत केतला ॥४९०॥

वेसा-नणउ म करि बोसाम ६वमा-वयण ते मुहि गली पास ।

'म'छ जेम मास नइ घरइ जीव तणउ जीवी ७परइ ॥' ४९१

[मूठा-वचन]

मुद्द भणइ 'हू अ जागू मटू वमा तणो वात छइ वहू ।

जउ भाई' भय बीजइ एह, छयल्लपणानउ आविउ छट ॥४९२॥

[ठूठा-वचन]

'एह अनरउ नही उगाउ एहनइ विपय-तणउ विवसाउ ।

इहनइ मनि माटीनी आम, इहनइ लहइ विदसी वास' ॥४९३॥

[परिचारिका निवृत्तन]

परिचारिकि जे १पूठइ वही, तीणइ घरि जईनइ कारण कही ।

त घीरउ आविदउ करइ, पणि ठूठीउ २कूटाइ करइ ॥' ४९४॥

१ 'निम घ २ प्रति घा ३ 'मइ घा ४ 'हारिउ वाद विगोइ जेह,
५ बीसरइ' घा ५ 'ध्या छइ' घ ६ इणइ व्यास विगाया घणा घा
७ माणस जेम मछिनइ घा ८ 'वहसी' घा ९ 'पूछो रही घा

तत धीजी बोनाजी वाल "जई चानवि ठूठउ चडाल ।
मानी नाच लोभवि धणू कामिणि काज कर आपणू ॥४८५॥

'तत तीणइ गिननी नइ गूट हूनावो वानाविउ ठूठ ।
नाच-तणउ देणाडिउ लाभ वाइ ए क्षित्री कारणि नाम? ॥४८६॥

[ठूठा ने माषन प्रनोभन]

'लाच आच नजि ठूठउ सहइ वाई कयन धणूख वहइ ।

[ठूठा-वचन]

'कामसेनि-लहुडी गिनलेख तेह उपरि माहुरी अभिलेख ॥४८७॥

ते जउ रातिउ मइ सिउ रमइ तउ ए गेहि तम्हारइ गमइ ।

बीजू 'काइ म बोलि आल, 'ठूठइ सरिम न चालइ चाल ॥४८८॥

मनि आपणइ धाताचीय साच, वेशा ठूठइ लीधी वाच ।

चतुरा राउ ळठाडधउ तेहि आणिउ गयगामिणि नइ गेहि ॥४८९॥

[कामसेना धावासे सूटा गमन]

नाचिणि तर आवतउ देखि, आपणपू मवरी सुवेदि ।

कण्य-कलस भरि निर्मल नीर दिइ आचमण विच्छे दिइ वीर ॥५००॥

[सत्कार]

धादर मिउ धवास मभारि, 'आणी आवरजइ वर नारि ।

भोजन भगति युगति जूजूई, मिलिया राति सुरगी हुई ॥५०१॥

वडइ भलकि जागिउ जूपार, दातण करिवा काजि कू धार ।

कामसेनि आयस उह्लासि, दातण लेईनइ आवो दासि ॥५०२॥

'दातण सारिइ 'ऊगू सूर, आविउ ठूठ म करउ धसूर ।'

बोडू आपी बोलइ बोल, "राउत । रखे करउ 'विगोल ॥' ५०३॥

१ हूगई' ध २ वाटे करीनइ सननी सूट' धा ३ वेशा-वचन धा

४ 'बहु धा ५ इर्यु मणिइ ठूठु चडान' धा ६ ते धावनेन करइ

धपारि धा ७ 'सभरइ ध ८ 'धति काम ध

कामिणि 'कपट न विमास्यू चीति, खेहू खडग विलायु भीति ।

[घृतस्थान प्रति गमन]

भारति टनी ऊतारा-तणो भट चालित जूध्र 'ठाणा भणी ॥५०४

ता जूमर बईठा जूवटइ, जा नगड भवर 'कोइ ऊमटइ ।

ता लगइ कूडी काढइ मूठि 'पडिय-सित बोलाव्या ठू ठि ॥५०५॥

तीगइ जाणित नवउ जूमर ठिगि सधने 'जई कीउ जुहार ।

पड चापो बईठउ चउपट्ट, नही नर बीजा 'मानि मरट्ट ॥५०६॥

तीणि थानकि सपराणा सही, एकइ पुहपि परोक्षा लही ।

[मूग-चूतधातुर्ष परोक्षा]

धाघउ धईनइ बोलउ इसित 'मूदा । 'सूध पूछीइ किमिउ ? ॥५०७॥

गउन'रमतउ म करि'मि कारिण इणि पडि जीपिसि ओडथा प्राणि।

लाख लगइ हू पुरिस हेम, 'ओडि प्ररथ मनि घाणे एम ' ॥५०८॥

[प्रविष्ट घूनकार उपस्थिति]

धाविउ सूद्रक मकनि'कुमार धाविउ वीरमद्र मँकार ।

धाविउ कामसेन नइ कालूउ धाविउ ' रिगवत रोमालूउ ॥५०९

धाविउ वकट नइ वाघनु धाविउ गीमट नइ राघनु ।

इम जूटवइ जूमारी मिल्या, वीरइ वीर बईसना कल्या ॥५१०॥

१ 'कपट न विमास्यू' घा ३ 'वामा' घा ४ 'को न घा
५ 'पुरुष एकमिउ' घा, 'बइ मूठि' घा ६ विवि दीघउ ठाहार घा
७ घुनि घा ८ 'सूध' घा ९ 'तिम घाटे जिम बाणइ तेम' घा
१० 'रोणु' घा

[सद्यवत्त षूतत्रय]

सद्यवन्ध नइ सधतिगुमार १ जि जण रुडा रमइ जूमर ।
वावन वीर बहुत्तरि राण उपरि प्या भड भागड दाण ॥५११॥

हेमा माहि हराविउ राउ २ जोनु सोवन लख्ख सवाउ ।
तीणइ बीजा ऊगरि उद्रक, रमता घिउ साम्हउ सूद्रक ॥५१२॥

सूद्रक-सरमी समवडि जाइ वीरिइ वीर न पाछउ थाइ ।
बिहु जण जमलू दीसइ जयत सूदइ पोडू पाडिउ पहिल ॥५१३॥

काल पास शिव जोगिणि जेउ जाण ३ जूम-तरणा भल भेउ ।
ते नर हारी ऊठया आधि एक भणइ । “ठिग ठू ठउ सापि ॥५१४॥

धन ऊसरडी ढिगलु करइ, खोडउ वईठउ खोनउ भरइ ।
ऊठिउ कुमर ऊतारइ जाइ, धन वेचताउ कुणइ न रहाइ ॥५१५॥

[षूत इव्य दान]

अण मागता ओडावइ हाथ, सूदा-जम जाणइ जगनाथ ।
४ सूदउ सविहू आपइ जीप, जूम रमिवानू एह जि कीप ॥५१६॥

[सार्वलिगा धर्ये वस्त्राभरण विक्रय]

खउपट मल्ल चुहटइ मचरइ, दोमी हड दीठइ सभरइ ।
५ सार्वलिगिनइ सरखा सार बुहुरइ नानाविध शृ गार ॥५१७॥

कस्तूरी केसर कम्पूर ६ धूप धूपणा अनइ सी दूर ।
७ गार सुगध वस्त ७ घण लिद्ध ते बाधी दोमीनइ दिद्ध ॥५१८॥

१ ए बि' भा २ सूदर' घ ३ 'जवटनु'घा ४ 'घाए' सविहू कारण
जीप, वूडे रमता घछइ केही कीप ?' घा ५ पहिरखा पवित्र,
न तरि बुहुर्या वस्त्र विचित्र' घ ६ 'धुति घूपणइ सरिष म
७ बहु' घा

कामनेना घरि जण जेतला, ते जोता होडइ तेतला ।
 ता अढलक 'भावइ आफणी, अणतेडिउ ऊनारा भणी ॥५१६॥
 हमगमणि नइ आपिउ हेम, माडइ लेखा अधिऊ प्रेम ।
 ताणइ 'रड-मनि फीटो रीस, एकदति तव दिइ आसीस ॥५२०॥
 भोग भगति आर्वाजिउ इसिउ, च्यारि राति राउत तिहा वसिउ ।
 दिन पचमइ व्याहाणा वार,हुई ह्योआर-तणी 'मनि सार ॥५२१॥

[म्यान मध्यगत प्रमूह्य काचली]

'असि ऊतारी जोइ जाम, अबला ओढणी बलगी ताम ।
 वेडउ भाटक्ता खडखडी, सूकी खोली आगलि पडी ॥५२२॥
 खोलि माहि अमूलिक जिसिउ, तेह सरीखू वहीइ किसिउ ? ।
 सवा कोडी 'तणी काचली, चद्रवदनि 'देखीनइ चली ॥५२३॥
 कामनेना 'प्रभु लागी पाणि, "स्वामी । जि काइ जाणत माणि" ।
 मनि आपणइ सुणी महाराजि, अलविइ आपी अबला काजि ॥५२४॥
 हूउ चनुर बोलिवा सचीत, तव जूय ठाणइ चमकिउ चीत ।
 जा 'आराधण आरति हुइ, तिहा लगइ जई आविउ तोइ ॥५२५॥

[कामसेना कचुक परिधान]

कामसेनाइ पहिरी काचली, रगिड राज-भुवनि 'समवली ।
 कीधउ साहूतउ सिणगार, 'उपरि एकाउलि मोती नुर ॥५२६॥

१ ऊनारा भणी, अणतेड्यु आविउ आपणी' धा २ 'दामइ धा
 ३ 'समाल धा ४ इसि' धा ५ 'ओढणि बीधी' धा ६ बेरी ध ७ 'तोणइ
 दाठइ धा ८ जई वनगी धा ९ हऊउ चनुर वावा सचति, तव जू
 टाणइ गिउ मन-माति धा १० 'आराधण' धा ११ 'साचरी' धा १२ 'उरि' ध

पात्र राउ ईसी पालखी, साधिइ सपरदाउ नइ सखी ।
चतुरि चिहुदिसि घालइ ट्रेठि, चहुटइ साम्हउ^२मिलिउ मेठि ॥५२७

[अष्टीए काचली जोई]

३सेठिइ सां बोलावी नारि, रगिइ जाती गज-दूमरि ।
रुडउ रतन जडित कबूउ, दखो नर निरखतउ हूउ ॥५२८॥

[चोरी मा गयेनी काचली घोसखी]

निरखी उलखीया अहिनाए ४तु हूउ युगति विमासइ जाग ।
रा मदिरि मानीतु पात्र, किम एहि सिउ "पडावइ स्यात्र ? ॥५२९

[महाजन अष्टी पास परिघाद]

पाच सात तेडी आवत, मनि आपणइ विमासिउ भत ।
नुहि एकला जि पुरुष प्रभाव ५मिली महाजनि कीजइ राव ॥५३०॥

[महाजन अष्टी नाम]

तेडिउ तेजपाल ६तारसी, तेडिउ ६घाघउ नइ धारसी ।
बहिलउ थई नइ वीरम तेडि ७जेसल नइ करणउ करि केडि ॥५३१

१ तेडिउ सतिग ११सामल सार, आवड १२चाहड अभयकूमर ।
पाल्हउ १३पासनाग जसनाग, माहव मोकल नइ वरणाग ॥५३२

१४घाईउ धीघु नइ जसराज, पेशु पूनुसाह महिराज ।
१५हाडु हरपति अनइ हरराज, हामु जागु नइ मकराज ॥५३३॥

१ 'भागइ लि' घा २ 'जोई बोलइ घा ३ 'चुहुटइ' घा ४ 'एह'माव
५ 'खराव' घा ६ 'मिल्या सामत घा ७ तेजसी घा ८ घाणिग' घा
९ 'नही जुगति जे कीजइ नेडि' घा १० 'सोखउ' घा ११ 'ना
साहारा' घा १२ 'भोघउ' घा १३ 'पासउ घातउ मान माइण वहुउ
माइण साहास' घा १४ १५ 'मा सीटी घा माँ नथी

‘राजु भोजु नइ वलोकु जगु, नाइउ नीसल नरपति नगु ।
घरणिग धारण ताहरू काज, ऊठउ महाजन मिलीइ आज ॥५३४

‘भासड पासड पूनसी सेठि, मिलिउ महाजन वडली-हेठि ।
चमक्या सवि चुट्टानी बाट, हू हू ^३करी सभेरइ हाट ॥५३५॥

[‘हाट माहि पाडी हडताल’]

‘हाट माहि पाडी हडताल, चाल्या कामसेनाना काल ।
मायू घूणइ बुहरइ ‘माम, ‘गू गलि करी वीहावइ गाम ॥५३६॥

दनुपेठि मेलावउ करइ, ‘राउलि जई पोकारव करइ ।
‘रायगणि जई ऊभा रहइ, ‘नामइ काध, नवि कारण कहइ ॥५३७

[राजसभा प्रवेश]

मान देई बोलिउ महाराज ‘मिलिउ महाजन केहा काज ? ’ ।

[श्रेष्ठी वचन]

तउ श्रीमुखि बोलाविउ सेठि, ‘तम्ह ऊपरि कुण ^१‘जोइ कुट्टेठि?’ ^२५३८
‘स्वामि ! कुट्टेठि न जोइ कोइ, अम्हे वारणीए न बसिवू होइ ।

जे जोईइ ^३‘निभय नइ काजि, वारी हुइ ते ताहरइ राजि।’ ^४५३९॥

[सन्धि वचने प्राशङ्कित राजा]

मालिवाहन समस्या लहइ, नद-लोवनइ निश्चिइ कहइ ।
बोहता काई म ^१‘करिसिउ माम, निर्भय ^२‘ध्या भालउ नर-नाम’ ^३५४०

१ ‘घा लीटी’ घ मा नपो २ घा लीटी ‘घ’ मा नपो ३ ‘करइ घ
४ ‘हाटि तवे’ घ ५ ‘सान घा ६ ‘गूगरि’ घा ७ ‘हाहुलि साहुनि
त पोकरइ घ ८ ‘राउ भागलि’ घा ९ ‘सिद नामइ’ घा १० ‘करइ’
घा ११ ‘वारिलइ काजि पइइ देव’ घाहरइ’ घ १२ बोलु घा
१३ ‘यई हवइ माखउ नाम’ घा

“रखर ! तर तीह ताम न हीद 'गदप कटा तहइ सहू वाइ ।
‘तेह-सणइ उर मंडण घनि सरय समोणइ हू ‘निहि हुरिया ॥५१॥

[राजा दानिवाहा-बचन]

राइ मा बोनायो रमणि वहि वांगना समोपी बचनि ? ।
पूछया तणउ ‘वदूतर ताप तू मूनी घान्या नही पाप ॥ १४२॥

[कामसेना-बचन]

तीणि बचनि चमसी तइ चिति, “स्वामी’साभलि ग्रह घररीनि ।
उत्तम मध्यम लामा भला साथ चोर बहोइ वेतला ? ॥५३॥
भाठ पृहुर एकि मायइ जाइ, भोला भूपति । पूछइ वाइ ? ।
वाट, वृक्ष फल, नइनू नीर नयर-‘सोहा मिणि तणू शरीर ॥५४॥
‘सतति सुपुरिस बेरी दानि, स्वामी ! सविहू सरोटा मानि ।’

[मप्रसन्न राजा]

तीणि बचनि रोमाव्यउ राउ, कामसेनाइ कीघउ कुपसाउ ॥५५॥
हडइ ‘बोलिइ नापइ राइ मारी बूटी पूछउ माइ ।

[चोरी नु माल]

राज-दूतइ रा मायस लही, गयगामिणी चोर जिम ग्रही ॥५६॥
निवड वधि बाधी नइ नारि मारइ महिला विसमे मारि ।
इम विनडी ती न कहइ वात, मूली तणी पूछमु हुई सात ॥५७॥

१ ‘दूडू कपट’ मा २ ‘तहनु उरि जमडण प्रछइ’ मा ३ ‘ते
पछइ’ मा ४ ‘तू उत्तर’ मा ५ ‘वातइ सा चमकी बीति’ मा
६ ‘सालि’ मा ७ ‘सुपुरिस दाता घणा छइ म ८ ‘पूछी बहर’ मा

बाजि 'काहल लोक घण मिल्या, एकदति-नइ कहिवा चल्या ।

[एकत्रित गणिका-नाम]

एकदति ठठी उद्धसी, मिली २भेलि गणिका-नइ किसी ॥५४८॥

हीरू हासलदे 'हरखलो नारी, सीगालदे सोमलदे सवि वारि ।

काळ करणू नइ काहलो, नागलदे नामलदे भनी ॥५४९॥

साळ 'महिजू नइ सहिवली, वाढू मीणलदे वरजली ।

'नागू नायकदे नागिणी भाजू माह्लणि 'नइ कर्मिणी ॥५५०॥

राजू रतनाणे रुपिणी, भाळ भावलदे रसिमिणी ।

सुहडी वडी 'विलासिणी घणी 'राज भुवनि आवी हणभूणी ॥५५१॥

[गणिका-मपुणाय राजसभा प्रवेश]

'रायनइ सवे दिइ आसीस, सु दरि 'गाढउ ढाकिउ मीस ।

राज' 'राड-परि सिउ रोस?, कामनेनाइ कुण कीघउ दोस? ॥५५२॥

मूली भणी चलावी स्वामि । ए आचार अछइ तम्ह गामि ।'

[राजा वचन]

राउ रोसाविउ बोलइ इसिउ 'का रे 'राडु! पूछउ किसिउ? ॥५५३॥

सातउ चोर, नइ थाइ साघ अनइ बली पूछउ अपराध ? ।

नयर-सेठि-बेरो वाचली घर 'फाडिउ घरवा रत 'कनी ॥५५४॥

१ 'सागि घा २ 'श्रेणि' घा ३ 'कामलि किमा,
घेनू कीमिणी अ त्हुणि किसी घ ४ मूदव' घ ५ 'नाकू' घा
६ 'कारेमिणी' घा ७ 'सुहामणि घा ८ 'रगिइ राज भुवनि सवि
बनी घा ९ 'वटी' घा १० 'माह्लइ माह्लइ घा ११ 'काय किस्पु
ए' घा १२ 'काम कहिरउ घा १३ 'भाजू' घा १४ 'बनी घा

पतिनू मूली घानउ पात्र पदद 'पूठ सधनू मात्र ।'

[गणिका मन भय-मचार]

इम्यू 'मूणी तइ चमरी हीई वेगा भएए "न ऊमा रहीइ ॥१५५

चमकी चोति, वसिउ सकेत 'ए ठू ठउ हूउ अम्ह वेन ।
भागइ यदि विगूती जाणि, उपरि अधिबी हाणि कवाणि" ॥१५६

एवदति बोलइ प्राकुलो, 'काइ रे सवि मू-पायलि मिली ? ।
रोता नवि छूटउ छोगरी जोउ घोर चिहू चहुटइ फिरी ॥"१५७॥

[चोरनी शोषणा]

घउरासी चुहटा नइ ठाणि पुर पइठाए-तएइ अहिठाणि ।
अरि चाचरि चुहटइ चउवटइ, इकि चाली जोवा जूवटइ ॥१५८॥

[चूठ स्थाने सदयवत्स मित्राप]

जा जूवटइ बहु रमइ जूपार पाखलि प्रमदा मिली अपार ।
राउन'ताहरी रामति बालि ' ए काचला हुई अम्ह कालि' ॥१५९॥

चोर तणी परि बाधी बधि कामसेनि आहणिवा कधि ।
मूली भणी चलावी सही ' सुणी वात न रहिउ सासही ॥१६०॥

[वतात श्रवणजय प्राघात]

किरि हाकी ऊठिउ हनुमत, किरि 'कोपानलि चडिउ कृतत ।
चडवडि चुहटउ चालिउ ईम किरि आविउ भारथ गुरु भीम ॥१६१॥

मूली हेठि 'दिट्ट सा नारी, लाजिउ मनि आपणा मभारि ।
वाढथा 'बध विछोडी वेस, 'रे प्राव्या उत्तर हू देस" ॥१६२॥

१ 'सूधू' या २ 'भणिइ' या ३ 'कोपानलि' या
४ 'दीठी नारी' या ५ 'बधन छोडी' या ६ 'मावु सिबहू' या

[तनार प्रह मद्यवत्स-युद्ध]

त समलि 'तव चडिउ तनार, बोनाव्या भोलगू अपार ।
घाटि धरोनइ बहु बाधिउ बधि 'असि लोह सिउ आहणु कधि ॥५६१

विहू दिसि चउरा पायक मिल्या, लउहड लाकड लेई बल्या ।
एक तणो ऊदाली डाग सूदइ सविहू भागा अग ॥५६४॥

'हणि ! हणि !' भणी, लिद्ध हयीमार, हाकइ ताकइ'घाइ अपार ।
जे सुभइ भला ते पाखलि'फिरड, आघउ'थईनइ घाउ न करड ॥५६५

हठि चडिउ तलार हाकलइ जे जीव राखी 'रहज्जी कलइ ।
भूटि घरी मनाव्यउ भाक, कोटवाननू बाढयू नाक ॥५६६॥

'जा बापडा ! म बोलिसि ववे, गाढा सविहू ठतारू गर्व ।
भा भोलगू जि विहू बलउ लहइ तिह मारता किम कर वहइ ? ॥५६७

मोकलि जे गाढा बलवत 'मोकलि जे सूरा सामत ।
मोकलि राउन रणि वाउला, मोकलिजे अगि ऊतावला ' ॥५६८॥

[तनार-नवमासण]

बलो तलारि विमासिउ डमिउ, 'छेदिइ नाकिइ *दूटोइ किसिउ ?
जउ नरवर वीनवीइ अम, तउ मू ठाकुर'पेडमिइ ठाम ॥' ५६९॥

[राजा प्रति निवेदन]

जण मोकली जणाविउ '“स्वामी”, 'दत्य कि दाणव भाउ सग्रामि ।
काममेना-ना बाढया बघ,अम्ह-सिउ कीधी घालि' 'अणघ' ॥५७०॥

१ 'तुहि' घ २ 'लडग' घा ३ 'धीर' घा ४ 'भमइ' घा
५ 'ई कोइ नवि भागमइ' घा ६ 'घ गि जे घाठला घा ७ 'जीवइ' घा
८ 'फोडमि' घा ९ 'राउ' घ १० 'दव' घ ११ 'मनू' घ

[सार्वभौम प्राणयोग निश्चय]

१गई समशानि सजाई करी, भाट-तणइ मनि पईठो ३धरो ।
नीधु ऊचु चडइ अपार, वरइ वेग नइ लाई वार ॥५६८॥

[सार्वभौम प्रथम प्राणना]

देखी दिवस तणी ३गति खीण, करी सनान दान दिइ दीण ।
करइ साखि त्रिवम नइ तरणि, १जनमि जनमि ३सूदा-पय शरणि ॥५६९॥

(द्रुहा सोरठी)

सूद ! तम्हारी साय, थिउ आतरू ३भति ऊरतउ ।
हिव जोसि जगनाथ, साहसि सामलिआ ३धणी ॥६००॥

ऊने अतरि एहि, तड पहिलू पामिउ नही ।
वाहण ३विहि-वसि होइ, न रहइ नीजामा पखइ ॥६०१॥

नीसरि सूदा सायि, जीव ! भा हारी प्रीय-पखइ ।
ते जाणइ जगनाथ, नाह- विझोडया माणसा ॥६०२॥

ऊभो आस करहि, अबला आहेडी तणी ।
दरि पईठउ वि मरेहि, केसरि नइ ए किम नीसरइ ? ॥६०३॥

नाह ! तम्हारा नेह, किम ओसीकल एक भवि ? ।
जइ दस वार हि देह, ए आपणउ ज होसीइ । ॥६०४॥

माणिक मूठि ३भरेही, पडइ तउ प्रापति न पामीइ ।
नाह ३नावरइ देहि, दरसणि देखेवू थिउ ॥६०५॥

१ 'जइ' या २ 'भरी' या ३ 'दिसि' या ४ 'मु' सूदा-कारणि
या ५ 'छइ' अति धणू या ६ 'भणइ' या ६१० 'य' या टूक नवी
० 'विचिविहि' सेहि' या ८ 'जसहि' प्रायति विउ नइ पावोइ या
९ 'नावरे' या

पाना-नूवा एक, पीहरि मेल्लो 'परणो नइ ।

'मात्र' ऊनाट घनेकि, तिहनइ याइ ऊरापना ॥६०६॥

मूदा ! सउकि मुराम्ब, मनि माहरइ काई नही ।

महि समावड 'साय, क्रीघा आज अणोमरा ॥६०७॥

मिराणो काजि दीह, आक्या आवेवा तरणा ।

तिह लिखी तां 'नीह, करो 'कुडेरू दामिसिइ' ॥६०८॥

(४३५ई)

आ सहम-^१किरण नइ करइ प्रणाम, जा 'नारायण' भावइ नाम ।

आ घसममनउ 'वायउ घोर, आगलि दीठउ आविउ' ^१'वीर ॥६०९॥

[मन्पवत्स पागमन-पान *]

हउ हरिख गहगहीउ गाम, उदोजन ^१'फोटउ उदनाम ।

पानउ हउत घापणि मोम, ते अम्हू दंविइ टालिउ दोस ॥६१०॥

गम-वन्न नइ ^१'हडा ठाम, घाणी अवल समोप्यां ताम ।

[पतिजा-आलनाय पुनगर्भन]

रहिउ राति निज नारी ठाहि, चानिउ बलो विहाणा माहि ॥६११॥

पूक्या हाटि अद्यइ हयीआर, तिहि लेतां ^१'तउ लागइ वार ।

मागी वारइ विणसइ काज, ते लेई भावउे छउ आज ॥६१२॥

१ 'परह नइ' घा २ 'तिहनइ आज घनेकि ऊनाटइ' घा ३ 'साय'
घा ४ 'साय घा ५ घणीमरा घा ६ 'नही' घा ७ 'कुपेइ घा
८ वर घा ९ 'आविउ' घा १० 'आविउ वीर' घा ११ 'दनीउ
वरनाम घा १२ मूडा घा १३ 'नेवां मू घा

(गाथा)

पिय मिलणी कुल छलणी, अपजस-पडहो, वज्जसी नयरे ।
सरसव-पमाण सुखें, दुख तह होइ मेरू-सारिन्छ ॥२०६॥

(चौपई)

भुङ्ग गारी वेस्या नइ तिणइ । पाछी फिर आई तिण खिणइ ।
फिरतो बोल्यो सदयकुमार । हरखि निरखि ससनेही नारि ॥२०७॥

[सदयवच्छ वाक्य]

(गाथा)

नक-सत्ता-ससीवयणी । हार आहार वाहणा नयणी ।
जलचर मग्गा गमणी । सा मु दरि कच्छ पामेसि ? ॥२०८॥

(दूहा)-

जाण्यो ए तो बल्लहो, जिणिं सू कीघो बोल ।।
निरखि मुल कि कट्टइ मानतो, एक ज वयण अमोल ॥२०९॥
नगर भज्जे सालूर, सगति रूप पाडिया । विष ।
[.....] ॥२१०॥

[सावलिगावचन]

(दूहा)

"देहू नगरी मही अद्यइ, जस सालूह नाम ।
सगति रूप देवी जिहा, तिहा पामिभिं ते ठाम" ॥२११॥
सुणि वाणी हरखित थयो, करि सक्त सुवत्थ ।
वेम देई वेम्या तणो, आयो निज घरि जत्थ ॥२१२॥
मोरो जिस मेहाँ तणो, ईपइ वाट उच्छाह ।
राह तिमइ खोवत रहइ, कदि आवइ दिन ताह ॥२१३॥

- ७१ पवाडउ-(स) प्रवाद प्रशस्ति ।
- ७१ पसाइ-प्रसादन । कृपा से । पहीस (स) पृथ्वीग ।
- ७३ चाचरि (स) चत्वर, जगन म । लुहड (लहुड) पणा (स) लघुकत्वेन छोटपण । अगो करू अगो करू । न्हिए नदी ८७ ।
- ७९ गूडोप वानर वालि (स वदनमाला) देविये । मन्नासकृत मानमजरी । 'क्षुद्रावलि जनु मदनगूह बाधा वदनमाल । छोटी धजा ओर तोरण ।
- अगालि (स) अकाले ।
- ८० बद्धाबी (स) वर्धापन, (प्रा) बद्धावणी बधावा निमित्त । पडसहे (स) प्रतिशब्द, पडधा ।
- ८१ कइवार सत्कार ।
- ८३ करण्य (स) कनक मुवण । वच्छाहि के कारण-वच्छ देश के प्रसिद्ध जश्व ।
- ८५ मुत्ताहल (स) मुक्ताफल, मोती ।
- ८६ मुइत्ता (स) महाभात्र अथवा महत्तर स संबंधित मुख्यमत्री । मूतक महेत्ता, मुया आदि अपभ्रंश रूप प्राप्त है ।
- भूप जमलउ (स) यमल बराबरीके, एक जोडीके, एक सरीखे ।
- ९१ रुसइ (स) रुप धातु रोप कर ।
- ९२ मतिपयइपणू-(स) मनी पद । इधर पण्ठीके द्विर्भाव प्रयुक्त है । 'ह (स्य) ओर पणू (स त्वन पण) ।
- ९३ पाली-एक ताप जिसमें सात सेर कच्चा रहता है ।
- अरक-(स) अक-सूय ।
- ९५ कालमूहुअ (स कालमुख)श्याम वण ।
- ९६ ताग-अत ।
- १०० अहिठारिण-आ' प्रतिका पाठ अप्पाणि' विनोष युक्त है । स अधिष्ठान । उलग सवा ।
- १०३ सुरक सु रक सु शत पडिये । सुररा रक अत्यंत रक, ऐसा अर्थ

भी हो सकता है ।

चित्तारयण-चित्तारत्न, चिन्तामणि । जो चित्रन करे सा प्राप्र कराने वाला अमूल मणि । कित्तउ (स कियत्) कितना भी । वीय मयक(स) द्वितीया (बीज वीय) का मयक (स मृगाक), चद्र । गुवन द्वितीया की चत्रलेखा घड़ी भर के लिए दृश्यमान होती है ।

१०६ घमी घमाविउ घमीघमाविउ (एक शब्द) घमघमाया ।
सदस्यघत्स सदयवत्स पढिये ।

१०७ ऊलग सेवा ।

जुहार जयकार, जयहार जउहार, जुहार, प्रणाम ।

१०८ रउद्द रीद्र र्द्र स्वरूप भय कर ।

हास भिसिइ (स हास्यमिपेण) हास्य का निमित्त बनाकर ।

१०९ नीच-नीचु । दृष्टांत अलकार । निठाडइ निढाडइ । निरम्कार करके निकाल देना ।

११० जीहा (स जिह्वा) 'बीहा' पढिये ।

१११ भमहि-ध्रू भकुटि ।

अर्चाऱज (स आश्चय प्रा अञ्छरिय) ।

११३ ऊहटइ-(स) अवघटयति ।

११४ ताजणउ (स तर्जनकम) चावूक ।

११७ राउल-(स राजकुल) राजका निवास स्थान ।

रान-(स) अरण्य (प्रा रण्ण, जू गू रान) जगल ।

११८ दूसरी प किन्त सुभाषित के रूप में प्रसिद्ध है ।

सबल-(स शम्बल) भायु (स भक्तोदेनम्) । भत्थाः

११९ प्रणीमू-प्रणामू पढिये ।

१२२ मइमारिउ-मइ मारिउ । पढिये ।

छरइ धरइ पढिये । सयल-सवल ।

१२३ आयस-(स आदेश) आणा ।

ताडोक-‘ताडक पडिये।

१६१ मयरकेत (स मकरवेतु) कामदेव ।

१६२ खड ‘खड’ पडिये ।

१६६ ‘उदउ’ भणइ- उदय हुआ ऐसी आशीष भणती जोगिणी दाहिनी जाती है ।

१६९ डाउ ‘डावउ (वाम बाजु) पडिये ।

१७५ देवा देवी ।

१७६ सविहूगमइ सविहू गमइ ।

१७६ सुर-(स मूय) ‘मूर’ पडिये ।

१८८ पलीय-‘पलीय पडिये ।

१८९ बिलकिलिउ-‘याकुलीउ व्याकुल हुआ ।

१९१ नस मास ‘नस मास’ पडिये ।

१९४ अहिठारण-अधिष्ठान । पहिठारण प्रतिष्ठानपुर ।

१९५ पवरिस पौरुष ।

१९७ कउडी (स कपर्दिका प्रा) कवडिया कउडा । कांडी ।
द्युत खेलन मे इसका उपयोग हाना है ।

१९८ भव भगति-सारा आयुष्य भरकी की हुई भक्ति ।
हेला रमत मात्र म ।

२०१ पचार उपचार अथ म समथना चाहिए ।

२०३ उलगि ‘उलगि सु’ पडिये । उजगि स्पू सेवा करू गी ।

२०५ ऊखाणउ (स आभाणकम, प्रा आहाणउ) उपाख्यान, लोकोक्ति । देखिये कडी ३४६ ।

२०६ रण्य-(स अरण्य) । देखिये ‘रान’ कडी ११७ ।

२०९ सुरहा सुरहि (स सुरभि) मुग धा ।

२१२ घुलब ‘फुलब’ पडिये । नायवेलि-नागवेलि ।

२१४ वकडोयाकुलीय पयडोय पलास-समान भाव के लिय देखो वसन्त विलास’, लिपिसवत १५१२ वा दूहा ।

केसू कली अति वांकुडी आंकुडी मयण ची जाणि ।
विरही ना इणि कालि कालिज वाडइ ताणि ॥'

तिवास तिवास पडिये ।

२१६ कक्क 'क्क पाठ होना चाहिये' ।

२१९ धजवड (स ध्वजपट) । पडिआर-(स प्रतिहार) मंदिर के प्रतिहार के रूप में स्थित ।

२२३ सूदा पाहि-सूदा पाहि पडिये ।

१३२ आलवड (स आलपति) आलाप करती है ।

२३३ पागति (स पक्ति) ।

२३६ साइ (स स्यामी) स्वामीने साबलिगीरी सावि लीनावनीको ली

२४२ जुहार (स जयहार) जय बोलने के बाद प्रणाम ।

२४३ पुहर पथ एक प्रहरमें पट्टव सके इतना दूर । जति दर नहि ।

२४४ धूम्रा (स दुहिता का ये प्राकृत रूप है) पुत्री ।

धलू वलू पयिे ।

२४६ अयदडो (स अवधि) ।

२४९ माउलउ-(स मातृकुल प्रसिद्ध) ।

२५४ परतु-(स प्रतीक) सच्चाई का अनुभव ।

२५९ गुज्भ (स , गुह्य) छुपाने लायक कोई बात ।

२६० सउकि (स सपत्नी) ।

२६६ लीली गई लासागई' पडिये ।

२७३ सपराणो (स सप्राणा) चेतनवती उत्तम श्रेष्ठ ।

२७८ जमहर (स यमगूह प्रा जमहर) राजपूत इतिहास में गनु का विजय दस के राजकुल की महिलायें गमार करती थीं । ये अग्निकुंड में मस्मीमृत हाती थीं । यमगूह प्रवेश अथवा आत्मघात का अर्थ में प्रयुक्त है ।

२८६ सीदाता (स सींद घातु) टुसित होना टुग पाने हुए ।

२८७ गागेय भाष्य । माणिए अभिमान रमने में । कविता महाभारत

के पात्रों का अच्छा परिचय इस प्रशस्ति से प्रतीत होता है ।

२९१ घड वाहमि बड (स देश) वाहक ने बर्धापनिका दी ।

बढामणी (स बर्धापनिका) अभिनन्दन ।

२९३ सौकिइ-सौमिइ (सोमाडें में) पाठ ठीक रहेगा ।

२९९ पाधरउ-(स प्राध्वरक) रास्ते में पाउ से चलने वाला मामूली आदमी ।

३०० बारहट्ट-(स द्वारभट्ट, प्रा में बारहट्ट) जा लोकभाषा में 'बारोट' नामसे प्रसिद्ध है ।

३०१ भेलउ- 'भेलउ पडिये । मिलाप कराया । हर हेत हर (ईश) के कारण से ।

३०६ प गुरण (स प्रावरण) उत्तरीय वस्त्र ।

३०७ मउडद्वय (स मुकुटबद्धक, प्रा मउड गू माड) । मुकुट को धारण करने वाले । 'मुडुघा शब्द इससे आया हुआ मालूम होता है ।

३०९ सेणाहिय-(स सेनाधिप) ।

३१० वेयभूणि-(स ध्वनि, प्रा झूणि) वेद का घोष ।

३१२ उपान्त्य पक्ति को सुवार के पडिये - 'आगइ कामुकीय कामिनी अनइ वस तनिसि ऊजली ।'

३१४ रलीयाइति-(रली आनन्द के अर्थ में) आनन्दित ।

३१८ खेवि-(स क्षेप) वेग में जो चडते हैं । सालिहु त (स शालि हीत्र) अश्वशास्त्री । लक्षणा से सब शुभ लक्षणोपेत अश्व का बोध होता है ।

३१९ पात्र नत की । इस शब्द अपभ्रंश के रूपमें पातर अर्थात् सामान्य गणिका का अर्थ में होजाता है । नृत्य शास्त्र का संपूर्ण अभ्यास के बाद नत की को पात्र' पद प्राप्त होता है । देखिये समस्ताभ्यास-स युक्ता, नत की पात्र मुच्यते' । मुघाकलशविदचित 'स गीत सारोद्धार' में ।

- ३२५ अहिगुण्ड (स अभिनव) नवीन ।
शेषि भरन्ती कुमार के दोनो हाया मे सम्बधी जन मागलिज पदार्थ भरते है
- ३३३ पट्ट जाउ (प्रभुवत्स-जात) प्रभुवत्स का पुत्र ।
- ३३६ कईवार- (स) कवित्व उच्चार ।
- ३४० बोलाविउ बहनेशी (स भगिनीपति, प्रा वहिणी + वइ) बहनाइ ।
- ३४० छ दरशन-जीव जगत और ईश्वर सम्बधी चितनका छ प्रमुख भाग को 'दशन कहते है ।
सांख्य, योग, बशेषिक, याय पूवमीमासा जयवा धर्ममीमासा, और उत्तरमीमासा जयवा ब्रह्ममीमासा याने वेदान्त । दूसरी गिनती मे बौद्ध दशन और जन दर्शन को भी शामिल किया है और लोग चार्वाकमत को भी शामिल करते है ।
- ३५४ देसाउर (स अपर देश) परदेश ।
- ३५९ सुपुरुष श्रीर नृसिंह (नरसिंह) नामसे सयर (स्वेरे) स्वतत्र है ।
- ३६३ धसाहस धसाधस पडिये ।
- ३६५ साविज (स श्वापद, हिसक पशु पक्षी के अर्थ मे) । इसका प्रयोग देशी भाषाओ मे उपलब्ध होता है । स स + वाज (पाख ?) से युत्पन्न होना सम्भव है । देखिये, भालणकृत 'कादम्बरी, पूव भाग 'शुक सारिका साविज मांहि, बोलि पट्ट प्रकाश ।
- ३७३ पडमाँहि (स छूतपट) चौपट की बाजी ।
- ३८७ धावलहर 'धवलहर' पडिये । (स धवलगूह, प्रा धवल हर) मुधाधवलित गूह ।
- ३९१ लच्छि (स लक्ष्मी), देखिये गुजराती गौरीगत मे लक्ष्मीवत के पुत्र का उल्लस 'ओ लाछाकु वर' । देखिये बडी ४०२ ।
- ३९७ श्रावजन अनुकूल करने के लिए उपचार ।

- ४०२ दोसो (स दोशियक) कापड के व्यापारी ।
- ४०३ माम ममत्व (प्रतिष्ठा) का अभिमान ।
- ४०४ नातरू (स नात्रकम ? नानेय ?) स्नेह सम्बन्ध ।
- ४१२ दव-‘देव पढ़िये ।
- ४१३ कलास कलास पढ़िये ।
- ४१८ ढोणा ढोईइ (स ढोकनानि) भेटणी-उपहार अप ण कीजिये
- ४२० मुडघा (स, मुकुटधारी प्रा मउडघा मुडुघा) देखिये
‘काहडदे प्रवध मे खड २ कडी ६९ ।
- ४२६ मुन पकखेसि ‘मु न पकखेसि’ पढ़िये । मुझे नहि देखेगा ।
- ४३२ सपराणी (स प्राण) प्राणवान अत्य तका अथ म ‘सबिहु सप-
राणी’ वाक्य खड मे ‘श्रेष्ठ’ ऐसा अथ घ्व जित्त होता है ।
- ४३६ पढम-(स प्रयमम अपभ्र श, पढम) पहिला ।
सरडु-(स सरट) काकीडा ।
- ४३७ असुडणि-(म अशकुन, अपशकुन) अपशकुनकी बेला मे ।
- ४३३ ऊहडोनइ (स उदधत्य) ।
- ४४६ रडिल अति आग्रही । डोह दोहन ।
- ४४७-४८ छोह-क्षोभ । वाउ वात ।
- ४५२ आरीसउ (स आदश, प्रा आयरिसउ) दप ण ।
एकदती एक दन्त अवशिष्ट रहा है ऐसी परमवृद्धा गणिकाकी
माता ।
- ४६० स परदाउ-न प्रदाय ।
मत्तवारणउ शरुवा मे । मूघा मुग्धा । दीति देदिप्यमान ।
- ४६१ सधुडिउगीत ध्रुवा सहित गीतम् ।
- ४६५ पात्र-देखिये कडी ३१९ ।
- ४६६ गुजर वध का उल्लेख कवि-परिचयका सूचक हो सकता है ।
- ४७४ हलूई-(स लघुक, प्रा लहुआ) हलकी, मानभग ।
दोखिये ‘सुदामासार’ काव्य मे । “याच ता जे निमुख जाइ,

गृह-नाम ले हूँ व - ।

- ४७० गमाय दिवार का अंगुणपत्र क रित र गित 'वन्दवन्दन काव
क दता प्रथम । अ ९, दुगा २४ १०४ ।
- ४८१ गुरहा (ग गुरभिधानि प्रा गुरा प्रा) गुरा की गुर गुरा ।
- ४८६ घर्षोष (ग भाष, प्रा भषण) ।
- ४९१ वाता निना न रित दैतित मापव, ११ कायकः-ना प्रथम
अ ७, दुगा २४३ २६९ ।
- ४९५ साँध (ग मया) भासिहृग मध की नायध ।
- ५०० घाषणू (ग भाषीय, भाषण भाषा) ।
- ५०१ घायरजहृ गित-करी १०७ । अंगुण बन ती ? ।
जूनई (प्रा जुन जय) भिन्न, गुणक ।
- ५०२ घायस (ग भाद स) भासा ।
- ५०३ घसूर (ग उगसूर म गूय को अगमान होने के वा - दिवार
न करा
- ५०७ सपराणा गित कही ४३२ ।
- ५१४ घाषि-(ग मय) मय ग, इय ग हार कर उठ गया ।
- ५१९ घाफणी-(प्रा अणगीयम्) रवय, ग ही ।
- ५२४ घलविहृ (ग मस्तेन आयासा) सहर ।
- ५२९ अहिनाण (ग अभिगान, प्रा अहिगान) निगाती लपाणी
परिषय ।
सात्र (ग गन् घातुने गन् बनता है) ।
दिवार म लुने से प्रवेश होकर घोष काय होता है ।
- ५३५ सभैरहृ-(ग सहरण) माल का न चलन करता है ।
- ५३६ हृडताल (ग हृड-ताल) हाट पर ताला लगाकर बंद कर
देना ।
- ५४० न-दलोकनहृ-अणिवा को 'न द' शर्म दिया जाता है । इससे न द
न-द से वश का घोष होता है । गुजरानी में मुहावरा है

‘ नदना फ द गोविंद जाणे ।

५४३ लाभा-वनिष्ठ ।

५४७ पूछम- ? । विनडी विडम्बित की । सात-मुस ।

५५० कमिणी ‘कामिणी’ पण्ये । अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

५५४ सातो-माचो । सच्चा पक्का, चोर ।

५५६ केत-(स वेतु) वेतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है ।

५६३ तलार (स तलारण) नगर तलकी रणा करने वाला । भाषा म तलाटी शब्द से बोला जाता है ।

घोलगु-सवक

५६८ मोकलि जे ‘मोकलिज पण्ये ।

५६९ फेडेसिइ-त्याग करायेगा ।

५७९ अर्धांतर यास । मुभापित रूप म ।

५८१-५८३-वणिक शलापा ।

ऊडइ-(स उद्वहति) ।

५८५ कदल-बलह ।

५८७ परीछयउ (स पृष्ठम्) पूछनाछ की ।

५९४-९५ परतनउ-परकीय परका । पीहर का वास पर घर का वास
बैमे कहा जा सकता है ? ।

५९९ तरणि-भूय । त्रिश्म-(स त्रिक्रम) तीन डग में स्वर्ग मृत्यु
पाताल म ब्याप्त होनेवाला विष्णु ।

६०१ वाहण-वहाण यान-यात्र । नोजामा (स निर्यामक, पा निग्ना
मय) बर्णधार, बेचटिया ।

६०६ उपापला ब्याकूलता ।

६०७ अणोसरा (स अनापया) आधम रहित की ।

६१० यापणि-यास । मोस-मृषा, मिथ्या ।

६१३ मांटी-मुख, मूर पराक्रमशील मनुष्य ।

उसरावण कीघउ (स उत्थर्गन) मुक्त किया ।

तृण-पद् ते हलूउ षाड ।'

- ४७९ समान विषय का अनुसंधान के लिए दसिसे 'माघवानल काम क दला प्रब ध ।' अग ६, दूहा ५४-१०४ ।
- ४८१ सुरहां (स मुरभिवानि प्रा मुरदिया) मुग धी मुवासयुक्त ।
- ४८६ अर्नोय (स अयत्र, प्रा अग्रत्य) ।
- ४९१ वेश्या निदा के लिए दसिसे माघवानल कामक दला प्रब ध' अङ्ग ७, दूहा २४३ २४६ ।
- ४९५ लाघ (स लचा) अनधिकृत द्रव्य की लालच ।
- ५०० आपराणू (स आत्मीय, आत्मान अपना) ।
- ५०१ आवरजइ दसिसे-कडी ३९७ । अनुकूल बनाती है ।
जूजई (प्रा जुय जुय) भिन्न, पृथक् ।
- ५०२ आयस (स आदेश) आज्ञा ।
- ५०३ असूर (स उत्सूयम्) सूर्य को अस्तमान होने के बाद । विसर्जन करा ।
- ५०७ सपराणा दसिसे कडी ४३२ ।
- ५१४ आयि-(स अय) अय से, द्रव्य से हार कर उठ गया ।
- ५१९ आफणी-(प्रा अप्पणीयम) स्वयं, खुद ही ।
- ५२४ अलविइ (स अल्पेन आयसेन) सहज ।
- ५२९ अहिनाण (स अभिज्ञान, प्रा अहिनाण) निशानी एषाणी परिचय ।
खात्र (स खन घातुसे शब्द बनता है) ।
दिवार म खुदने से प्रवेश होकर चौथ काय होता है ।
- ५३५ सभेरइ-(स सहरण) माल का स बलन करता है ।
- ५३६ हडताल-(स हट्ट+ताल) हाट पर ताला लगाकर बन्द कर देना ।
- ५४० न दलोकनइ-वणिका को 'न द' शम दिया जाता है । इससे न द शब्द से वश्य का बोध होता है । गुजराती में मुहावरा है

‘ नदना फ द गाविद जाणे ।

५४३ लाभा-वनिष्ठ ।

५४७ पूछम- ? । विनडो विडमिन की । सात-मुख ।

५५० कमिणी ‘कामिणी’ पडिये । अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

५५४ सातो-भाचो । सच्चा, पक्का, चोर ।

५५६ केत-(स केतु) केतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है ।

५६३ तलार (स तलारण) नगर तलकी रखा करने वाला । भाषा
म तलाठी शब्द में बोला जाता है ।

घोलगु-सबक

५६८ मोकलि जे मोकलिजे’ पडिये ।

५६९ फेडेसिद्ध-त्याग करायेगा ।

५७९ अर्थांतर यास । मुभाषित रूप म ।

५८१-५८३-वणिक श्लाघा ।

ऊडइ-(स उद्वहति) ।

५८५ कदल-वसह ।

५८७ परीछपउ (स पृष्ठम्) पूछनाछ की ।

५९४-९५ परतनउ-परकीय परका । पीहर का वास पर घर का वास
कैसे कहा जा सकता है ? ।

५९९ तरणि-भूम । त्रिकम-(स त्रिकम) तीन ढग में स्वर्ग मृत्यु
पाताल म व्याप्त हानवाला विष्णु ।

६०१ बाहण-वहाण मान-यात्र । नोजामा (स नियामक, पा निज्जा
मय) कर्णधार, केवटिया ।

६०६ उपांपला व्यात्रुलता ।

६०७ अणोसरा (स अनाथमा) आथय रहित की ।

६१० पापरि-न्यास । मोस-मृषा, मिथ्या ।

६१३ मांटी-मुदर, शूर परक्रमशील मनुष्य ।

उसरावण कीपउ (स उरुगंन) मुक्त किया ।

- ६१४ पण महत्त पण, प्रतिज्ञा का महत्त्व ।
- ६१६ कसो-(स कष घातु) कष, कसौटी करने ।
- ६१८ तलवार की उपर नाम मुद्रा अ कित करने की रुढ़ि प्रतीत होती ह ।
- ६१९-आपोपइ -स्वयमेव ।
- ६२१ अर्थांतर 'यास' । सुभाषित ।
- ६२३ सु डाहलि (स गु डाफलक) ।
- ६२६ सइ हथि (स्वय हस्तेन) खुद अपने हाथ से ।
- ६२८ सौजय-सूचक सुभाषित ।
- ६३२ भडिवाउ-(स भटवाद) अपने को शूर मानने का अभिमान ।
- ६३४ सेलहत-(स शेल्ल हस्त यस्य, प्रा सलहत्य) गुजरातके खेडावाल ब्राह्मणों में 'शेलत' की अवटक प्रसिद्ध है ।
- ६३५ फीघारेवणी (स रेव् घातु) पलायन कर दिया ।
- ६४० साध सधि पडिये ।
- ६४४ उलवण (स उल्लपन) आलाप सलाप ।
- ६४७ आरू -(स आनयनम) ।
परिग्रह (स परिग्रह, प्रा परिग्गह) परिवार ।
- ६८३ उदाहरण दृष्टति । पुरावा । गवाहि ।
- ६८५ सोघइ-'सोघइ' पडिये ।
आदीसर-(आदीश्वर) जैनो के प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाय ऋषभदेव ।
- ७०४ पुरिसत्तण (स पुरुषत्व) पौरुष, पराक्रम ।
- ७०६ प्रास-भूमि का जो खड दान म दिया जाता है । 'यास पान वाला 'प्रासिया' कहलाता है ।
- ७१० साय समाहरण-साधन सामग्री ।
- ७११ बन्न अठार-चार प्रमुख वण ब्राह्मण, क्षत्रीय, वश्य, खीर गूढ । नव नारु', और 'प ख शारु' क्षत्रीगर वण, समेत अठटारइ वर्ण कहलाती है ।

७२० बजा वार तउ भांजन कह-रन प्रकार का प्रतिमा ग्रहण
'काहडद प्रब'ध'मे पाया जाता है । देखिये खड १, कडी १८०

७२३ पीयासे (स प्रमाण) ।

७२६ करह-(स करम) कट ।



पृष्ठ १०४ पक्ति ४ । 'प्रमेमोऽय 'प्रमोदाय' पढिये ।

१०५ कडी ७ । चग 'चग' पढिये ।

१०६ कडी १३ । मयाल (स मृदु प्रा मउ) भायालु ।

कडी १६ । पुष्पद स 'पु'पद त' पढिये ।

११० कडी ४७ । शत्रुकार-(स सत्रागार) सत्रकार पढिये ।

१११ कडी ५६ । घाडा 'घोडा' पढिये ।

११८ कडी ७२ । तेणि अचस 'तेणि अवसरि' पढिये ।

खेडी देवति-'क्षेत्र देवता ।'

१३५ कडी ६ । धार 'धरि' पढिये ।

१३७ कडी २३ । सुना 'मुता' पढिये ।

१८५ कडी सख्या ४५५, ४५८, ४५९, को अक सुधार के पढिये ।



पूर्ति-प्रस्तावना पृष्ठ 'औ'

'पद्मावती में सद्यन्तम क्या का उल्लस
 अब जी सूर गगन चडि घावहु ।
 राहु होहु तो ससि कह प बहु ॥
 विक्रम धसा पेम के बारा ।
 मन्नावती कह गएउ पतारा ॥
 सदवच्छ मुगुधावति लागी ।
 कचनपुर होइगा वैरागी ॥
 राजकु वर कचनपुर गएऊ ।
 मिरगावति कह जोगी भएऊ
 माधाकु वर मनोहर जोगू ।
 मधुमालति कह कीह वियोगू ॥
 प्रभावति कह सरसुर साधा ।
 उला आपि अनिरुषवा बांधा ॥
 ही रानी पद्मावति, सात सरग पर वास ।
 हाथ चणै सो तेहिने, प्रथम जो आपुहि आस ॥

—पद्मावती, दो० २३३ १७

समाप्त

